हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची • शनिवार • 06.09.2025 • वर्ष : 16 • अंक : 46 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

कारों में बम होने के व्हाट्सएप मैसेज के बाद मुंबई पुलिस हाई अलर्ट पर

400 किलो आरडीएक्स लेकर घुसे 14 आत्मघाती हमलावर, पूरी मुंबई को दहलाने की धमकी

वाहनों की सघन तलाशी जारी, संयुक्त पुलिस आयुक्त ने कहा-सुरक्षा बल किसी भी खतरे से निपटने में सक्षम

एजेंसी

मुंबई : देश की आर्थिक राजधानी मुंबई की सडकों पर 34 वाहनों में 'मानव बम' रखे जाने संबंधी मैसेज के बाद मुंबई पुलिस हाई अलर्ट पर है। महाराष्ट्र के मुंबई में शनिवार को होने वाले गणपति विसर्जन को ध्यान में रखते हुए मुंबई पुलिस का तलाशी अभियान जोर शोर से जारी है। साथ ही मुंबई पुलिस ने व्हाट्सएप मैसेज भेजने वाले अज्ञात शख्स के विरुद्ध मामला दर्ज कर मैसेज की सत्यता और इसको भेजने वाले की तत्परता से छानबीन कर रही है। संयुक्त पुलिस आयुक्त ने मुंबई वासियों से अफवाहों पर ध्यान नही देने की अपील की है।

मुंबई पुलिस सूत्रों ने शुक्रवार को पत्रकारों को बताया कि गुरुवार रात को मुंबई ट्रैफिक पुलिस के नियंत्रण कक्ष की व्हाट्सएप हेल्पलाइन पर यह धमकी भरा मैसेज मिला था। इस मैसेज को भेजने वाले प्रेषक ने खुद को "लश्कर-ए-जिहादी" का सदस्य बताया और कहा कि 14 पाकिस्तानी आतंकवादी भारत में घुस आए हैं। धमकी में यह भी कहा गया है कि विस्फोट के लिए लगभग 400 किलो आरडीएक्स का इस्तेमाल किया जाएगा, जिससे '1 करोड़ लोगों की जान जा सकती है'। धमकी भरे मैसेज में दावा किया गया है कि 34 वाहनों में 'मानव बम' रखे गए हैं और ये पूरे शहर को हिला देंगे। इस धमकी भरे से मैसेज की जानकारी तत्काल ट्रैफिक नियंत्रण कक्ष ने मुंबई पुलिस को दी और इसके बाद मुंबई पुलिस ने अज्ञात शख्स के विरुद्ध मामला दर्ज कर इसकी छानबीन शुरू कर दी है। साथ ही शनिवार को होने वाले गणपति विसर्जन के दौरान भी पुलिस बंदोबस्त को बढ़ा दिया गया है। मुंबई पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि खतरे की हर पहलू से जाँच की जा रही है और आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) को सूचित कर दिया गया है।

संयुक्त पुलिस आयुक्त सत्यनारायण चौधरी ने शुक्रवार को मुंबई पुलिस आयुक्तालय में गणेश विसर्जन के लिए आयोजित पत्रकार वार्ता में इससे संबंधित पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा, "हमारे सुरक्षा बल किसी भी खतरे से निपटने में सक्षम हैं। हम सभी एहतियाती कदम और सुरक्षा उपाय कर रहे हैं। हम पार्किंग से लेकर बेसमेंट तक सभी जगहों की जाँच कर रहे हैं, किसी भी चीज को छोड़ा नहीं जा रहा है।" उन्होंने मुंबई के निवासियों से अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील की है।

मुंबई को दहला देने की एक और धमकी 26 जुलाई को आई थी, जिससे हड़कंप मच गया था। कहा गया था कि छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल को बम से उड़ा दिया जाएगा। धमकी देने वाले ने स्पष्ट रूप से कहा था कि स्टेशन पर बम रखा जाएगा, जिससे यात्रियों की जान को खतरा हो सकता है। पुलिस ने इस दौरान भी जांच में कुछ संदिग्ध नहीं पाया था।

मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष ने शिक्षक दिवस की दी शुभकामनाएं

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने शिक्षक दिवस की सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया एक्स पर शुक्रवार को लिखा, "शिक्षक जीवन को दिशा देने वाले दीपस्तंभ होते हैं। आज शिक्षक दिवस पर मैं सभी गुरुजनों और शिक्षकों को नमन करता हूं। मेरे शिक्षक, मेरे मार्गदर्शक हैं स्मृति शेष बाबा दिशोम गुरु। स्नेह, संघर्ष, संवेदनशीलता और तटस्थता से भरा उनका जीवन मेरे लिए सदैव प्रेरणास्त्रोत रहा है। आज बाबा सशरीर साथ नहीं हैं, लेकिन उनकी सीख, उनके विचार और आदर्श हमेशा शक्ति प्रदान करते रहेंगे। बाबा दिशोम गुरु शिबू सोरेन अमर रहें।"

वहीं, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने पूर्व राष्ट्रपति, महान शिक्षाविद, "भारत रत्न" डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि एवं प्रदेशवासियों को "शिक्षक दिवस" की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। मरांडी ने सोशल मीडिया एक्स पर शुक्रवार को लिखा, "शिक्षक दिवस पर सभी को अनेक-अनेक बधाई, शुभकामनाएं और जोहार।"

उल्लेखनीय है कि देशभर में शिक्षक दिवस प्रतिवर्ष 5 सितंबर को मनाया जाता है, जो भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान विद्वान डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती है।

दरअसल, उनके छात्र और मित्र 1962 में उनके पास पहुंचे थे और उनसे अपना जन्मदिन मनाने की अनुमति मांगी थी। तब डॉ. राधाकृष्णन ने अपने छात्रों से कहा कि वे उनका जन्मदिन मनाएं, लेकिन वे इसे अलग तरीके से मनाएं, 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाएं, ताकि शिक्षकों के योगदान का सम्मान किया जा सके। तभी से यह दिन शिक्षकों के महत्व और उनके योगदान को याद करने और उनका आभार व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है।

एक नजर

कौन बनेगा करोड़पति में पहुंची धनबाद की पूजा

धनबाद : सोनी टीवी पर प्रसारित होने वाले लोकप्रिय क्विज शो 'कौन बनेगा करोड़पति' में गुरुवार को कुमारधुबी की रहने वाली कुमारी पूजा ने फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट राउंड में सबसे तेज उत्तर देकर हॉट सीट पर स्थान प्राप्त किया। अमिताभ बच्चन के सामने बैठकर उन्होंने न केवल शानदार खेल का प्रदर्शन किया, बल्कि अपने जीवन संघर्ष की प्रेरणादायक कहानी भी साझा की। पूजा ने बताया कि वह एक गृहिणी हैं और कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को घर पर सभी विषयों की शिक्षा देती हैं। उनकी ससुराल बिहार में है, लेकिन वर्तमान में वह अपने पति के साथ ओडिशा के बलांगीर में निवास कर रही हैं, जहां उनके पति नौकरी करते हैं। पूजा ने भूगोल विषय में एम.ए. किया है तथा नेट परीक्षा भी उत्तीर्ण की है। उनका सपना है कि वे आगे पीएचडी करें, किंतु आर्थिक कठिनाइयों के कारण वे अब तक पंजीकरण नहीं करा पाईं।

किसान का बेटा लंदन में करेगा पढ़ाई, 1 करोड़ की मिली छात्रवृत्ति

पूर्वी सिंहभूम : पूर्वी सिंहभूम के बोड़ाम प्रखंड के बंगोई गांव के रहने वाले शान्तनु मोदक ने अपनी मेहनत और लगन से पूरे राज्य का नाम रोशन कर दिया है। शांतनु को झारखंड सरकार की तरफ से 1 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति मिली है, जिसके बाद अब वे लंदन में मास्टर इन बिजनेस एनालिटिक्स की पढ़ाई करेंगे। शान्तनु मोदक को उनकी असाधारण प्रतिभा के कारण लंदन के प्रतिष्ठित इंपीरियल कॉलेज और वारविक बिजनेस स्कूल में दाखिला मिला है। शान्तनु के पिता निर्मल मोदक, एक साधारण किसान हैं। उन्होंने बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति और सीमित संसाधन होने के बावजूद, उन्होंने अपने बेटे की पढ़ाई में कोई कमी नहीं होने दी। दो बेटों और एक बेटी की पढ़ाई का खर्च उठाना भी उनके लिए आसान नहीं था। लेकिन जब शांतनु के सपनों की बात आई, तो पिता ने अपनी खेती की जमीन का एक हिस्सा बेच दिया ताकि उनका बेटा पढ़ाई जारी रख सके।

धनबाद में भू-धंसान, आधा दर्जन घर धंसे, कई लोगों के दबने की आशंका

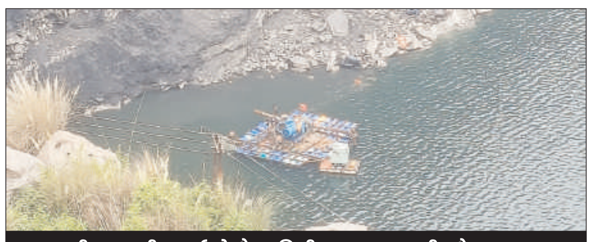

400 फीट गहरी खाई में वैन गिरी, 1 मजदूर की मौत, 6 लापता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कतरास : कतरास क्षेत्र में स्थित एकेडब्लूएमसी की मां अंबे माइनिंग परियोजना में शुक्रवार सुबह 11 बजे हुए एक भीषण भू-धंसान से भारी तबाही मच गई है। मुंडा धौड़ा पैच में हुई इस घटना में एक बीसीसीएल की सर्विस वैन लगभग 400 फीट गहरी खाई में जा गिरी, जिससे उसमें सवार करीब सात मजदूरों में से एक की मौत की पुष्टि हुई है और छह अन्य लापता हैं। भू-धंसान के कारण चार घर और एक खटाल भी पूरी तरह से जमींदोज हो गए, जिससे इलाके में अफरातफरी का माहौल है। घटना के बाद घटनास्थल पर जमा हुए लोगों ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया। स्थानीय लोगों के अनुसार, भू-धंसान में लगभग आधा दर्जन मवेशी भी दब गए हैं। जान बचाने की कोशिश में चार लोग घायल हो गए, जिन्हें कतरास के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलते ही बीसीसीएल प्रबंधन ने तत्काल बचाव अभियान शुरू किया। एक पेलोडर मशीन की मदद से सर्विस वैन को खाई से बाहर निकाल लिया गया है, लेकिन अभी तक लापता मजदूरों का कोई पता नहीं चल पाया है।

घटना को देखते हुए डीजीएमएस (खान सुरक्षा महानिदेशालय) की टीम भी मौके पर पहुंच गई है। इसके अलावा मुनिडीह से छः सदस्यीय गौताखोरों कि टीम भी मौके पर पहुंच कर जांच में जुट गई है। वहीं, दूसरी तरफ कतरास थाना, रामकनाली ओपी, अंगारपथरा ओपी कि पुलिस और सीआईएसएफ के जवान भी घटनास्थल पर मौजूद हैं और स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे हैं। लापता मजदूरों को खोजने के लिए राहत और बचाव कार्य जारी है।

बिहार की तुलना बीड़ी से करने पर घिरी कांग्रेस, मांगी माफी

एजेंसी

नयी दिल्ली : कांग्रेस की केरल प्रदेश इकाई द्वारा बिहार की तुलाना बीड़ी से करने पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने इसे राज्य के लोगों का अपमान बताया है। भाजपा ने मोदी सरकार के जीएसटी सुधारों का विरोध करने के लिए केरल कांग्रेस द्वारा किए गए इस एक्स पोस्ट को बिहार विरोधी करार देते हुए प्रदेश को बुद्ध की धरती और अखंड भारत का निमार्ता बताया। हालांकि इस प्रकरण पर विवाद बढ़ता देख केरल कांग्रेस ने पोस्ट डिलीट कर दिया और माफी भी मांग ली।

भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि कांग्रेस ने पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मां को गाली दी और अब बिहार को बीड़ी से जोड़ा। उन्होंने कहा कि क्या तेजस्वी यादव इस अपमान का समर्थन करते हैं? तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, डीएमके और कांग्रेस की बिहार के प्रति नफरत साफ दिखती है। भाजपा प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने एक्स पर लिखा कि कांग्रेस और राजद बिहार विरोधी हैं। राहुल गांधी और तेजस्वी यादव ने पहले भी बिहारियों का अपमान करने वालों का साथ दिया है।बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने इस पोस्ट पर कहा कि लोकतंत्र मयादर्ा और लोकलाज के सहारे चलता है। अगर सत्ता की इच्छा मयादर्ा को भूल जाए, तो जनता इसका जवाब देगी। उन्होंने कहा कि भारत की जनता लोकतंत्र को कमजोर नहीं होने देगी। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद ने कहा कि कांग्रेस कितना नीचे गिर सकती है, पहले प्रधानमंत्री मोदी की मां का अपमान हुआ, अब बिहार की तुलना बीड़ी से की गई। उन्होंने राहुल गांधी से जवाब मांगा और कहा कि बिहार के गौरव का अपमान बर्दाश्त नहीं होगा। केरल भाजपा के महामंत्री अनूप एंटनी जोसेफ ने कहा कि कांग्रेस ने बुद्ध की धरती बिहार को बीड़ी से जोड़कर अपमान किया। उन्होंने बिहारवासियों से अपील की कि वे इस अपमान को वोट के जरिए याद रखें।बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि बिहार ने अखंड भारत का निर्माण किया और ज्ञान-विज्ञान की भूमि रहा है। इस अपमान का जवाब बिहार की जनता देगी।जनता दल यूनाइटेड (जदयू) सांसद संजय कुमार झा ने कहा कि बी से सिर्फ बीड़ी नहीं, बुद्धि और बजट भी होता है, जो कांग्रेस के पास नहीं है। उन्होंने बिहार की गौरवशाली विरासत का जिक्र करते हुए कहा कि यह मां जानकी, बुद्ध, सम्राट अशोक और स्वतंत्रता संग्राम के नायकों की धरती है। बिहार ने गांधी को राष्ट्रपिता बनाया और संपूर्ण क्रांति के जरिए कांग्रेस की तानाशाही को उखाड़ फेंका। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता इस अपमान का जवाब विधानसभा चुनाव में वोट की चोट से देगी। जदयू प्रवक्ता नीरज कुमार ने कहा कि बिहार बीड़ी का पर्याय नहीं, बल्कि बुद्ध, सीता और सूफी संतों की धरती है।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बोले, 'हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया'

एजेंसी

नयी दिल्ली : भारत समेत कई देशों पर हाई टैरिफ थोपने के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा बयान आया है। उन्होंने भारत और रूस को लेकर कहा कि हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है। अपने ट्रुथ सोशल मीडिया पोस्ट पर डोनाल्ड ट्रंप ने लिखा कि लगता है कि हमने भारत और रूस को गहरे, अंधेरे चीन के हाथों खो दिया है। उन्होंने यह भी लिखा की उनका भविष्य दीर्घ और समृद्ध हो। ट्रंप ने एक फोटो भी पोस्ट किया है जिसमें राष्ट्रपति जिनपिंग, राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक साथ तस्वीर है।

ट्रंप की बढ़ रही है बेचैनी

ट्रंप का यह पोस्ट शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन के बाद आया, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी नेता शी जिनपिंग ने मुलाकात की थी। ट्रंप के इस पोस्ट ने राजनीतिक हलचल बढ़ा दी है। भारत का रूस के साथ पहले से ही बेहतर संबंध हैं। एससीओ सम्मेलन के बाद चीन और भारत के रिश्तों में सुधार के संकेत मिलने लगे हैं। ऐसे में भारत और चीन के बीच बढ़ती नजदीकियां, खासकर ब्रिक्स और एससीओ जैसे मंचों पर, वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव का संकेत दे रही हैं। यह नजदीकियां ट्रंप की चिंता भी बढ़ा रही है। ट्रंप की नीतियों ने अनजाने में भारत-चीन-रूस गठजोड़ को मजबूत किया है, जिससे अमेरिका की वैश्विक स्थिति कमजोर हो सकती है।

टैरिफ वॉर से भारत-चीन सहयोग को बढ़ावा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ नीतियों ने भारत-अमेरिका संबंधों में तनाव पैदा किया है। भारत पर 50 फीसदी टैरिफ, जिसमें 25 फीसदी रूस से तेल खरीद के लिए जुमार्ना शामिल है, ने भारत को चीन के करीब खड़ा कर दिया है। कई जानकारों का मानना है कि टैरिफ वॉर ने भारत-चीन सहयोग को बढ़ावा दिया है। डोनाल्ड ट्रंप पहले भी कई बार भारत, चीन और रूस पर बयान देते रहे हैं। उनका यह कहना कि भारत और रूस 'चीन के साथ चले गए' केवल कूटनीतिक बहस ही नहीं, बल्कि अमेरिका की घरेलू राजनीति में भी चर्चा का विषय बन गया है। ट्रंप लगातार भारत पर हमलावर हैं। उन्होंने रूस से तेल खरीदने को लेकर भारत पर 50 प्रतिशत तक टैरिफ लगा दिया है।

भारत की रणनीति : 'चुप रहो और आगे बढ़ो'

भारत ने इस बयान पर सीधी प्रतिक्रिया न देकर संकेत दिया है कि वह ट्रंप की टिप्पणी को अनावश्यक महत्व नहीं देना चाहता। विदेश मंत्रालय की 'नो कमेंट' लाइन साफ दिखाती है कि भारत फिलहाल अपने कूटनीतिक रिश्तों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता है, न कि राजनीतिक बयानों पर।

ट्रंप के पोस्ट पर विदेश मंत्रालय ने क्या कहा?

विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टिप्पणी पर कुछ भी कहने से इनकार कर दिया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने मीडिया के सवालों के जवाब में कहा इस समय इस पोस्ट पर मुझे कोई टिप्पणी नहीं करनी है। एक अन्य प्रश्न का उत्तर देते हुए जायसवाल ने कहा कि अमेरिका और भारत के बीच संबंध भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा दोनों देश एक व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी साझा करते हैं, जो हमारे साझा हितों, लोकतांत्रिक मूल्यों और मजबूत जन-जन संबंधों पर आधारित है। इस साझेदारी ने कई बदलावों और चुनौतियों का सामना किया है। हम उस ठोस एजेंडे पर केंद्रित हैं जिसके लिए हमारे दोनों देश प्रतिबद्ध हैं, और हमें उम्मीद है कि ये रिश्ते आपसी सम्मान और साझा हितों के आधार पर आगे बढ़ते रहेंगे।

मिथुन चक्रवर्ती ने तृणमूल नेता कुणाल घोष पर किया 100 करोड़ का मुकदमा

एजेंसी

कोलकाता : पश्चिम बंगाल में 2026 में आसन्न विधान सभा चुनाव को लेकर दो प्रमुख दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (तृणमूल कांग्रेस) लगातार एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते नजर आ रहे हैं। ऐसा ही एक मामला अभिनेता से नेता बने बालीवुड स्टार मिथुन चक्रवर्ती और तृणमूल के पूर्व राज्यसभा सांसद कुणाल घोष के बीच देखने को मिला।

भाजपा नेता और बालीवुड अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती ने तृणमूल कांग्रेस नेता कुणाल घोष पर 100 करोड़ रुपये का मानहानि मामला दायर किया है। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कुणाल ने साफ कर दिया है कि वे इस मामले से घबराने वाले नहीं हैं, बल्कि इसे उसी तरह लड़ेंगे जैसे उन्होंने सारदा चिटफंड जांच के दौरान किया था। उन्होंने इसे 'राजीव कुमार मॉडल' नाम दिया है।

साल 2019 में सारदा घोटाले की जांच के दौरान कुणाल घोष ने सीबीआई से आग्रह किया था कि उन्हें तत्कालीन पुलिस आयुक्त राजीव कुमार के आमने-सामने बैठाकर पूछताछ की जाए। सीबीआई ने उनकी मांग मान ली और शिलॉन्ग में दोनों की आमने-सामने पूछताछ हुई। अब वही तरीका अपनाने की बात कुणाल मिथुन मामले में भी कह रहे हैं।

कुणाल का कहना है, मैं अदालत से कहूंगा कि मुझे मिथुन दा के आमने-सामने बैठाकर पूछताछ की जाए। वहां सीबीआई के एसपी भी मौजूद रहें। मेरे पास ऐसे गवाह हैं जो कोर्ट में पेश होकर मिथुन दा की स्थिति कमजोर कर देंगे।

मिथुन चक्रवर्ती का आरोप है कि कुणाल घोष ने राजनीतिक प्रतिशोध की वजह से उनके और उनके परिवार के खिलाफ झूठे और आपत्तिजनक बयान दिए। मिथुन ने कहा है कि कुणाल ने उन्हें चिटफंड कांड से जोड़ते हुए बदनाम किया, यह भी कहा कि उन्होंने तृणमूल छोड़कर भाजपा का दामन केवल खुद को बचाने के लिए थामा। मिथुन का यह भी आरोप है कि कुणाल ने उनके बेटे को बलात्कार मामले से जोड़कर झूठ फैलाया और उनकी पत्नी पर भी गलत वित्तीय लेन-देन का आरोप लगाया, जबकि ये सभी बातें पूरी तरह झूठी हैं।

एक नजर

ट्रक की चपेट में आने से दो बच्चों की दर्दनाक मौत

बरही : बरही थाना क्षेत्र अंतर्गत पंचमाधव के पास सड़क दुर्घटना में दो किशोरों की मौत हो गई। हादसे के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क जाम कर विरोध जताया। सूचना पर एसडीपीओ अजीत कुमार बिमल और बरही थाना प्रभारी इंस्पेक्टर विनोद कुमार मौके पर पहुंचे और समझाने-बुझाने के बाद जाम हटाया गया। मृतकों की पहचान अनुज कुमार (16 वर्ष), पिता सुरेंद्र गुप्ता, एवं सत्यम सोनी (15 वर्ष), पिता शंभू सोनी, दोनों निवासी बरकट्ठा, के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार दोनों किशोर बरही से बरकट्ठा की ओर जा रहे थे। इसी दौरान पंचमाधव के समीप सड़क पार करते समय एक तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आ गए। अनुज की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि गंभीर रूप से घायल सत्यम को बरही अनुमंडलीय अस्पताल लाया गया, जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। ग्रामीणों ने बताया कि पंचमाधव से गड़लाही मोड़ तक सड़क निर्माण कार्य वर्षों से अधूरा पड़ा है, जिसके चलते अब तक कई लोग दुर्घटनाओं का शिकार हो चुके हैं। पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। उधर हादसे की खबर से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

अपने बच्चों को सही तालीम दें, तालीम से ही विकास संभव : मो क्यूम

बरही : बरही प्रखंड के अलगडीहा मोहम्मदिया ग्राउंड में हजूर सललहे अलैहे वसल्लम मोहम्मद साहब के पैदाइश के अवसर पर मुफ्ती मुजाहिद साहब के सरपरस्ती में एक विशाल जलसा का आयोजन किया गया। जलसा का संचालक कारी हाफिज तैयब एवं तोसिफ रजा साहब ने किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अल्प संख्यक कल्याण महासमिति अध्यक्ष मो कैयूम, उप प्रमुख देवलाल कुशवाहा, पूर्व मुखिया दशरथ यादव, पंचायत समिति सदस्य इलियास खान, पूर्व पंचायत समिति सदस्य मो जमीर उद्दीन मौजूद रहे। मुफ्ती मुजाहिद साहब ने मोहम्मद साहब का जीवनी पर प्रकाश डाला और उनके बताए गए मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। मौलाना मोहम्मद हुसैन, मौलाना तोहिद रब्बानी साहब, कारी शमश रजा, कारी मुमताज साहब, मौलाना तौफीक आलम ने जश्न ईद मिलादे नबी के वसूलों को याद कराया। साथ ही वर्तमान समय में शिक्षा की अहमियत पर जोर दिया। मौके पर हाजी शहीदुल्ला साहब, अलगडीहा सदर अब्दुल कैयूम, अलाउद्दीन साहब, नईम खान, शमीम अंसारी, सोहेल खान, सलामत अंसारी, मो खलील, शकील खान सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

बरही में वेक्टर क्लासेस में शिक्षक दिवस का भव्य आयोजन

बरही : बरही ब्लॉक परिसर के सामने स्थित वेक्टर क्लासेस सह वेक्टर इंटर कॉलेज में शिक्षक दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। साक्षी सिंह, शिल्पी कुमारी, दिव्या कुमारी, उत्कर्ष गुप्ता, कृति शर्मा, संगीता कुमारी, कृति कुमारी, अंजलि कुमारी, कल्पना यादव, रानी कुमारी और ब्यूटी कुमारी ने गीत, संगीत और भाषण जैसे कार्यक्रमों में भाग लेकर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साक्षी सिंह और उत्कर्ष गुप्ता ने किया। इस उत्सव में संस्थान के निदेशक दीपक गुप्ता के साथ-साथ प्रमुख शिक्षक राजेश यादव, सुरेंद्र मंडल, दामोदर शर्मा, संदीप पांडेय, बब्बू कुमार, मेहपरा सहित सैकड़ों छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर पुष्प अर्पित किए गए, केक काटा गया और सभी शिक्षकों को तिलक लगाकर उनका अभिनंदन किया गया। निदेशक दीपक गुप्ता ने कहा शिक्षक दिवस के इस अवसर पर हमारे छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रतिभा और समर्पण से सभी का दिल जीता।

बड़कागांव के हर गली-मोहल्ले में विकास की गंगा बहाना प्राथमिकता : विधायक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : ग्रामीण विकास विभाग डीएमएफटी मद अंतर्गत बड़कागांव प्रखंड के ग्राम हरली में हरली मंदिर चौक से भुइया टोली नाला पारा नव प्राथमिक विद्यालय हरली तक पीसीसी सड़क, दो स्पेन पूल एवं गढ़वाल निर्माण कार्य का शुभ शिलान्यास बड़कागांव लोकप्रिय विधायक रोशन लाल चौधरी ने नारियल फोड़ कर एवं फीता काटकर किया गया। सर्वप्रथम विधायक रोशन लाल चौधरी को ग्रामीणों ने ढोल नगाड़े के साथ पारंपरिक तरीके से स्वागत किया। मौके पर विधायक रोशन लाल चौधरी ने ग्रामीणों से अपील करते हुए कहा कि यह आपकी सड़क और आपका पुल है आप अपने देखरेख इसे बेहतर तरीके से निर्माण कारण चुकी उक्त सड़क एवं पुल से आना-जाना सबसे ज्यादा आप लोगों को वही करना है इसलिए आप अपनी देखरेख में इसे पूरी मजबूती के साथ बनाएं। आगे उन्होंने कहा कि हमारा एक ही उद्देश्य है बड़कागांव के हर गली मोहल्ले हर नाली नाले को दुरुस्त करना और विकास की गंगा को बहना। मौके पर मुखिया कविता देवी, पंचायत समिति सदस्य कौशल्या देवी, सांसद प्रतिनिधि महेंद्र महतो, भाजपा पूर्वी मंडल अध्यक्ष खेमलाल महतो, आजसू पार्टी प्रखंड अध्यक्ष गौतम वर्मा, भाजपा किसान मोर्चा अध्यक्ष त्रिवेणी महतो, आजसू केंद्रीय सदस्य संदीप कुशवाहा, आजसू जिला उपाध्यक्ष उपेंद्र कुमार, आजसू जिला सचिव दिनेश महतो, आजसू प्रखंड प्रवक्ता तपेश्वर कुमार तापस पूर्व जिप सदस्य सह भाजपा नेता टुकेश्वर प्रसाद, पूर्व मुखिया बिगेश्वर महतो, सोहनलाल मेहता, पंचायत अध्यक्ष आजसू रामेश्वर महतो, संतोष कुमार, किशोर राणा, संजू देवी, गणेश महतो, सच्चिदानंद पांडे, पूनम कुमारी, रिंकी कुमारी, सुरेश दांगी, दिनेश प्रसाद, मुरली महतो समेत कई ग्रामीण मौजूद रहे।

ज्ञानोदय विकास स्कूल में मनाया गया शिक्षक दिवस

बड़कागांव : शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर ज्ञानोदय विकास स्कूल में कार्यक्रम आयोजित की गई। संचालक स्कूल के सचिव सिकंदर कुमार सोनी के द्वारा जिसमें सभी शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही गीत संगीत काव्य का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र में स्कूल के प्राचार्य अरुण कुमार भारती के द्वारा माल्यार्पण करके दीप प्रज्वलित किया गया और विकास सेवा समिति के सभी सदस्य जिनमें मुख्य रूप से सचिव बुद्धिनाथ महतो, प्रबंधन समिति के अध्यक्ष प्रवीण कुमार, पूर्व सचिव शशि कुमार मेहता, मुखिया संघ अध्यक्ष रंजीत कुमार मेहता, कोषाध्यक्ष गणेश प्रसाद, सदस्य लालमणि महतो, अजय कुमार, सुरेंद्र कुमार, जागेश्वर महतो, सपना कुमारी, रेणु कुमारी, मुनेश कुमार , ज्ञानोदय विकास स्कूल के उपप्राचार्य लालदेव महतो, शिक्षक नागेंद्र मिश्रा अनामिका कुमारी, अनिता कुमारी सतीश कुमार अलीशा तिर्की और राजेश कुमार गुप्ता के द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई और सभी शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

बड़कागांव में शिक्षक दिवस पर शिक्षकों का हुआ सम्मान

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड अंतर्गत आगों उत्क्रमित मध्य विद्यालय झींकझोर में शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रधानाध्यापक एवं सहायक शिक्षक को सम्मानित किया गया । मुख्य रूप से बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र के सांसद सह प्रतिनिधि, पंसस कृष्णा राम के द्वारा प्रधानाध्यापक सह सचिव प्रखंड शिक्षक संघ के संगठन मंत्री रामसेवक रविदास को भारत का संविधान पुस्तक से सम्मानित किया गया। साथ ही उक्त विद्यालय में ग्राम शिक्षा समिति द्वारा चयनित सहायक शिक्षक सोहन कुमार को यंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। जो वर्तमान में सरकारी शिक्षक बने हैं। कृष्णा राम ने कहा कि शिक्षक भविष्य का निमार्ता होते हैं' और यह बच्चों के बीच सारा गुण और समय समर्पित करते हैं। इस कड़ी में जो छात्र जिज्ञासु होते हैं। वह आगे बढ़ते हैं। सोहन कुमार और राम सेवक रविदास ने कहा ने कहा कि यह सम्मान हम दोनो के लिए सौभाग्य है। अतिथियों को आभार व्यक्त करते हैं, कि इतने सुदूर जंगल पहाड़ क्षेत्र में आ कर हमलोगों को सम्मान दिए है। मौके पर पंचायत समिति सदस्य संगीता कुमारी, मुखिया नीलम मिंज, वार्ड सदस्य मीना देवी, अध्यक्ष मुनेश्वर मुंडा, उपाध्यक्ष चांदमुनि देवी, संयोजिका सुमन देवी, राजू मुंडा, मनोज मुंडा एवं छात्रगण उपस्थित थे।

सेन्ट्रल मिशन पब्लिक स्कूल रसोइया धमना में मना शिक्षक दिवस

बरही : सेन्ट्रल मिशन पब्लिक स्कूल रसोइया धमना में शिक्षक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र पर पुष्प अर्चन कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। उसके बाद सभी ने शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को याद किया गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया। मौके पर उपस्थित बच्चों ने अपने गुरुजनों से आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में निदेशक टुकलाल साव, प्राचार्य नितेश कुमार, सलाहकार राजेंद्र प्रसाद, अजय कुमार, नरेश कुमार, शिबू रजक, अरुण कुमार, सरिता कुमारी, सबिता कुमारी, फिजा प्रवीण, नीतू कुमारी, पुष्पा कुमारी, मनीषा कुमारी, स्वाति कुमारी ,सोनी कुमारी, नूरेशा खातून आदि ने सहयोग किया।

छुट्टी के बावजूद मवि बेंदगी के बच्चों ने मनाया शिक्षक दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

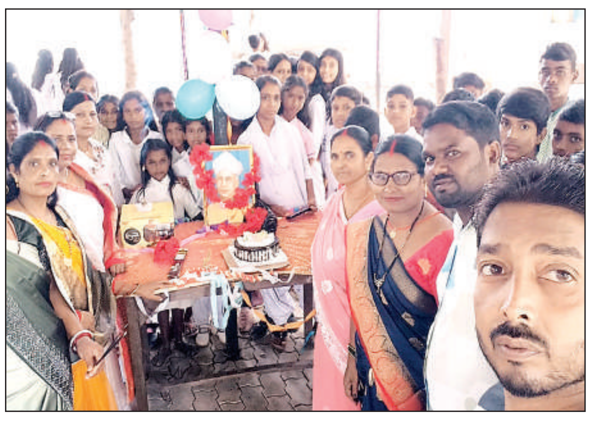

बरही : पांच सितम्बर को सरकारी स्कूल में छुट्टी होने के बावजूद स्कूल के बच्चे एवं बच्चियों ने शिक्षक दिवस पर अपने शिक्षक शिक्षिकाओं को सम्मान करना नहीं भूला। छुट्टी होने के बावजूद राजकीय मध्य विद्यालय बेंदगी में शिक्षक दिवस, विद्यालय के बच्चों एवं बच्चियों ने हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों एवं बच्चियों के साथ-साथ शिक्षक शिक्षिकाओं ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया। विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं के साथ-साथ बच्चों ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। उसके बाद उसके जन्मदिवस के याद में केक काटकर शिक्षक दिवस मनाया । इस अवसर पर बच्चों ने अपने-अपने शिक्षक शिक्षिकाओं को गिफ्ट देकर उनका आशीर्वाद लिया। साथ ही बच्चों ने अपने गुरुजनों की पूजा कर उनका आशीर्वाद लिया। इस कार्यक्रम में बच्चों एवं शिक्षकों में गुरु शिष्य की परंपरा का अनूठा विशाल देखने को मिला। मौके पर उषा राम, लक्ष्मी देवी, संध्या कुमारी, सरोज देवी, रेखा कुमारी, मुन्ना यादव, सरिता देवी आदि शिक्षक शिक्षिकाएं मौजूद रहीं।

अंचल समिति ने शिक्षक दिवस पर एकल कार्यकताओं को किया सम्मानित

बरही : एकल अभियान हजारीबाग अंचल समिति की ओर से बरही अंचल कार्यालय में शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन अंचल अध्यक्ष भरत यादव, अंचल सचिव कृष्णा प्रजापति, अंचल महिला प्रभारी डॉ संगीता चौधरी, श्री हरि कथा सत्संग प्रभारी किशोरी मोहन पांडेय, अध्यक्ष बिपिन बिहारी पांडेय, अंचल महिला सचिव उषा रानी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर एकल अभियान हजारीबाग अंचल से जुड़े 30 सेवा व्रती कार्यकर्ताओं को ड्रेस दिया गया। इसमें महिला कार्यकर्ताओं को समिति के द्वारा साड़ी एवं पुरुष कार्यकर्ताओं को कुर्ता पायजामा दिया गया। इसके साथ ही पंचमुखी शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वाले तीन संच प्रशिक्षक, छह ब्यास एवं चार अंचल कार्यकर्ताओं को प्रशस्ति पत्र एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। जिन्हें सम्मानित किया गया उनमें जयंती देवी, सरिता देवी, मीणा देवी, ब्यास में उमा देवी, प्रेम दागी, शंकर तिवारी, रोहिणी कुमारी, प्रतिमा देवी, सबिता देवी, अंचल कार्यकर्ताओं में करन महतो, बिनोद कुमार, कार्यालय प्रमुख मनोज कुमार, अंचल ब्यास अजय यादव मुख्य रूप से शामिल रहे। मौके पर सर्वपल्ली राधाकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में में शीला देवी, सुषमा राणा, महेंद्र कुमार, धनंजय पांडेय, नंदकेसरी दैवी, गीता देवी, सुनीता देवी, वीणा देवी, देवती देवी, रोहिणी देवी, सहित कई लोग मौजूद थे।

एक्टिव कोचिंग सेंटर के बच्चों ने उत्साहपूर्वक मनाया शिक्षक दिवस

चौपारण : जगदीशपुर में संचालित एक्टिव कोचिंग सेंटर में धूमधाम से डॉ सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया गया। कोचिंग के बच्चों व शिक्षकों ने डॉ सर्वपल्ली के तस्विर पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दिया। कोचिंग के बच्चों को सम्बोधित करते हुए निदेशक शंकर दयाल साव ने गुरु शिष्य के अटूट प्रेम पर अपनी बातें रखते हुए कहा कि गुरु शिष्य के उज्वल भविष्य के लिए अपना सर्वस्व निक्षावर कर देते है। शिक्षक किशोर राणा ने कहा कि बच्चों को अपने जीवन मे सफलता हाशिल करने के लिए बाहरी नकारात्मक बातों से दूरी बनाये और अपना लक्ष्य की ओर धयान को केंद्रीत रखे। कहा शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिसके सहारे आप सफलता का परचम लहरा सकते है। शिक्षक बैजनाथ ठाकुर ने कहा आपका अच्छा संस्कार आपको अग्रणी पंक्ति में आपको खड़ा कर देता है। कहा आपको सफल विद्यार्थी बनने के लिए मेहनत करना पड़ेगा। मौके पर शिक्षक रंजीत कुमार, विवेक कुमार, मंटू गुप्ता, समाजसेवी मुन्ना यादव सहित अन्य। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए दशवी की छात्रा माही कुमारी, प्रियंका कुमारी, पायल कुमारी, स्वाती कुमारी, अंशु कुमारी, छात्र बिपिन यादव, गौतम कुमार, सोहैल अंसारी, साहिल कुमार, सागर कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे।

ईद मिलादुन्नबी पर अकीदत के साथ निकाली गई जुलूस-ए-मोहम्मदी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड अंतर्गत के दर्जनों गांव में ईद मिलादुन्नबी का पर्व काफी चहल-पहल खुशी के साथ मनाया गया।और पैगंबर साहब की पैदाइश की तारीख के मौके पर अकीदत व एहतराम के साथ जुलूस -ए-मोहम्मदी निकाली गई। जुलूस में मुख्य रूप से जनप्रतिनिधि, कमेटी के मेंबरान, दानिश्वर लोगों के साथ-साथ बच्चे एवं बच्चियां काफी संख्या में शामिल थे। लोगों में इस पाक मौके पर काफी उत्साह देखी गई। जगह-जगह पर लंगर के साथ-साथ जलेबी, शकर पाला, खजूर आदि की सिरनी व पानी की व्यवस्था की गई थी। जुलूस में नात शरीफ और दरूद शरीफ झूम झूम कर पढ़ा गया। इस दौरान लोगों ने देश में शांति और अमन की दुआएं भी मांगी। यह पर्व मुख्य रूप से बड़कागांव, सिरमा, बादम, चौपदार बलिया, महुदी, पंडरिया, छवनिया, सिकरी, डाड़ीकला, चेपा, चंदौल, महुंगाई, रुद्दी, मिजार्पुर, उरीमारी आदि गांव में काफी चहल-पहल के साथ मनाई है। मस्जिद , मदरसा के साथ-साथ गांव, कस्बा की गलियों, मुहल्ला एवं चौक चौराहों को फुलझड़ियों, तरह-तरह के डिजाइनिंग लाइटों गेट आदि बनाकर सजाया गया था। वह घर-घर के छतों इस्लामिक झंडा लहराए गए। बड़कागांव पुलिस प्रशासन ईद मिलादुन्नबी पर्व के मौके पर शांति व्यवस्था को लेकर पूरी तरह से मुस्तैद थे। जगह-जगह पर पुलिस बल का इंतजाम किया गया था। क्षेत्र में शांति व्यवस्था को लेकर मुख्य रूप से बड़कागांव एसडीपीओ पवन कुमार, बीडियो जितेंद्र कुमार मंडल, पुलिस इंस्पेक्टर ललित कुमार, बड़कागांव थाना प्रभारी कृष्ण कुमार गुप्ता, सीकरी ओपी प्रभारी रामकुमार राम, डाड़ीकला ओपी प्रभारी सागेन मुर्मू, उरीमारी प्रभारी ओपी प्रभारी नाथू उरांव के नेतृत्व में जगह-जगह पर सुरक्षा की इंतजाम किए गए थे।

चौपारण में धूमधाम से निकला जुलूस-ए-मोहम्मदी, जश्न में डूबे लोग

चौपारण : प्रखंड के 26 पंचायतों में शुक्रवार को (मोहम्मद साहब का जन्मदिन) बड़े ही शान, बड़े ही धूमधाम से जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाला गया। इस दौरान हजारों की संख्या में लोगो ने शिरकत किया। लोगों ने एक दूसरे को गले लगाकर ईद मिलादुन्नबी की मुबारक बाद दी। तलिब-ए-इल्म बच्चियों ने एक से बढ़कर एक नात शरीफ पढ़ी। जुलूस में शामिल लोग विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए, सामूहिक दुआओं में देश की एकता अखंडता, अमन व सुकून, भाईचारा तरक्की, परेशानियों से निजात, गुनाहों से मगफिरत के लिए दुआएं की गई। रास्ते में अकीदतमंदों ने जगह-जगह जुलूस का स्वागत किया। कई स्थानों पर शर्बत, मिठाई और पानी की व्यवस्था की गई थी। जुलूस में शामिल लोगों ने हरे झंडे और इस्लामी संदेश वाले बैनर लिए हुए थे। वे नात-ए-पाक और मद्ह-ए-रसूल पढ़ते हुए चल रहे थे। या लब्बैक या रसूल अल्लाहऱ की सदाएं पूरे नगर में गूंज रही थीं। पंचायत पाण्डेयबारा के गांव केसठ में जुलूस-ए-मोहम्मदी में शामिल जिला सचिव मोनू अख्तर का ग्रामीणों ने गर्मजोशी के साथ स्वागत करते हुए पगड़ी पहनाया। मौके पर मोनू अख्तर ने कहा कि आज बहुत ही खुशी का दिन है। आज हमलोग नबी ए करीम (स) के 15 सौ साल जन्मदिन का जश्न मना रहे हैं।

संक्षिप्त खबरें

आप शिक्षक ही भारत को विकासशील देश से विकसित देश बना सकते हैं : सांसद

हजारीबाग : हजारीबाग के नवाबगंज में स्थित झारखंड राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ के भवन का जीर्णोद्धार किया गया है। इस अवसर पर नूतन कार्यालय प्रवेश और शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। सांसद जायसवाल ने हजारीबाग जिले के सभी उच्च विद्यालय और प्लस टू उच्च विद्यालय के प्रधानाचार्यों एवं प्रभारी प्रधानाचार्यों को अपने तरफ से लैपटॉप बैग भेंटकर सम्मानित किया। कुल 95 शिक्षकों को सांसद मनीष जायसवाल की ओर से यह सम्मान भेंट किया गया। इस दौरान सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि समाज में अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाने वाले शिक्षकों को सम्मानित करके मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। सांसद मनीष जायसवाल ने शिक्षकों से यह भी अपील की कि उनके प्रयासों से ही भारत को शत-प्रतिशत साक्षर बनाकर एक विकासशील देश से विकसित देश बनाया जा सकता है, जो अंतत: हमें विश्वगुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ाएगा।

सड़क दुर्घटना में युवक गंभीर रूप से घायल ग्रामीणों ने समय रहते पहुंचाया अस्पताल

बरही : बरही थाना क्षेत्र के पंचमाधव स्थित गडलाही मोड़ पर शुक्रवार को सड़क दुर्घटना में एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल की पहचान विनोद बेसरा (38 वर्ष), पिता पेंडो मांझी, निवासी डुमरिया टांड़ घंधरी, बरकट्ठा के रूप में हुई है। जानकारी के मुताबिक विनोद बेसरा बाइक से गुजर रहे थे, तभी उनका वाहन अनियंत्रित होकर सड़क पर बने डिवाइडर से टकरा गया। हादसे में वे गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े। घटना की जानकारी सबसे पहले पास की दुकान पर मौजूद सुरेश रविदास को हुई, जिन्होंने तत्काल सामाजिक कार्यकर्ता सिकंदर कुमार व आसपास के ग्रामीणों को सूचना दी। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने तुरंत घायल को उठाकर एंबुलेंस से बरही अस्पताल भेजा। वहीं सिकंदर कुमार भी अस्पताल पहुंचे और इलाज की व्यवस्था की। प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने गंभीर हालत को देखते हुए विनोद को हजारीबाग सदर अस्पताल रेफर कर दिया। इस दौरान समाजसेवी पूरन राम, सुरेश रविदास, राजेंद्र भारती, राजेश ठाकुर, बिनोद पंडित, तुलसी राम, मोहम्मद मोजाहिद और बाहदुर साव सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे। सभी ने मिलकर घायल को समय पर अस्पताल पहुंचाकर मानवता की मिसाल पेश की।

चौपारण में गैस सिलेंडर चोरी का उद्वेदन तीन गिरफ्तार

चौपारण : सिंघरावाँ स्थित सत्यनाम भारत गैस ग्रामीण वितरक एजेंसी से कुछ दिन पहले हुए गैस सिलेंडर चोरी कांड का खुलासा गुरुवार को हो गया। पुलिस ने इस मामले में तीन चोरों को गिरफ्तार कर उनके पास से 06 सिलेंडर बरामद किया हैं। इस संबंध में पीड़ित दयानिधि यादव, पिता झगरु यादव, निवासी तेतरचक, थाना ईटखोरी, जिला चतरा द्वारा चौपारण थाना में लिखित आवेदन दिया गया था। आवेदन के आधार पर चौपारण थाना कांड सं. 222/25, धारा 341(1)/303(2) भा०द०सं०दर्ज कर अनुसंधान प्रारम्भ किया गया। पुलिस अधीक्षक के आदेश पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी (बरही) अजीत कुमार विमल के नेतृत्व में छापामारी दल का गठन किया गया। लगातार की गई छापामारी के क्रम में 04/09/25 को कांड में संलिप्त तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों की निशानदेही पर चोरी गए गैस सिलेंडरों की बरामदगी की गई। बरामद सामानों में 06 गैस सिलेंडर शामिल हैं। गिरफ्तार१ व्यक्तियों की पहचान इस प्रकार है जो पहला ओम कुमार उम्र 25 वर्ष पिता राजकुमार चन्द्रवंशी सा०- टिटही थाना चौपारण जिला हजारीबाग दूसरा इलियास अंसारी उम्र 25 वर्ष पे० ग्यास अंसारी सा०- मलिकाना थाना चौपारण जिला हजारीबाग ओर तीसरा विजय गुप्ता उम्र 54 वर्ष पिता स्व० लखन साव सा०- अफीम कोठी, थाना बरही जिला हजारीबाग को पकड़ा गया। गिरफ्तार आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है। वहीं, पुलिस अन्य संलिप्त अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापामारी अभियान चला रही है। छापामारी दल में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बरही अजीत कुमार विमल, थाना प्रभारी चौपारण सरोज सिंह चौधरी, पु.अ.नि दिव्य प्रकाश अनुसंधानकर्ता, पु.अ.नि. सुनील कुमार सिंह समेत चौपारण थाना के सशस्त्र बल शामिल थे।

पुलिस ने 50 बोरी कोयला सहित दो तस्कर को किया गिरफ्तार

चौपारण : गुरुवार को हजारीबाग पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि धनबाद से एक पिकअप वाहन जिसकी संख्या- जेएच10 सीडब्ल्यू-5745 में अवैध रूप से कोयला लोड कर बिहार के बाराचट्टी की ओर ले जाया जा रहा है। सूचना मिलते ही अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी (बरही) अजीत कुमार विमल के नेतृत्व में चोरदाहा चेकपोस्ट पर विशेष वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। पुलिस ने अभियान के दौरान उक्त पिकअप वाहन को रोककर जांच की। तलाशी में वाहन से 50 बोरी कोयला बरामद हुआ। मौके पर ही पुलिस ने दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया, जो चोरी-छिपे कोयले की तस्करी कर रहे थे। गिरफ्तार तस्करों की पहचान पहला जो विकाश कुमार (24 वर्ष) पिता बीर बहादुर सिंह निवासी शिवरपुरगंज थाना धनगाई जिला भोजपुर (बिहार) और दूसरा बिमलेश कुमार (18 वर्ष) पिता भुनेश्वर सिंह निवासी जनता मार्केट के पीछे हाउसिंग कॉलोनी बरटांड़ थाना+जिला धनबाद को पकड़ा गया है। इस संबंध में चौपारण थाना कांड संख्या-245/25, दिनांक-04/09/25 दर्ज कर आरोपियों के खिलाफ धारा 317(5)/3(5) भारतीय दंड संहिता एवं 30( ) कोयला खान अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। दोनों आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है। वहीं, कोयला तस्करी गिरोह के अन्य सदस्यों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की छापेमारी जारी है। छापामारी दल में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बरही अजीत कुमार विमल, पु०अ०नि० सरोज सिंह चौधरी थाना प्रभारी चौपारण, पु०अ०नि० दिव्य प्रकाश चौपारण थाना (अनुसंधानकर्ता), पु०अ०नि० बिन्देश्वर महतो चौपारण थाना, स०अ०नि० भाजु एक्का चौपारण थाना और चौपारण थाना के सशस्त्र बल शामिल थे।

एक नजर

रांची में बीजेपी नेता रमेश सिंह को एक बार फिर जान से मारने की मिली धमकी

रांची : बीजेपी नेता और बिल्डर रमेश सिंह को एक बार फिर जान से मारने की धमकी मिली है। यह धमकी शुक्रवार शाम को उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट ऑफ इंडिया के नाम पर दी गई।

इस बार उन्हें 8900159718 नंबर से फोन आया। फोन करने वाले ने पहले तो उनसे संगठन के लिए रंगदारी मांगी और धमकी दी, नहीं दोगे तो इस बार दाग ही देंगे। यह पहली बार नहीं है जब रमेश सिंह को धमकी मिली है। इससे पहले, 1 सितंबर को भी उन्हें PLFI के नाम पर धमकी भरा कॉल आया था। उस समय भी उनसे रंगदारी की मांग की गई थी। इस घटना के बाद, रमेश सिंह ने सुखदेवनगर थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई थी।

उन्होंने पुलिस को बताया था कि उनके मोबाइल पर आए फोन कॉल में सामने वाले ने कहा था कि मैं PLFI संगठन से बोल रहा हूं। अगर आपको व्यवसाय चलाना है तो संगठन को मदद करना होगा। अन्यथा अंजाम भुगतना होगा। यह बॉस का आदेश है।

पितरों का तर्पण और पिंडदान का पर्व पितृपक्ष सात से शुरू

रांची : पितरों का तर्पण कर पानी देने और दान-पुण्य कर पुण्य अर्जित करने वाला आध्यात्मिक पर्व पितृपक्ष सात सितंबर से से शुरू हो जाएगा। यह पर्व आगामी 21 सितंबर तक चलेगा।

इस दौरान लोग अपने दिवंगत पूर्वजों को याद कर उनकी आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान करते हैं। जानकारों के अनुसार इसबार पितृपक्ष की शुरूआत एक चंद्र ग्रहण के साथ हो रही है। इसके कारण पितृपक्ष करनेवाले श्रद्धालू वंशजों को सूतक काल का पालन करना आवश्यक होगा और ग्रहण अवधि में श्राद्धकर्म नहीं किए जाएंगे।

अपने पूवर्जों के निधन की तिथि अनुसार श्राद्धक्रम का अनुष्ठान वैधानिक तरीके से किया जाता है। श्रीकृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट के प्रांतीय प्रवक्ता संजय सर्राफ ने बताया कि पितृपक्ष हिंदू धर्म में पितरों को प्रसन्न और संतुष्ट करने वाला पर्व माना जाता है। इस अवधि में दादा-दादी, नाना-नानी सहित सभी पूर्वजों का स्मरण कर विधि-विधान से जल तर्पण और पिंडदान किया जाता है। साथ ही ब्राह्मणों को भोजन कराने, दक्षिणा देने और जीव-जंतुओं को अन्न दान करने की परंपरा है।

शिक्षक दिवस पर राज्यभर के 128 शिक्षक सम्मानित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : शिक्षक दिवस के मौके पर झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद, रांची में राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में राज्यभर के 128 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 50 घंटे के समेकित-सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम के लिए मॉड्यूल लेखन और डिजिटल स्वरूप तैयार करने वाले 128 शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र और शॉल देकर सम्मानित किया गया।

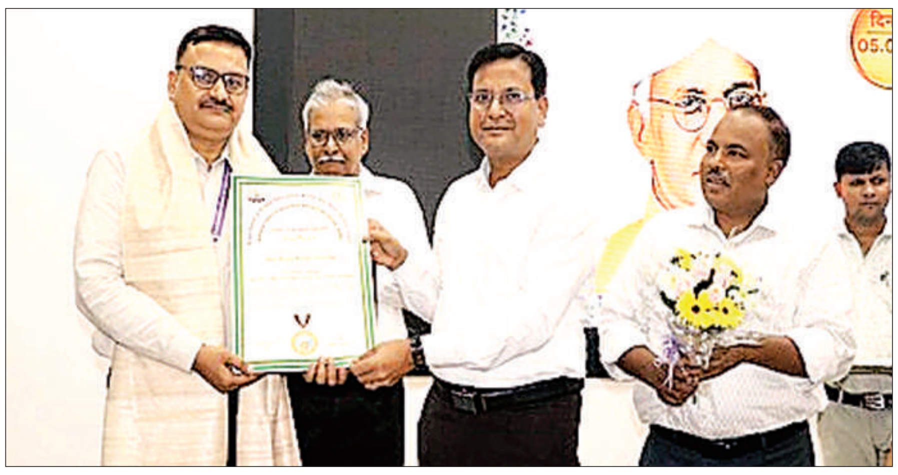

राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुने गए दो शिक्षक

रामगढ़ के सुरेंद्र प्रसाद गुप्ता और चतरा के मनोज कुमार चौबे (उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय, दवारी) को राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान के लिए अनुशंसा की गई. दोनों शिक्षकों को कार्यक्रम के दौरान 25,000 रुपये, शॉल, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

बच्चे गीली मिट्टी की तरह हैं : राजेश प्रसाद

समारोह को संबोधित करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक राजेश प्रसाद ने कहा कि बच्चे गीली मिट्टी की तरह हैं और शिक्षक कुशल कुम्हार. बच्चों की कमजोरी को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ाना ही सच्चा प्रयास है। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे नई तकनीकों का उपयोग करते हुए छात्रों को पढ़ाएं और हर बच्चे के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दें। उन्होंने कहा कि डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने राष्ट्रपति रहते हुए भी अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा और अपना जन्मदिन शिक्षकों को समर्पित कर दिया। सम्मान पाकर शिक्षक काफी उत्साहित दिखे। उन्होंने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और स्कूली शिक्षा विभाग का आभार जताया। राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए अनुशंसित मनोज कुमार चौबे ने कहा कि सम्मान के साथ जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। मैं गणित और विज्ञान को कला और संस्कृति से जोड़कर बच्चों को पढ़ाता हूं, जिससे वे पढ़ाई को रचनात्मक ढंग से समझते हैं।

शिक्षक दिवस पर शिक्षकों ने जलाई डीएसई के आदेश की प्रतियां

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ रांची इकाई के आह्वान पर सभी प्रखंडों के प्राथमिक और मध्य विद्यालय के शिक्षकों ने कचहरी स्थित शिक्षा परिसर में डीएसई के आदेश की प्रतियां जलाईं। शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों ने सबसे पहले सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। इसके बाद जुलूस की शक्ल में कतारबद्ध होकर नागाबाबा खटाल के पास जमा होकर जिला शिक्षा अधीक्षक बादल राज की ओर से शिक्षकों के वार्षिक वेतन वृद्धि के लिए हिंदी टिप्पण और प्रारूपण परीक्षा से संबंधित शपथ पत्र जमा करने का निर्देशित पत्र का विरोध किया गया। साथ ही इससे निर्देशित पत्र की प्रतियां जलाई गईं।

मौके पर शिक्षकों ने शिक्षा विभाग के विरोध में जमकर नारेबाजी भी की। उल्लेखनीय है विभाग की ओर से हिंदी टिप्पण पास करने के विषय को अवांछित रूप से आधार बनाते हुए जिले के लगभग तीन हजार शिक्षकों के जुलाई माह से ही वार्षिक वेतनवृद्धि पर रोक लगाकर रखी गई है। बाद में पत्र जारी कर प्रथम श्रेणी दंडाधिकारी का शपथ पत्र शिक्षकों को देने की मांग का भी विरोध किया गया। मौके पर संघ के प्रदेश अध्यक्ष अनूप केशरी, मुख्य प्रवक्ता नसीम अहमद और जिला अध्यक्ष सलीम सहाय ने कहा कि डीएसई बादल राज का आदेश अव्यवहारिक और शिक्षकों को मानसिक शारीरिक प्रताड़ित करने वाला है।

ईद मिलादुन्नबी पर रांची में निकला भव्य जुलूस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुस्लिम समुदायों ने जश्न-ए-ईद मिलादुन्नबी के अवसर जुलूस निकाली। यह जुलूस एदारा-ए-शरिया झारखंड व सुन्नी बरैलवी सेंट्रल कमिटी के तत्वावधान मे आयोजित हुआ। मुहम्मद पैगम्बर के 1500 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में जुलूस का आयोजन हुआ। इसमें मोरहाबादी, उलातू, आजाद बस्ती, कुरैशी मुहल्ला, पुंदाग, कडरु, हरमू, गाड़ी खाना, कुम्हार टोली, पुरानी हिन्दपीढ़ी समेत अन्य स्थानों से हजारों लोग शामिल हुए। सभी जुलूस मेन रोड, चर्च कम्प्लेक्स, सुजाता चौक, राजेन्द्र चौक, डोरंडा चौक होते हुए डोरंडा रेसालदार बाबा दरगाह उर्स मैदान पहुंचे। यहां पर सभी बाबा के दरबार पर देश और घर परिवार की खुशहाली की दुआ की गई।

बाईक रैली और पैदल मार्च करते हुए जुलूस में हुए शामिल

मोरहाबादी, गाड़ी खाना चौक समेत अन्य इलाके से हजारों लोगों ने बाईक और पैदल मार्च करते हुए जुलूस के शक्ल में पहुंचे। सभी हाथों में पांरपरिक और तिरंगा झंडे लिए हुए जुलूस में शामिल थे। जुलूस के स्वागत के लिए दर्नजों पंडाल बनाए गए थे। जहां से जुलूस में शामिल लोगों के बीच शरबत, बुंदिया, खीर फल, शुद्ध जल वितरण कर स्वागत किया गया।

रिसालदार बाबा के दरबार पर कव्वाली का आयोजन

जश्न-ए-ईद मिलादुन्नबी के मौके पर मस्जिदों में नमाज अदा की गई। सभी वेशभूषा में शामिल होकर कव्वाली के गीतों से आगे बढ़ते गए। मशहूर कव्वाल इलियास काजी ने रिसालदार दरगाह में ऐसा जादू बिखेरा कि पूरा माहौल सूफियाना रंग में बदल गया। हारमोनियम पर सैगर अली और अरहान खान ने सुरों का साथ दिया, जबकि ढोलक पर नियाजुल खान, तबले पर लक्की खान और ओक्टोपैड पर सरताज खान की थाप ने समां बांध दिया। कव्वाली की गूंज से पूरा रिसालदार बाबा के दरगाह का आंगन गुलजार हो गया।

दिशोम गुरु को भारत रत्न देने की मांग को लेकर नेमरा से रांची तक 86 किमी पदयात्रा शुरू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड राज्य के प्रणेता और प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को भारत रत्न देने की मांग को लेकर शुक्रवार से राष्ट्रीय युवा शक्ति के तत्वावधान में नेमरा से रांची तक पदयात्रा का शुभारंभ हुआ। पदयात्रा के पहले दिन, गुरूजी के पैतृक आवास नेमरा में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान पदयात्रा में शामिल लोगों को गुरूजी की भतीजी रेखा सोरेन ने उनके घर की पवित्र मिट्टी दी। साथ ही उनके पैतृक घर में पौधारोपण भी किया गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय युवा शक्ति के केंद्रीय अध्यक्ष उत्तम यादव के नेतृत्व में 300 से अधिक कार्यकताओं ने भाग लिया। पदयात्रा का पहला दिन नेमरा से प्रारंभ होकर शुक्रवार रात गोला में विश्राम स्थल पर सम्पन्न हुआ। यह पदयात्रा 07 सितम्बर तक चलेगी। यात्रा के अंतिम दिन रांची के राजभवन पहुंचकर राज्यपाल के माध्यम से देश की राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ज्ञापन सौंपा कर उनसे गुरुजी को भारत रत्न देने का मांग की जीएगी। इसके बाद राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को भी उनके घर की पवित्र मिट्टी एवं ज्ञापन सौंपा जायेगा। पदयात्रा में मुख्य रूप से उमेश साहू, सावन लिंडा, नितेश वर्मा, शैलेश नंद तिवारी, रोहित यादव, सोनू गुप्ता, आर्यन मेहता, बबलू करमाली, दिलीप यादव, अमित वर्मा रौनक सिंह सहित कई अन्य शामिल हुए।

इनर व्हील क्लब ने स्ट्रेचर व व्हील चेयर का किया वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : इनर व्हील क्लब स्वर्णरेखा, रांची ने मरीजों के लिए स्ट्रेचर और व्हील चेर का वितरण किया। केसी राय चैरिटेबल ट्रस्ट में इन उपकरणों का वितरण किया गया। इसको लेकर क्लब की बैठक अधयक्ष सोमा भादुड़ी की अध्यक्षता में हुईइस दौरान चेरयमेन रश्मि गुप्ता ने कल्ब के कई नए प्रोजेक्ट की भी शुरूआत की। बैठक के बाद क्लब की सदस्यों ने डंगरा टोली में वृक्षारोपण किया। अन्नपूर्णा योजना के तहत लोगों को भोजन कराया। इसके बाद एलईबीबी स्कूल के बच्चों के पठन-पाठन की समाग्री के साथ बच्चियों के बीच सेनेटरी पैड का भी वितरण किया गया। क्लब की एडिटर अनिता जायसवाल के न्यूजलेटर का भी उद्घाटन किया गया। क्लब की ओर शिक्षक दिवस के मौके पर छह

शिक्षकों को सम्मानित किया गया। क्लब की सचिव अर्चना त्रिवेदी ने बताया कि यह आयोजन स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण और सामाजिक कल्याण के प्रति क्लब की प्रतिबद्धता को दशार्ता है, जो थीम ह्यरीच आउट फॉर अ बेटर वर्ल्ड पर आधारित है। इस कार्यक्रम में शालिनी सिंहा, निशि श्रीवास्तव, दीपा चौहान, नीता नारायण, नमिता प्रसाद, माला श्रीवास्तव, देवजानी सान्याल, रिंकु बनर्जी, रागिनी सिंह, पदमा बांका, ममता नारायण, मनीषा सिंह, अंजू देवी के साथ क्लब के अन्य सदस्य मौजूद रहीं।

हाइड्रोजन आधारित डीआरआई पर आरडीसीआईएस और आईआईटी खड़गपुर की संयुक्त कार्यशाला का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : इस्पात भवन, आरडीसीआईएस, सेल, में लौह एवं इस्पात अनुसंधान एवं विकास केंद्र ,सेल और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर द्वारा संयुक्त रूप से हाइड्रोजन डायरेक्ट रिडक्शन शाफ्ट रिएक्टर के लिए त्रि-आयामी कम्प्यूटेशनल द्रव गतिकी मॉडल पर एक दिवसीय तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला आईआईटी खड़गपुर में हाइड्रोजन आधारित डायरेक्ट रिड्यूस्ड आयरन प्रयोगशाला सुविधाओं और आरडीसीआईएस, सेल रांची में पायलट सुविधाओं के विकास एवं स्थापना हेतु ज्ञान प्रसार और आगे की रणनीति के रूप में आयोजित की गई थी। इस सहयोगात्मक परियोजना को इस्पात क्षेत्र के हरितीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में इस्पात मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित किया गया है। कार्यशाला का उद्घाटन संदीप कुमार कर, कार्यकारी निदेशक ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में, श्री कर ने इस्पात उद्योग के हित में ऐसी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सुविधाओं के विकास हेतु डिजाइनरों, प्रक्रिया विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, शोधकताओं और इस्पात संयंत्र व्यवसायियों के बीच ज्ञान साझा करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ये आगामी सुविधाएँ आने वाले वर्षों में देश में हाइड्रोजन आधारित डीआरआई पर डीकाबोर्नाइजेशन और स्वदेशी तकनीकों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। आईआईटी खड़गपुर के धातुकर्म एवं सामग्री अभियांत्रिकी विभाग के प्रमुख प्रोफेसर एस बी सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में ऐसी सुविधाओं के महत्व पर प्रकाश डाला और स्वदेशी तकनीक के विकास की दिशा में उद्योग-एल्यूमिना सहयोगात्मक साझेदारी के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक का हवाला दिया। आईआईटी खड़गपुर के प्रोफेसर मानस पालीवाल ने हाइड्रोजन आधारित डीआरआई पर 3डी सीएफडी पर किए गए सिमुलेशन अध्ययन प्रस्तुत किए। प्रोफेसर पालीवाल ने भारतीय लौह अयस्क की परिस्थितियों के अनुकूल लौह अयस्क और पेलेट विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शाफ्ट रिएक्टरों के डिजाइन के आधार की व्याख्या की।

सेल सुरक्षा संगठन ने मेकॉन इंजीनियरों के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम का किया आयोजन

रांची : सेल सुरक्षा संगठन, रांची द्वारा 5-6 सितंबर, 2025 के दौरान इस्पात भवन, रांची स्थित एसएसओ सुरक्षा सदन में अपनी तरह के पहले विशेष अनुकूलित सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मेसर्स मेकॉन के 26 इंजीनियरों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम हाल के दिनों में एसएसओ द्वारा शुरू किए गए उपायों और पहलों की श्रृंखला का एक हिस्सा है। उद्घाटन सत्र में सेल के कार्यपालक निदेशक अनूप कुमार उपस्थित थे। उन्होंने परियोजना सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं, जैसे उचित योजना के महत्व, हैजोप अध्ययन, जोखिम न्यूनीकरण, संचार, प्रशिक्षण और कर्मचारियों की सुरक्षा में सुधार के लिए टूलबॉक्स चर्चा पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों से आज के औद्योगिक परिदृश्य में उपलब्ध डिजिटल उपकरणों का उपयोग करने और कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान का लाभ उठाने का आग्रह किया, जिसके लिए एसएसओ, संयंत्रों और इकाइयों के संकाय सदस्यों द्वारा काफी प्रयास किए गए हैं। उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि इस्पात उद्योग की सुरक्षा में सुधार के लिए मेकॉन और सेल के बीच संयुक्त रूप से और एकजुट होकर काम करने की पर्याप्त गुंजाइश मौजूद है। कार्यक्रम में विभिन्न प्रासंगिक विषयों को शामिल किया गया, जैसे सामान्य सुरक्षा और दुर्घटना निवारण, अग्नि सुरक्षा प्रबंधन, परियोजना प्रबंधन के दौरान सुरक्षा, कार्य करने की अनुमति और प्रोटोकॉल प्रणाली, ठेकेदार सुरक्षा प्रबंधन का अवलोकन, सुरक्षा में वैधानिक आवश्यकताएँ, सामग्री हैंडलिंग के दौरान सुरक्षा, सुरक्षा ऑडिट, इस्पात उद्योग में गैस सुरक्षा, विद्युत सुरक्षा, रासायनिक सुरक्षा आदि।

संक्षिप्त खबरें

धार्मिक झंडा उखाड़ कर फेंकने पर तनाव, सड़क जाम

रांची: रांची के पिठोरिया के सोसो मोड़ पर धार्मिक झंडा उखाड़ कर फेंकने को लेकर तनाव का माहौल था। एक पक्ष के लोगों ने शुक्रवार को धार्मिक झंडे को उखाड़ फेंके जाने के बाद आरोपित की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सड़क पर टायर जलाकर जाम कर दिया। इससे आवाजाही प्रभावित हुई और स्थिति तनावपूर्ण हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को समझाने की कोशिश की। पुलिस अधिकारियों ने प्रदर्शन कर रहे लोगों को आश्वासन दिया कि आरोपित को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा और मामले की निष्पक्ष जांच की जाएगी। पुलिस के आश्वासन के बाद प्रदर्शनकारियों ने सड़क जाम हटा लिया। थाना प्रभारी अभय कुमार ने बताया कि पुलिस उन असामाजिक तत्वों की तलाश कर रही है, जिन्होंने इस घटना को अंजाम दिया। मामले में पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज को भी खंगाल रही है।

शिक्षक दिवस पर केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री ने शिक्षिका को किया सम्मानित

रांची: देश के द्वितीय राष्ट्रपति रहे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती सह शिक्षक दिवस पर केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने शुक्रवार को रांची में शिक्षिका को सम्मानित किया। केंद्रीय मंत्री संजय सेठ ने रांची स्थित अपने पंडरा स्थित आवास पर डीएवी गांधीनगर स्कूल की जूनियर विंग की इंचार्ज डॉ. जया जायसवाल को उनके शिक्षा में किए गए सराहनीय कार्यों के लिए उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने उनके अच्छे और उज्जवल भविष्य के लिए अपनी ओर से बधाई और शुभकामनाएं दी। उल्लेखनीय है कि डॉ. जायसवाल 20 वर्षों से लगातार अपनी सेवा डीएवी गांधीनगर स्कूल में विभिन्न पदों पर देती आ रही हैं। उनके मार्गदर्शन में स्कूल के विद्यार्थियों ने हमेशा उत्कृष्ट प्रदर्शन कर स्कूल का नाम रोशन किया है।

आजसू पार्टी के कार्यकर्ताओं ने शिक्षक सम्मान समारोह का किया आयोजन

रांची : झारखंड में ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश महतो की अगुवाई में शुक्रवार को सिल्ली स्थित पार्टी कार्यालय में 'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया। समारोह के दौरान कई शिक्षकों को सम्मानित किया गया। शिक्षक सम्मान समारोह के दौरान सिल्ली प्रखंड के विभिन्न उच्च और मध्य विद्यालयों के प्राचार्यों और सहायक शिक्षकों को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले शिक्षकों में भजोहरि महतो, विजय महतो, प्रो. राधेश्याम साहु, प्रो. गिरिजानंदन महतो, धीरेन्द्र नाथ महतो, सीएल प्रजापति, उपेन्द्र नाथ महतो, चंद्रकांत महतो सहित अन्य शिक्षक शामिल रहे। इस अवसर पर सुदेश महतो ने कहा कि गुरुजन समाज के निमार्ता हैं। उनका मार्गदर्शन और ज्ञान ही नई पीढ़ी की नींव तैयार करता है। शिक्षकों का सम्मान करना हमारी संस्कृति का हिस्सा है और हमें उनके योगदान को हमेशा याद रखना चाहिए। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुदेश महतो, विशिष्ट अतिथि रांची जिला परिषद की उपाध्यक्ष वीणा चौधरी, पार्टी के केंद्रीय उपाध्यक्ष प्रवीण प्रभाकर, केंद्रीय महासचिव नजरुल हसन हाशमी, केंद्रीय महासचिव संजय मेहता और सिल्ली की उपप्रमुख आरती देवी उपस्थित थीं। समारोह का संचालन सुनील सिंह ने किया।

रांची पुलिस ने साहिल हत्याकांड मामले में दो और अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

रांची : रांची पुलिस ने कुरकुरे उर्फ साहिल हत्याकांड मामले में दो और अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान मोहम्मद फैजान अहमद उर्फ लोढ़ा अहमद और अथार तौहीद के रूप में हुई है। इन दोनों को मिलाकर इस मामले में अब तक कुल आठ लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इस केस में छह आरोपियों को पहले ही जेल भेजा जा चुका है, जिनमें मुख्य आरोपी भी शामिल है। पुलिस इस मामले में अपराधियों को पनाह देने और उनकी मदद करने वालों पर भी कार्रवाई कर रही है। कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोय के अनुसार, इस हत्याकांड के सभी आरोपियों को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा और आगे की जांच अभी भी जारी है।

गुरु नानक बाल मंदिर में शिक्षकों का हुआ सम्मान

रांची: शिक्षक दिवस के अवसर पर गुरु नानक बाल मंदिर स्कूल, कृष्णा नगर कॉलोनी में शुक्रवार को शिक्षकों को समानित किया गया। इस अवसर पर स्कूल परिसर में नए प्ले स्कूल का उद्घाटन भी किया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि अर्जुन देव मिढ़ा और प्रिंसिपल शिवानी मेहता ने फीता काटकर प्ले क्लासेस और प्ले जोन का शुभारंभ किया। प्रिंसिपल ने स्वागत संबोधन किया और बच्चों ने रंगारंग नृत्य प्रस्तुत किया। इस दौरान शिक्षक दिवस पर सभी शिक्षिकाओं और स्टाफ को उपहार दिया गया। समारोह में मोहनलाल अरोड़ा को उनकी 53 वर्षों की उल्लेखनीय सेवा के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें मोमेंटो भेंट कर स्कूल प्रबंधन कमेटी ने आभार व्यक्त किया। अर्जुन देव मिढ़ा और नरेश पपनेजा ने शिक्षकों को शुभकामनाएं दीं और नए प्ले स्कूल की सफलता की आशा जताई। कार्यक्रम में सैकडों लोग शामिल हुए जिसमें छात्र-छात्राएं, अभिभावक और समाज के गणमान्य शामिल थे। समारोह की सफलता में स्कूल कमेटी के रमेश गिरधर, अश्विनी सुखीजा, कमल धमीजा, शेंकी मिढ़ा और कौशिक अरोड़ा की सक्रिय भूमिका रही। कार्यक्रम में र्जुन देव मिढ़ा, सुरेश मिढ़ा, मनीष मिढ़ा, सचिव मनीष मिढ़ा, नरेश पपनेजा, द्वारका दास मुंजाल, प्रिंसिपल शिवानी मेहता सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल रहे।

गुरु गोबिंद सिंह पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : गुरु गोबिंद सिंह पब्लिक स्कूल, सेक्टर 5 बी में शिक्षक दिवस बड़े ही उत्साह और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। भाई नंदलाल जी सभागार में आयोजित इस समारोह में विद्यालय परिवार के सभी शाखाओं के शिक्षकों और शिक्षिकाओं की सहभागिता उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के स्वागत, दीप प्रज्वलन, विद्यालय प्रार्थना गीत एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने सी हुई। उपरांत प्राचार्य अभिषेक कुमार ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने विद्यालय परिवार की उपलब्धियों और शिक्षकों की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि शिक्षक ही वह शक्ति हैं, जिनसे विद्यार्थी अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की श्रृंखला में जीजीपीएस धनबाद की शिक्षिकाओं ने विरसा-ए-पंजाब, जीजीपीएस चास की शिक्षिकाओं ने संस्कृति के रंग, भारत के संगह्व और जीजीपीएस सेक्टर १/इ की शिक्षिकाओं ने झारखंड की झांकी प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया। रंग-बिरंगे कार्यक्रमों ने वातावरण को जीवंत और उल्लासमय बना दिया। इस अवसर पर प्रबंधन समिति के सचिव एस.पी. सिंह ने शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मियों को सम्मानित किया और कहा -शिक्षक केवल ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि समाज के संस्कार और भविष्य की नींव रखते हैं। जीजीपीएस परिवार गर्व करता है कि हमारे पास इतने समर्पित और संवेदनशील शिक्षक हैं। अध्यक्ष, तरसेम सिंह ने अपने संदेश में कहा शिक्षक ही समाज की आत्मा हैं। वे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली ज्योति हैं। हमारे विद्यालय ने अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में शिक्षा और संस्कार, दोनों में निरंतर ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं।ह्वप्राचार्य प्रभारी धनबाद श्री सुदीप कुमार ठाकुर ने अपने संबोधन में कहा गुरु हमारे जीवन के सच्चे मार्गदर्शक होते हैं, जो अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। शिक्षक सिर्फ पाठ्य पुस्तकों का ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि हमें जीवन जीने की सही दिशा भी दिखाते हैं। इस शिक्षक दिवस पर हम अपने सभी गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं और उनके अमूल्य योगदान को नमन करते हैं। इस अवसर को और भी विशेष बनाते हुए विद्यालय परिवार ने कार्यरत प्राचार्य सौमेन चक्रवर्ती का विदाई समारोह भी आयोजित किया। अपने भावपूर्ण संबोधन में उन्होंने विद्यालय परिवार और विद्यार्थियों के साथ अपने गहरे जुड़ाव को साझा करते हुए ।

एक नजर

खांडी डैम में नहाने गए किशोर की डूबने से मौत

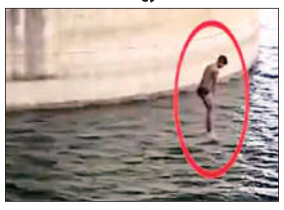

चंदवारा : चंदवारा थाना क्षेत्र अंतर्गत खांडी में एक दर्दनाक हादसा सामने आया है, जहाँ खांडी डैम में नहाने के दौरान 16 वर्षीय शेरू कुमार, पिता महेश यादव अपने दोस्तों के साथ डैम में नहाने के दौरान डूबने से मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार, शेरू अपने दोस्तों के साथ पानी टंकी के लिए बने इंटक वेल से डैम में कूदकर नहा रहा था। इसी क्रम में उछलने के बाद वह पानी से बाहर नहीं आ सका। जब दोस्तों ने उसे पानी से बाहर निकाला, तब तक उसकी हालत गंभीर हो चुकी थी। आनन-फानन में दोस्त और आसपास मौजूद लोग उसे सदर अस्पताल कोडरमा ले गए। वहाँ डॉक्टरों की टीम ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। डॉक्टरों ने शव को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। इस घटना के बाद मृतक के परिवार में शोक का माहौल है। मृतक शेरू कुमार अपने चारों भाई बहन में सबसे छोटा था।

अमर शहीद जगदेव प्रसाद की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा

बोकारो : इस्पात नगर , आज विस्थापित चौक के सेक्टर-8 सी में पारिवारिक सहायता केंद्र के बैनर तले गुरुवार को अमर शहीद जगदेव प्रसाद की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता मदन मोहन महतो ने की जबकि संचालन जयप्रकाश महतो ने किया। श्रद्धांजलि सभा की शुरूआत जगदेव बाबू की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर की गई। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष मदन मोहन महतो ने कहा कि ₹जगदेव प्रसाद का पूरा जीवन सामंती शोषण, अन्याय, पाखंडवाद और अंधविश्वास के खिलाफ संघर्ष करते हुए समाज के गरीब, शोषित, वंचित एवं किसानों को शिक्षा, सम्मान और समानता के अवसर दिलाने के लिए समर्पित रहा। उन्होंने कहा कि आज के दौर में जगदेव बाबू के आदर्श और विचारधारा और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। कार्यक्रम में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर अमर शहीद जगदेव प्रसाद को भारत रत्न सम्मान देने की मांग भी की गई। इस अवसर पर प्रमुख रूप से समरेश कुमार, मनोज कुमार, बादल कोइरी, विष्णु कुमार, शिवजी विश्वास, नरेश ठाकुर, अरुण कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

तुपकाडीह में शांति और सौहार्द से मनाया गया मुहम्मद साहब का जन्म दिन

बोकारो : शुक्रवार को तुपकाडीह और मानगो में पैगम्बर ए इस्लाम हजरत मुहम्मद साहब का जन्म दिन शांति व सौहार्द के साथ मनाया गया। धार्मिक नारे के साथ जामा मस्जिद के प्रांगण से निकले खुशी के इस जुलूस में हिंदू मुसलमान के आपसी प्रेम देखने को मिली। हाफिज नईमुद्दीन रिजवी ने कहा कि मुहम्मद साहब के द्वारा दिये गए प्रेम, सहिष्णुता शांति एवं विश्व बंधुत्व के पैगाम से हमे प्रेरणा लेने की जरूरत है। मौके पर विधायक प्रतिनिधि निरंजन मिश्रा ,मुखिया शांति देवी, उप मुखिया तिलु महतो, पंसस ललित, लुकमान हमदर्द, मनोज दास , इकबाल, मुख्तार, जहांगीर , अनिल दिगार , किस्मत , अब्दुल्ला, शकील , मोहन ठाकुर आदि मौजूद रहे।

झारखंड की बेटी दीपशिखा कुमारी ने जूडो में किया नाम रोशन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : जीजीपीएस सेक्टर-5 की कक्षा 11 की छात्रा दीपशिखा कुमारी ने राष्ट्रीय स्तर पर एक बार फिर झारखंड का नाम रोशन किया है। दीपशिखा ने डीएवी पब्लिक स्कूल सेक्टर-6 में 30 और 31 अगस्त को आयोजित राष्ट्रीय स्तर जूडो चैंपियनशिप में अपने सीनियर ग्रुप में स्वर्ण पदक जीतकर यह उपलब्धि हासिल की। इसके साथ ही उन्हें आगामी राष्ट्रीय जूडो चैंपियनशिप, जो जल्द ही चंडीगढ़ में आयोजित होगी, में झारखंड की ओर से खेलने का अवसर मिलेगा। युवा जूडो खिलाड़ी दीपशिखा अब तक लगभग 15 मेडल जीत चुकी हैं। इस वर्ष जिला स्तरीय जूडो प्रतियोगिता में उन्हें बेस्ट फाइटर अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। इससे पहले वह राष्ट्रीय स्तर पर दो बार खेल चुकी हैं और अब तीसरी बार राजस्थान में 25 अगस्त को अपनी टीम के साथ रवाना हुई थीं। दीपशिखा प्रतिदिन दो घंटे अपने प्रशिक्षक चिन्मय कुमार के मार्गदर्शन में अभ्यास करती हैं और शाम के समय सुचिता चटर्जी से अतिरिक्त प्रशिक्षण लेती हैं। उन्होंने बताया कि उनका सपना झारखंड के लिए स्वर्ण पदक जीतकर राज्य और देश का गौरव बढ़ाना है। दीपशिखा के दादा स्व. सीताराम पहलवान की खेल प्रतिभा को परिवार और कोच आज उनमें देखते हैं। उनके पिता देवेंद्र कुमार डाकघर में कार्यरत हैं जबकि उनकी माता कुमारी गीता रवि गृहिणी हैं, जो हमेशा बेटी को नई ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रेरित करती रहती हैं।

देश के प्रथम उपराष्ट्रपति को कौंडिणिया ने किया नमन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : कौंडिणिया पब्लिक स्कूल झुमरी तिलैया के प्रांगण में महान शिक्षक, दार्शनिक और शिक्षाविद भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया गया। इस मौके पर स्कूल के अध्यक्ष सह रिटायर्ड आईपीएस ऑफिसर श्री राजीव रंजन सिंह सीईओ विक्रांत सिंह, प्राचार्य संजय सिंहा उप प्राचार्या सुमन सिंह,सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का आगाज अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह, प्राचार्य संजय सिंहा तथा सीईओ विक्रांत सिंह के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने महान दार्शनिक डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित की। कार्यक्रम की एंकरिंग संयुक्त रूप से कक्षा ६ की छात्रा अंजलि तथा छात्र अंकुश ने की। इस मौके पर उपस्थित तमाम शिक्षक शिक्षिकाओं एवं छात्रों को संबोधित करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिनके बारे में कुछ भी कहना मानो सूरज को दीपक दिखाने के समान है। आगे उन्होंने कहा कि देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक महान शिक्षक, विद्वान और राजनेता थे, जिन्होंने अपने जीवन को शिक्षा और समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने कहा कि शिक्षक दिवस के अवसर पर, हम अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करते हैं। शिक्षक हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे हमें ज्ञान, कौशल और मूल्यों की शिक्षा देते हैं और हमें एक बेहतर इंसान बनाने में मदद करते हैं। उन्होंने शिक्षक दिवस के अवसर पर, सभी छात्र-छात्राओं से कहा कि कि वे अपने शिक्षकों का सम्मान करें और उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाएं। शिक्षकों के बिना, हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं । प्राचार्य संजय सिन्हा ने अपने संबोधन में शिक्षक की महता पर प्रकाश डालते हुए सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। आगे उन्होंने कहा कि शिक्षक छात्र ,समाज और राष्ट्र के निर्माण में जो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं उसका कोई मोल नहीं है और नहीं दुनिया के किसी कीमती वस्तु से हम इस मोल की कीमत चुका सकते हैं।

जमीन विवाद में दो गुटों की भिड़ंत, पुलिसकर्मी पर हमला, पत्रकारों से भी बदसलूकी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चास मुफ्फसिल थाना क्षेत्र में शुक्रवार को जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई। पुराने विवाद को लेकर हुए इस संघर्ष में पुलिस को भी निशाना बनाया गया। सूत्रों के अनुसार, शर्मा और गोराई परिवार के बीच जमीन को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा है। बताया गया है कि इस मामले में कोर्ट में सिविल सूट भी लंबित है। इसके बावजूद दोनों गुट शुक्रवार को संबंधित भूखंड पर पहुंचे और काम करने लगे, जिसके बाद विवाद बढ़ गया। सूचना मिलते ही चास मुफ्फसिल थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने दोनों पक्षों को समझाने की कोशिश की, लेकिन इसी दौरान दोनों गुट आपस में भिड़ गए और पुलिस पर भी हमला कर दिया। इस क्रम में सब-इंस्पेक्टर मकसूद आलम गंभीर रूप से घायल हो गए। उनके सिर पर चोट आई और वर्दी भी फाड़ दी गई। घटना की पुष्टि करते हुए चास एसडीपीओ प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस टीम पर हमला किया गया है। आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करने की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। साथ ही पूरे मामले में प्राथमिकी दर्ज की जा रही है। इधर, मौके पर कवरेज करने पहुंचे कुछ पत्रकारों ने आरोप लगाया कि पुलिस ने वीडियो बनाने से रोका और एक सब-इंस्पेक्टर ने उनके साथ बदसलूकी भी की।

मंजुला शर्मा मेमोरियल एकेडमी में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जयंती धूमधाम से मनाई गई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

डोमचांच : शिक्षा, संस्कार और कृतज्ञता से ओतप्रोत वातावरण में शुक्रवार को मंजुला शर्मा मेमोरियल एकेडमी में महान दार्शनिक, विद्वान, शिक्षक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती धूमधाम और श्रद्धा के साथ मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगीत से हुआ। इसके पश्चात विद्यालय चेयरमैन प्रो. डॉ. के.पी. शर्मा, प्रख्यात शिक्षाविद् राम प्रवेश पांडेय तथा सभी शिक्षकों ने डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर पूरा परिसर गुरु-भक्ति और सम्मान की भावना से सराबोर हो उठा। चेयरमैन प्रो. डॉ. के.पी. शर्मा ने अपने संबोधन में कहा–शिक्षक वह दीपक हैं जो स्वयं जलकर दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाते हैं। डॉ. राधाकृष्णन का जीवन हमें यह सिखाता है कि शिक्षा केवल पुस्तक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र की उन्नति का मार्ग है। विद्यालय निदेशक रजनीश शर्मा ने अपने संदेश में कहा–शिक्षक ही बच्चों के सपनों को आकार देते हैं। उनका धैर्य, परिश्रम और समर्पण ही भविष्य के भारत की नींव है। यदि विद्यार्थी राष्ट्र का कर्णधार हैं तो उनके निमार्ता हमारे शिक्षक हैं। शिक्षाविद् राम प्रवेश पांडेय ने अपने विचार रखते हुए कहा- डॉ. राधाकृष्णन का जीवन ज्ञान और संस्कार का अद्वितीय संगम था। हमें उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर शिक्षा को केवल रोजगार नहीं बल्कि जीवन मूल्यों से जोड़ना होगा। इस अवसर पर ए.के. पांडेय और शिव कुमार ने भी सभा को संबोधित करते हुए शिक्षक-छात्र संबंध और शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला।

राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित शिक्षकों का रोटरी क्लब कोडरमा ने किया सम्मान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : शिक्षक दिवस के अवसर पर रोटरी क्लब कोडरमा के द्वारा गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन समारोह का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जिले के 20 शिक्षकों को सम्मानित किया गया राष्ट्रगान से कार्यक्रम की शुरूआत की, कार्यक्रम की परियोजना निदेशक सुधा शर्मा ने आज के कार्यक्रम की रूपरेखा को प्रस्तुत किया सहयोग प्रदान करने के लिए अध्यक्ष सचिव एवं रोटेरियन अजय अग्रवाल का धन्यवाद दिया मुख्य अतिथि डॉक्टर जुगल किशोर प्रसाद विशिष्ट अतिथि केटीपीएस सीजेएम मनोज ठाकुर मंच पर आसीन सभी अतिथियों ने मंगलदीप प्रज्वलित किया रोटरी अध्यक्ष संतोष सिन्हा ने अतिथियों को पुष्प गुच्छ भेंट किया अपने स्वागत भाषण में राष्ट्र निर्माण के प्रहरी शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट किया उन्होंने कहा कि शिक्षक ही राष्ट्र के निमार्ता होते हैं उनके बिना ज्ञान का मार्ग अधूरा है रोटरी क्लब कोडरमा सभी शिक्षकों को आज के इस पावन दिनों में नमन करता है पूर्व अध्यक्ष महेश दारूका ने देश में शिक्षकों के योगदान को प्रस्तुत किया और कहा कि शिक्षक बच्चों के नवनिर्माण में माता-पिता के समान होते हैं और बचपन में ही उसे भविष्य के सांचे में ढ़ालते हैं पूर्व अध्यक्ष क्लोरोफिल स्कूल के डायरेक्टर अजय अग्रवाल ने आज के सम्मानित सभी शिक्षकों का क्रमवार परिचय प्रस्तुत किया और उनके अमूल योगदान की चर्चा की मुख्य अतिथि डॉक्टर जुगल किशोर प्रसाद एवं विशिष्ट अतिथि मनोज ठाकुर जी ने रोटरी क्लब कोडरमा के शिक्षक सम्मान समारोह कार्यक्रम की प्रशंसा की और कहा कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों के योगदान को नहीं भूलाया जा सकता है शिक्षक ही बच्चों को परिवार समाज और राष्ट्र के लिए संस्कारित करते हैं एक माता-पिता की तरह बच्चों को संभालने का काम करते हैं सभी सम्मानित शिक्षकों को रोटरी अध्यक्ष संतोष सिन्हा एवं पदाधिकारी के द्वारा प्रतीक चिन्ह मोमेंटो एवं अंग वस्त्र पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया पब्लिक रिलेशन के डायरेक्टर सह मीडिया प्रभारी नवीन जैन ने कहा कि रोटरी क्लब कोडरमा शिक्षक दिवस के पावन दिन पर इस देश के अमूल्य धरोहर सभी शिक्षकों के प्रति वंदन नमन ज्ञापित करता है धन्यवाद ज्ञापन सचिव संदीप सिन्हा ने किया और अपना बहुमूल्य समय देने के लिए शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की मौके पर रोटरी के पूर्व अध्यक्ष सुरेश जैन कैलाश चौधरी सुनीता पांडे आईपीपी अमित कुमार रोटेरियन प्रमोद सर सुभाष मोदी सुरेश सेठी कमल सेठी प्रेसिडेंट इलेक्ट नवीन आर्य आरती आर्य गोपाल शराफ एसके पाठक दीपक छाबड़ा आदि लोग उपस्थित थे

संक्षिप्त खबरें

आदर्श विद्या मंदिर तिलोकरी में शिक्षक दिवस का किया गया आयोजन

जयनगर (कोडरमा) : प्रखंड के अंतर्गत संचालित आदर्श विद्या मंदिर तिलोकरी में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम विद्यालय के प्राचार्य नीलकंठ बरनवाल ने डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर मालार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की, तत्पश्चात सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया।इस अवसर पर नीलकंठ बरनवाल ने भारत को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में किए गए उनके योगदानों की चर्चा करते हुए कहा कि आज भारत में जो भी शिक्षा के बड़े संस्थान हैं, उन्हें गढ़ने में राधाकृष्णन का बहुत योगदान है। उपप्राचार्य शंभू पाण्डेय ने उनके सादे जीवन की चर्चा की और उनकी सरलता को जीवन में उतारने की जरूरत पर बल दिया। इस अवसर पर विकाश पांडेय, रामकृष्ण शर्मा विजय पासवान शिव पूजन दास राजकुमार यादव सीताराम यादव कैलाश राणा सुनील यादव संदीप मोदी अंजू देवी गायत्री देवी संतोषी देवी राम लखन यादव मुकेश शर्मा रंजीत रजक ममता देवी ध्रुव यादव चंदन साव रेखा देवी मालती देवी आदि उपस्थित रहे।

प्रतिबंधित मांस ले जाते एक युवक को मुर्कमनाय के ग्रामीणों ने धर दबोचा

मरकच्चो : मरकच्चो थाना क्षेत्र के मुर्कमनाय में प्रतिबंधित मांस को ले जाते एक युवक को ग्रामीणों ने गुरुवार की शाम धर दबोचा। प्राप्त जानकारी अनुसार युवक मुर्कमनाय टांड़ से होते हुए मुर्कमनाय गांव की ओर जा रहा था। इस दौरान सड़क पर खेल रही एक बच्ची को मोटरसाइकिल संख्या बीआर 27 भी 4433 से टक्कर मारते हुए भाग निकला। घटना के बाद ग्रामीणों ने उसका पीछा किया और मुर्कमनाय तालाब के पास पकड़ लिया।वहीं युवक अपने मोटर साइकिल में 20 केजी प्रतिबंधित मांस लेकर जा रहा था। प्रतिबंधित मांस को देख ग्रामीणों ने इसकी सूचना मरकच्चो थाना को दिए।सूचना मिलते ही मरकच्चो थाना प्रभारी नन्द किशोर तिवारी अपने दल बल के साथ मौके पर पहुंचे और युवक तथा प्रतिबंधित मांस वाला बैग को थाना ले आए। वहीं कड़ाई से पूछताछ करने पर प्रतिबंधित मांस ले जा रहे युवक ने अपना नाम शहजाद कुरैशी उम्र 32 वर्ष पिता सलाहुद्दीन कुरैशी साकिन रजहद अकबरपुर जिला नवादा बिहार के रूप में बताया। इस दौरान युवक ने बताया कि यह कार्य हम और मेरा दोस्त राजा शाह उम्र 19 वर्ष पिता इंतसार शाह साकिन रजहद अकबरपुर जिला नवादा बिहार एक वर्षो से कर रहे हैं। हम दोनों लोग नवादा से सतगांवा, बासोडीह होते हुए गिरिडीह के बलहरा में निकलते हैं। यह रास्ता जंगल का रास्ता है। इसके बाद कोडरमा के जलवाबाद में पहुंचाते हैं। जहां से इसकी बिक्री की जाती है। युवक ने यह भी बताया कि प्रतिबंधित मांस लगभग 20 केजी है और 20 लोगों को प्रति किलो के हिसाब से दिया जाता।

मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने किया कोडरमा न्याय मंडल का निरीक्षण

कोडरमा : झारखंड उच्च न्यायालय रांची के मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान ने कोडरमा न्याय मंडल का निरीक्षण किया । इस दौरान पूरे न्यायालय परिसर का निरीक्षण किया गया। उनके साथ माननीय मुख्य न्यायाधीश की धर्मपत्नी अमनदीप चौहान झारखंड उच्च न्यायालय के महानिबंधक मनोज प्रसाद भी मौजूद थे। इसके पूर्व कोडरमा परिसदन में उनका भव्य स्वागत कोडरमा न्यायमंडल एवं जिला प्रशासन की ओर से किया गया। साथ ही साथ उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर देकर सम्मानित किया गया। कोडरमा न्याय मंडल का निरीक्षण करने के पश्चात वे तिलैया डैम प्रस्थान कर गए। इस क्रम में कोडरमा न्यायमंडल में क्रीज का भी उद्घाटन किया गया माननीय मुख्य न्यायाधीश महोदय ने फीता काटकर क्रीज का उद्घाटन किया गया। मौके पर प्रधान जिला सत्र न्यायाधीश बालकृष्ण तिवारी, उपायुक्त कोडरमा ऋतुराज, प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय अमितेश लाल, जिला जज प्रथम गुलाम हैदर, जिला जज द्वितीय संजय कुमार चौधरी, जिला जज तृतीया राकेश चंद्रा, मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी अमित कुमार वैश, अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी मनोरंजन कुमार, अवर न्यायाधीश तृतीय प्रज्ञा बाजपेई, जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव गौतम कुमार, नाइक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी शिवांगी प्रिया, नमिता मिंज, ज्योत्सना पांडेय, मुंसिफ मिथिलेश कुमार, अपर समाहर्ता पूनम कुजूर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अनिल कुमार सिंह पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय रतिभान सिंह, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी कनक तिर्की सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

सेक्टर 9 बी/सी पटेल चौक में होगा ऐतिहासिक दुर्गा पूजा महोत्सव का हुआ आयोजन

बोकारो : हरला थाना अंतर्गत सेक्टर 9 बी/सी पटेल चौक स्थित श्री श्री दुर्गा पूजा समिति द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी ऐतिहासिक दुर्गा पूजा महोत्सव की तैयारियाँ जोर-शोर से प्रारम्भ हो गई हैं। इसी क्रम में आज बल्ली सह भूमि पूजन संपन्न हुआ। समिति के अध्यक्ष रवि शंकर ने बताया कि इस बार का पूजा आयोजन बेहद खास रहेगा। पंडाल की चौड़ाई 65 फीट और लंबाई 60 फीट होगी। विशेषता यह है कि इस बार का पूजा पंडाल पचौरा बस्ती की महिलाओं द्वारा हाथ से बांस की चटाइयों से निर्मित किया जा रहा है, जिससे स्थानीय हस्तकला को भी बढ़ावा मिलेगा। सुरक्षा की दृष्टि से समिति ने व्यापक इंतजाम किए हैं। पूरे परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे, वहीं जगह-जगह वालंटियर भी तैनात रहेंगे ताकि श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। स्थानीय लोगों में भव्य आयोजन को लेकर उत्साह का माहौल है और सभी बेसब्री से महोत्सव का इंतजार कर रहे हैं।

एक नजर

शिक्षक सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

सिल्ली : सिल्ली शिक्षक दिवस के अवसर पर गूंज परिवार के तत्वावधान में शुक्रवार को सिल्ली स्थित आजसू पार्टी प्रधान कार्यालय में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व उपमुख्यमंत्री सह आजसू पार्टी प्रमुख सुदेश कुमार महतो, जिप उपाध्यक्ष वीणा चौधरी, आजसू पार्टी के केंद्रीय उपाध्यक्ष प्रवीण प्रभाकर, केंद्रीय संगठन सचिव सह गूंज परिवार के संयोजक जयपाल सिंह, केंद्रीय महासचिव नजरुल हसन हासमी, केंद्रीय सचिव सह प्रवक्ता संजय मेहता समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में अतिथियों ने प्रखंड के 200 से अधिक शिक्षकों को शॉल ओढ़ाकर और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सुदेश महतो ने कहा कि शिक्षकों का असली सम्मान उनके छात्रों की सफलता होती है ।अच्छे को बेहतर बनाना और बिगड़े को सुधारना शिक्षकों के हाथ में होता है, जिसे शिक्षक बखूबी निभा रहे हैं। ऐसे में उनका सम्मान भी जरूरी है। मौके पर विभिन्न स्कूलों के प्रतिनिधियों के अलावा समाज के अलग-अलग तबके से जुड़े लोग भी कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन सुनील सिंह ने किया।

जश्ने ईद मिलादुन्नबी की निकाली गई जुलूस नारों से गूंज उठा शहर

लोहरदगा : झारखंड के लोहरदगा शहर में पैगंबर-ए-इस्लाम हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद की खुशी में शुक्रवार को जश्ने ईद मिलादुन्नबी पूरे जोशो-खरोश और श्रद्धा के साथ मनाया गया। अंजुमन इस्लामिया की अगुवाई मेंतड़के सुबह परचमकुशाई की रस्म अदायगी के बाद जब जुलूस-ए-मोहम्मदी निकला, तो हर गली, हर चौक-चौराहा नारे तकबीर और ѕमरहबा या मुस्तफा की सदाओं से गूंज उठा। लोहरदगा शहरी क्षेत्र सहित कई गांवों से लोग बड़ी तादाद में जुटे। बच्चे हों या नौजवान और बुजुर्ग हर कोई पैगंबर-ए-इस्लाम से मोहब्बत जताने सड़कों पर उतरा। जुलूस के दौरान जगह-जगह स्वागत द्वार सजाए गए थे। वक्ताओं ने कहा कि ईद मिलादुन्नबी भाईचारे और मोहब्बत का पैगाम देती है, जिसे अमल में लाना ही असली ईबादत है ।जुलूस के समापन पर फातिहा ख्वानी की गई और मुल्क की सलामती, कौम की तरक्की और अमन की दुआएं मांगी गईं। दीवानों ने हाथ उठाकर अल्लाह से दुआ की कि मुल्क में मोहब्बत, भाईचारा और इंसानियत हमेशा कायम रहे। पूरा आयोजन शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ। जुलूस-ए-मोहम्मदी का यह नजारा हर गांव में मोहब्बत और एकता की मिसाल पेश करता नजर आया। इस दौरान जिला प्रशासन की ओर से सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे।

कच्ची सड़क पर धान रोपकर, ग्रामीणों ने जताया आक्रोश

पश्चिमी सिंहभूम : आजादी के 79 वर्षों बाद भी झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में पताहातु गांव में पक्की सड़क न बनने के कारण ग्रामीणों ने शुक्रवार को कच्ची सड़क पर ही धान रोपकर आक्रोश व्यक्त किया। यह विरोध प्रदर्शन जिला परिषद सदस्य माधव चंद्र कुंकल के नेतृत्व में किया गया। कुंकल ने कहा कि कच्ची सड़क होने के कारण आए दिन दुर्घटना होती रहती है। यह समस्या बरसात के मौसम में और अधिक बढ़ जाती है, जिससे यहां समय पर एंबुलेंस भी नहीं पहुंच पाती है और मरीज को खाट के माध्यम से मुख्य सड़क तक पहुंचाया जाता है। वर्षों से इस समस्या की मार झेल रहे ग्रामीणों में आक्रोश है जबकि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के गांव में सड़कें मात्र 10 दिनों में बन जाती हैं, जबकि यहां की जनता अब भी बुनियादी सुविधाओं से वंचित है।

तिरुलडीह और चौड़ा में ईद-मिलादुन्नबी पर निकाला गया जुलूस-ए-मुहम्मदी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़: शुक्रवार को पैगंबर-ए-इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यौम-ए-पैदाइश (जन्मदिवस) के अवसर पर जिले भर में ईद मिलादुन्नबी का जश्न अकीदत व एहतराम के साथ मनाया गया। कुकड़ू प्रखंड के तिरुलडीह, चौड़ा और शीशी गांव से जुलूस-ए-मुहम्मदी निकाला गया, जिसमें भारी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग शामिल हुए। जुलूस की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर प्रशासन की ओर से पुख्ता इंतजाम किए गए थे। तिरुलडीह थाना की पुलिस के साथ-साथ अतिरिक्त पुलिस बल और दंडाधिकारी भी प्रतिनियुक्त किए गए थे। तिरुलडीह अंजुमन इस्लामिया कमिटी द्वारा निकाले गए जुलूस का नेतृत्व सेक्रेटरी असगर अली अंसारी ने किया। जुलूस तिरुलडीह रेलवे स्टेशन के समीप मुस्लिम बस्ती से प्रारंभ होकर नूरी मस्जिद होते हुए चौड़ा गांव तक पहुंचा, जहां चौड़ा गांव से आए जुलूस के साथ मिलकर पुनः नूरी मस्जिद में समाप्त हुआ। इस दौरान तिरुलडीह और चौड़ा गांव में जगह-जगह लंगर का भी लगाया गया था। इस जुलूस की एक खूबसूरती यह रही कि इसमें इस्लामी झंडों के साथ-साथ तिरंगा झंडा भी लहराया गया। यह नजारा गंगा-जमनी तहजीब की मिसाल पेश करता रहा। भीड़ में हर कोई अमन, मोहब्बत और भाईचारे के पैगाम को महसूस कर रहा था। जुलूस के दौरान लोगों ने हुजूर की आमद मरहबा, आका की आमद मरहबा, हिंदुस्तान जिंदाबाद और इस्लाम जिंदाबाद जैसे नारों से माहौल को गूंजा दिया। साथ ही मुल्क की तरक्की और देश में अमन-चैन की दुआ भी मांगी गई।

यह दिन इंसानियत का संदेश देने वाला है : कारी समीऊल्लाह

नूरी मस्जिद तिरुलडीह के पेश-ए-इमाम कारी समीऊल्लाह ने कहा कि आज से 1500 साल पहले हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इंसानियत और भाईचारे का पैगाम लेकर दुनिया में तशरीफ लाए थे। उन्होंने इंसानों को जीने का तरीका सिखाया और समाज में हर शख्स के हक व फर्ज. बताए। आज का दिन हमें उनके बताए रास्ते पर चलने और समाज में मोहब्बत, इंसाफ और अमन फैलाने की याद दिलाता है।

सरिया में एक रात में चार घरों से सात लाख की चोरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया : सरिया थाना क्षेत्र के बड़की सरिया में चोरी की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। बीती रात चोरों ने एक ही रात में चार घरों को निशाना बनाकर लगभग सात लाख रुपये की संपत्ति चुरा ली। इस घटना में नगदी, सोने और चांदी के जेवरात शामिल हैं। पीड़ितों में बड़की सरिया निवासी धनेश्वर मंडल के घर से ढाई लाख रुपये नगद और सोने-चांदी के जेवरात सहित कुल पांच लाख रुपये की संपत्ति, गोविंद स्वर्णकार के घर से 15 हजार रुपये नगद, सहदेव मंडल के घर से 15 हजार रुपये नगद और जेवरात, तथा संतोष मंडल के घर से 5 हजार रुपये नगद और सोने-चांदी के जेवरात सहित 50 हजार रुपये की संपत्ति चोरी हुई। पीड़ितों ने बताया कि चोरों ने घर के छत के दरवाजे तोड़कर अंदर प्रवेश किया और पूरी घटना को अंजाम दिया। सुबह नींद खुलने पर इस चोरी का पता चला। सूचना मिलते ही सरिया पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन शुरू कर दी है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है और चोरों की तलाश में जुटी है। इस घटना से इलाके में दहशत का माहौल है, और लोग पुलिस से त्वरित कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

हजारीबाग रोड स्टेशन में महिला यात्री का पर्स छीनने वाला चोर गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया : वरीय मंडल सुरक्षा आयुक्त धनबाद के निर्देश पर हजारीबाग रोड आरपीएफ पोस्ट के निरीक्षक प्रभारी विश्वनाथ कुमार ने यात्री सामानों की चोरी रोकने के लिए सघन अभियान चलाया। इसके तहत स्टेशन पर गश्त बढ़ाई गई, जिसके परिणामस्वरूप शुक्रवार सुबह करीब 09:50 बजे हजारीबाग रोड स्टेशन के प्लेटफॉर्म 3/4 पर एक संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ा गया। आरपीएफ की गश्ती टीम ने एफओबी के पास एक व्यक्ति को लेडीज पर्स के साथ भागते देखा। पूछताछ में उसने अपना नाम अली हुसैन (45 वर्ष), निवासी मधवारी, थाना सरिया, जिला गिरिडीह, झारखंड बताया और दावा किया कि पर्स उसकी बहन का है। तभी पीड़ित महिला यात्री निकिता कुमारी ने पर्स को अपना बताया और आरोप लगाया कि अली हुसैन ने ट्रेन नंबर 12988 में चढ़ते समय उसका पर्स छीन लिया। पर्स में एक रियलमी एंड्रॉयड फोन और कुछ कॉस्मेटिक सामान थे। निकिता ने बताया कि वह अपने पिता के साथ हजारीबाग रोड से सियालदह जाने के लिए ट्रेन का इंतजार कर रही थी। इस दौरान अली हुसैन ने उनके पिता से परिचय बनाकर भरोसा जीता और ट्रेन में चढ़ते समय पर्स छीनकर भाग गया। पूछताछ में अली हुसैन ने अपराध स्वीकार किया। आरपीएफ ने पर्स, मोबाइल और कॉस्मेटिक सामान जब्त कर अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया। पीड़ित निकिता कुमारी के लिखित शिकायत पत्र के आधार पर जीआरपी गोमो में कांड संख्या 23/25, धारा 304 बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया। जांच का जिम्मा एसआई नाथू प्रसाद को सौंपा गया है। आरपीएफकी इस त्वरित कार्रवाई से यात्रियों में सुरक्षा का भरोसा बढ़ा है।

भारत श्री अवार्ड से सम्मानित विभूतियों का पूर्व सांसद एवं पूर्व मंत्री ने किया सम्मान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : नामकुम कुशीनगर में हुए अंतरराष्ट्रीय मिलन समारोह में एक्यूप्रेशर, योगा,नेचुरोपैथी इत्यादि के क्षेत्र में सम्मान पाने वाले डॉक्टर मधुसूदन पांडे, डॉक्टर बलराम महतो,अनुज कुमार सिंह को देश के पूर्व रक्षा राज्य मंत्री व पूर्व सांसद रांची लोक सभा माननीय सुबोध कांत सहाय एवं झारखण्ड सरकार के पूर्व मंत्री गिरिनाथ सिंह द्वारा उनके आवास पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर देश के रक्षा राज्य मंत्री व रांची लोकसभा के सांसद सुबोध कांत सहाय जी ने कहा कि इन विभूतियों को हार्दिक बधाई जिन्होंने झारखंड ही नहीं बल्कि देश का नाम रौशन किया है। एक्यूप्रेशर परिषद झारखंड शाखा टाटीसिलवे के सेंटर कार्यालय के एक्यूप्रेशर से संबंधित विभिन्न समस्याओं के लिए मिलजुलकर बात कर समस्याओ का समाधान निकाला जाएगा। विधानसभा में भी पूर्व की तरह ही कार्य लागू करने, प्रत्येक जिले में इसकी इकाई स्थापित हो इसका हम भरपूर प्रयास करेंगे। आप सभी वीर विभूतियों को हम अपने तरफ से मेडल देकर सम्मानित करेंगे।इस अवसर पर माननीय पूर्व सांसद सुबोध कांत सहाय, पूर्व मंत्री गिरिनाथ सिंह, कोंग्रेस नेता सुनील सहाय, पत्रकार सुरेंद्र ठाकुर,पंचायत उपाध्यक्ष किसन नायक, पंचायत समिति सदस्य अरविन्द लोहरा, महिला नेत्री अर्चना मिश्रा इत्यादि गणमान्य लोग उपस्थित थे। परिषद के सम्मानित विभूतियों के द्वारा पूर्व सांसद सुबोध कांत सहाय रांची लोक सभा पूर्व मंत्री गिरिनाथ सिंह को पारंपरिक पगड़ी फूलमाला एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

लायलम में दो असहाय दिव्यांग को दिया गया स्मार्ट स्टीक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : लायलम पंचायत के एक अत्यंत सराहनीय पहल के तहत, दो नेत्रहीन व्यक्तियों – एक वृद्धा सुमोला सिंह और कक्षा 10 के छात्र समीर महतो – को आधुनिक तकनीक से लैस स्मार्ट ब्लाइंड स्टिक प्रदान की गई। यह सहायता श्रीसरणया फाउंडेशन और टॉर्च आईटी कंपनी के सहयोग से दी गई।इस प्रयास के पीछे पंचायत की सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता दीपाली का विशेष योगदान रहा। उन्हें जानकारी मिली कि सुमोला देवी और समीर महतो जन्म से दृष्टिहीन हैं और अपने दैनिक कार्यों के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। परिजनों के कार्य पर शहर चले जाने के कारण, ये दोनों काफी कठिन परिस्थितियों में जीवन व्यतीत कर रहे थे।स्थिति की गंभीरता को समझते हुए, श्रीसरणया फाउंडेशन ने टॉर्च आईटी कंपनी के माध्यम से दोनों को एक-एक स्मार्ट स्टिक उपलब्ध कराई, जिससे वे अपने कार्य स्वतंत्र रूप से कर सकेंगे और कहीं आने-जाने के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।स्मार्ट स्टिक का वितरण दोनों लाभार्थियों को उनके घर पहुंचकर दिया गया। इस अवसर पर पर्नेंदु आचार्य, धवल सेठ, विकास मिश्रा और सामाजिक कार्यकर्ता दीपाली उपस्थित रहे।यह पहल एक प्रेरणादायक उदाहरण है कि किस प्रकार तकनीक और सामाजिक संवेदनशीलता मिलकर जरूरतमंदों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

केसवारी में ईद-मिलादुन्नबी पर निकला मोटरसाइकिल जुलूस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया : शुक्रवार को सरिया प्रखंड के केसवारी गांव में ईद-मिलादुन्नबी का पर्व श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर हजारों की संख्या में लोग एकत्र हुए और पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य मोटरसाइकिल जुलूस निकाला गया। यह जुलूस केसवारी गांव से शुरू होकर माधवाडीह पचंबा, बेहरवाटांड, और सरिया बाजार होते हुए बागोडीह चौक तक पहुंचा। इसके बाद जुलूस वापस सरिया बाजार के रास्ते केसवारी लौटा, जहां केसवारी चौक पर सलातो सलाम पढ़ा गया और देश-दुनिया में अमन व शांति की दुआएं मांगी गईं। जुलूस में शामिल लोग इस्लामी झंडे और तिरंगे को लहराते हुए नारे जैसे ह्लनबी की आमद मरहबाह्न और ह्ललब्बैक या रसूल अल्लाहह्न बुलंद करते रहे। जगह-जगह लोगों ने जुलूस का स्वागत किया ।मस्जिदों और घरों को झालरों व रोशनी से सजाया गया था, जिससे पूरा क्षेत्र उत्सवमय हो गया। पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए, जिससे जुलूस शांतिपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ। पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब, जिन्हें इस्लाम धर्म का संस्थापक और अंतिम नबी माना जाता है, का जन्म 570 ईस्वी में सऊदी अरब के मक्का शहर में हुआ था। उनका पूरा नाम हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह और माता का नाम बीबी आमिना था। उनके जन्म से पहले ही उनके पिता का निधन हो गया था, और छह वर्ष की आयु में उनकी माता भी चल बसीं। इसके बाद वे अपने दादा अब्दुल मुत्तलिब और फिर चाचा अबू तालिब की देखरेख में पले-बढ़े। पैगंबर साहब का जीवन सादगी, दया, और मानवता की मिसाल है। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे बुतपरस्ती, गुलामी, और औरतों के साथ भेदभाव को खत्म करने का प्रयास किया। उन्होंने इंसानियत, समानता, और भाईचारे का संदेश दिया। अल्लाह ने उन्हें पवित्र कुरान के माध्यम से मानवता को सही मार्ग दिखाने का दायित्व सौंपा, जो इस्लाम का पवित्र ग्रंथ है। उनकी शिक्षाओं में पांच मुख्य सिद्धांत शामिल हैंः शहादा (एकेश्वरवाद में विश्वास), सलात (पांच वक्त की नमाज), जकात (दान), सौम (रमजान के रोजे), और हज (मक्का की तीर्थयात्रा)। पैगंबर साहब ने सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कई सुधार किए। उन्होंने औरतों को सम्मान और उनके अधिकार दिलाए, गरीबों और जरूरतमंदों की मदद को प्राथमिकता दी, और युद्ध के दौरान भी फसलों और पेड़ों को नष्ट करने से मना किया। उनकी शिक्षाएं आज भी दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। ईद-मिलादुन्नबी, जिसे बारावफात भी कहा जाता है, इस्लामी कैलेंडर के रबी-उल-अव्वल माह की 12वीं तारीख को मनाया जाता है। यह दिन पैगंबर साहब के जन्म और उनकी शिक्षाओं को याद करने का अवसर है। सुन्नी समुदाय इसे 12वीं तारीख को मनाता है, जबकि शिया समुदाय 17वीं तारीख को इस पर्व को मनाता है। कुछ लोग इस दिन को उनकी वफात (मृत्यु) के शोक के रूप में भी याद करते हैं, क्योंकि मान्यता है कि इसी दिन उनका निधन हुआ था।

संक्षिप्त खबरें

शिक्षक दिवस पर एसबीयू में कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अनगड़ा : शिक्षक दिवस पर सरला बिरला विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर माननीय राज्यसभा सांसद डॉ. प्रदीप वर्मा ने अपने संबोधन में शिक्षकों और छात्रों के संबंधों को परिभाषित करते हुए शिक्षकों को अपने छात्रों के ज्ञानवर्धन के मार्ग पर सतत दस्तक देने का सुझाव दिया। इस संदर्भ में उन्होंने प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू का उदाहरण भी दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षक बेहतर समय प्रबंधन, चरित्र निर्माण एवं अन्यान्य गुणों के माध्यम से छात्रों को कई राह दिखा सकते हैं। विवि के माननीय कुलपति प्रो सी जगनाथन ने शिक्षक दिवस पर गुरुजनों को शुभकामनाएं देते हुए अपने कर्तव्य एवं दायित्व से विद्यार्थियों को संकल्प सिद्धि का मार्ग अपनाने की सलाह दी। आज के युग में नवाचार के क्षेत्र में आगे बढ़ने की भी बात उन्होंने अपने संक्षिप्त संबोधन में कही। कार्यक्रम में एसबीयू के विभिन्न विभागो के शिक्षकों को पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव प्रो एस बी डांडिन समेत तमाम शिक्षकगण और शिक्षकेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे। विवि के माननीय प्रतिकुलाधिपति श्री बिजय कुमार दलान और माननीय महानिदेशक प्रो गोपाल पाठक ने शिक्षक दिवस के अवसर पर विवि परिवार को शुभकामना संदेश प्रेषित किया है।

डॉ मयंक मुरारी की पुस्तक 'शून्य की झील में प्रेम' का आज लोकार्पण

रांची : प्रदेश के विचारक और लेखक डॉ मयंक मुरारी का काव्य संग्रह शून्य की झील में प्रेम का आज रांची प्रेस क्लब में संध्या चार बजे लोकार्पण होगा। यह किताब राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित होकर आयीं है। डॉ मयंक मुरारी की यह तीसरी काव्य संग्रह है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रभात खबर के पूर्व संपादक अनुज सिन्हा होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुमार ब्रजेंद्र करेंगे। इसके अलावा रश्मि शर्मा, कुमारी उर्वशी और अनामिका प्रिया इस किताब पर अपना विचार रखेगी। साहित्य मंच शब्दकार के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का संचालन राकेश रमण करेंगे। डा मयंक मुरारी एक विचारक और सक्रिय लेखक हैं। वह सामाजिकः व्यक्तिगत विकास के लिए लिखते और काम करते हैं। वह भारत के ज्ञान प्रणाली के आंतरिक मूल्य और अंतर्निहित पहलू पर सोचते हैं और चिंतन करते हैं। उन्होंने 30 सालों में अभी तक 20 किताबें और 700 से अधिक रिपोर्ट, भारतीय समाचार पत्र और पत्रिका में लिख चुके हैं। इन कार्यों के कारण उन्हें कई अवार्ड और पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वह उषा मार्टिन में महाप्रबंधक सीएसआर और पीआर के रूप में काम कर रहे हैं, जहां पिछले 15 सालों से गांवों के टिकाऊ विकास के प्रति संकल्पित है। वह हमारे समाज की सामूहिक जागरूकता के लिए विभिन्न मंचों से व्याख्यान भी देते है।

कुड़मी समाज के लोग दिल्ली जंतर मंतर में शामिल होने के लिए मुरी स्टेशन पहुंचे

सिल्ली : सिल्ली 5 सितंबर कुड़मी/कुरमी (महतो) समाज को को अनुसूचित जनजाति में शामिल एवं कुड़माली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांगों को लेकर मुरी जंक्शन से दिल्ली के जंतर- मंतर कुच कर रहे कुडमी समाज के अगुवा रघुनाथ महतो, शिशुपाल महतो,कृष्णा महतो, राजेंद्र महतो, चेत लाल महतो, गयाराम महतो, नंदलाल महतो, लक्ष्मण महतो, कृर्ति चंद महतो, गौरी महतो, गंगाराम महतो, अभिषेक कुमार महतो, क्षेत्र मोहन महतो एवं समाज के सैकड़ो लोग शामिल हुए जो आगामी 6 सितंबर 2025 को जंतर मंतर में काला दिवस एवं अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन करेंगे।

शिक्षक दिवस समारोह में कई रंगारंग कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पटमदा : शिक्षक दिवस के अवसर पर वीणापाणि विद्या मंदिर कटीन में आयोजित समारोह में छात्रों और शिक्षकों ने जमकर मस्ती की। इस दौरान छात्रों ने अपने शिक्षकों के लिए प्रेरणादायक भाषण दिए, आकर्षक नृत्य पेश किए और कविताओं का पाठ किया। समारोह का मुख्य आकर्षण था टीचर्स के बीच पेनल्टी शूटआउट गेम, जिसमें सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम कई मुख्य बाते प्रस्तुत किया गया जिसमें प्रेरणादायक भाषण : छात्रों ने अपने शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए प्रेरणादायक भाषण दिए। आकर्षक नृत्य : छात्रों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए, जिसमें नृत्य और संगीत का अद्भुत संगम था। कविताओं का पाठ : छात्रों ने शिक्षकों के सम्मान में कविताओं का पाठ किया। पेनल्टी शूटआउट गेम : टीचर्स के बीच पेनल्टी शूटआउट गेम का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने अपनी खेल भावना का प्रदर्शन किया।

सिल्ली मुरी में धूम धाम से ईद मिलदुन नबी मनाया गया

सिल्ली : मुरी 5 सितंबर को हुजूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बिलादत का जश्न मनाया गया। जिसको ईद मिलादुन्नबी कहा जाता है जिसमें मुरी कलुवाडीह एवं सुलूमजुड़ी के लोग मिलके अमन व शकुन के साथ जूलूस निकाला, जिसमें शिरकत किये सिल्ली थाना प्रभारी दिनेश कुमार ठाकुर मुरी ओ पी प्रभारी गगन कुमार ठाकुर अल्पसंख्यक कांग्रेस कमेटी के रांची जिला महासचिव रमजान अंसारी, मुरी मस्जिद कमेटी का सेक्रेटरी जनाब अब्दुल मजीद सदर, मंसूर अली, शहजादा अहमद, अमजद खान, मजहर, जावेद, फिरोज, कलवाडीह मस्जिद कमेटी के सचिव फारुक अंसारी, उस्मान अंसारी, हाशिम अंसारी और बहुत सारे आवाम ने शिरकत करके के हुजूर का मिलाद मनाया।

भारत का तकनीकी 'स्व'

21वीं सदी का वैश्विक परिदृश्य हमें स्पष्ट रूप से यह संदेश दे रहा है कि वर्तमान दुनिया में असली शक्ति तकनीकी श्रेष्ठता में है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, सेमीकंडक्टर और अंतरिक्ष अनुसंधान ऐसे क्षेत्र हैं जो किसी भी देश की वैश्विक स्थिति और उसकी रणनीतिक स्वतंत्रता का निर्धारण करते हैं। भारत ने हाल ही में विक्रम-3201 चिप के विकास के साथ इस दिशा में ऐतिहासिक कदम उठा लिया है। यह चिप सिर्फ तकनीकी उपलब्धि नहीं, इससे भी आगे की राह में ये आत्मनिर्भर भारत के 'स्व' का जीवंत प्रमाण है। विक्रम-3201, जिसे इसरो की सेमीकंडक्टर लैब ने तैयार किया है, भारत की पहली पूर्ण स्वदेशी 32-बिट प्रोसेसर चिप है। यह किसी साधारण इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के लिए नहीं है, यह भारत के प्रक्षेपण यान यानी लॉन्च व्हीकल्स के लिए डिजाइन की गई है। अंतरिक्ष में जाने वाले यान को ऐसे उपकरणों की आवश्यकता होती है जो 55 डिग्री सेल्सियस से लेकर 125 डिग्री सेल्सियस तक के चरम तापमान में बिना विफल हुए काम कर सकें। विक्रम-3201 ने इस चुनौती को पूरा करके यह संदेश दे दिया है कि भारत अब उस तकनीकी स्तर पर पहुँच चुका है, जहाँ वह स्वयं अपने लिए समाधान खोजने में सक्षम बन रहा है। इस उपलब्धि का महत्व और भी अधिक इसलिए है क्योंकि यह हमें विदेशी तकनीक पर निर्भरता से मुक्त करेगा। अब तक भारत अपने रॉकेट लॉन्च और अंतरिक्ष मिशनों में पश्चिमी देशों या अन्य तकनीकी महाशक्तियों पर निर्भर था। कई बार राजनीतिक कारणों से इन देशों ने भारत पर तकनीकी प्रतिबंध भी लगाए। उदाहरण के लिए, 1990 के दशक में जब भारत ने रूस से क्रायोजेनिक इंजन तकनीक लेने की कोशिश की तो अमेरिका ने दबाव बनाकर इसे रोक दिया। इसी तरह, स्पेस ग्रेड चिप्स और सेमीकंडक्टर तकनीक तक भारत की पहुँच सीमित रही। आज विक्रम-3201 इन सभी अवरोधों का उत्तर है। इससे जुड़ा यह भी एक तथ्य है कि सेमीकंडक्टर उद्योग वैश्विक स्तर पर 600 अरब डॉलर का है, जिसके कि 2030 तक यह 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच जाने का अनुमान है। भारत में 2024-25 तक यह बाजार 45 से 50 अरब डॉलर का आँका गया था, जिसके कि 2030 तक 100 से 110 अरब डॉलर तक पहुँचने की संभावना है। ऐसे में भारत का इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना निश्चित ही बहुत बड़ी उपलब्धि है।

यहाँ यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर भारत इतने वर्षों तक सेमीकंडक्टर उद्योग में पिछड़ा क्यों रहा। 1989 में मोहाली स्थित सेमीकंडक्टर लैब में लगी रहस्यमयी आग ने इस दिशा में भारत के शुरूआती प्रयासों को लगभग धराशायी कर दिया था। इसके अलावा, 1960 के दशक में अमेरिकी कंपनी फेयरचाइल्ड भारत में निवेश करना चाहती थी, किंतु सरकारी नीतिगत अस्पष्टता की वजह से वह अवसर हाथ से निकल गया और कंपनी मलेशिया चली गई।

इसके बाद 2021 में इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएस) की शुरूआत हुई। 2023 में गुजरात के साणंद में भारत के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट को मंजूरी मिली। आज भारत के छह राज्यों गुजरात, असम, उत्तर प्रदेश, पंजाब, ओडिशा और आंध्र प्रदेश में 10 सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है जिन पर 1.6 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हो रहा है। यह निवेश और नीतिगत प्रोत्साहन भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर मानचित्र पर जगह दिलाने की दिशा में निर्णायक है। दुनिया के परिप्रेक्ष्य में देखें तो ताइवान की टीएसएमसी (ताइवान सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी) इस क्षेत्र में सबसे बड़ी कंपनी है। दक्षिण कोरिया की सैमसंग मेमोरी चिप्स में अग्रणी है। अमेरिका की इंटेल और एनवीडिया डिजाइन और एआई चिप्स में वैश्विक दिग्गज मानी जाती हैं। जापान और चीन भी इस उद्योग में मजबूत खिलाड़ी हैं। इन सबके बीच भारत का प्रवेश देर से हुआ है, लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत जिस तेजी से इस क्षेत्र में कदम बढ़ा रहा है, वह आने वाले वर्षों में वैश्विक समीकरण बदल सकता है।

भारत की शक्ति उसकी विशाल युवा जनसंख्या, मजबूत आईटी सेक्टर, और रिसर्च व इनोवेशन की क्षमता है। जब यह क्षमता मजबूत नीति समर्थन और आत्मनिर्भरता की दृष्टि से जुड़ती है तो नतीजे अभूतपूर्व होते हैं। विक्रम-3201 इसका ताजा उदाहरण है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस चिप को "डिजिटल डायमंड" कहा है।

सूडोकु नवताल- 7544

* ☆☆☆☆ सरल

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7543 का हल

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6

भारत की चिप क्रांति : हकीकत की तरफ बढ़ते सपने

डॉ सत्यवान सौरभ

भारत आज उस ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है जहाँ तकनीकी आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक प्रगति का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय गर्व और वैश्विक नेतृत्व की दिशा भी बन गई है। दशकों तक चिप और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में केवल उपभोक्ता के रूप में पहचाने जाने वाला भारत अब निर्माता और आपूर्तिकर्ता बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह परिवर्तन केवल तकनीकी नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और आत्मगौरव का भी प्रतीक है। सेमीकंडक्टर मिशन, वैश्विक सहयोग, और शिक्षा व अनुसंधान में निवेश ने भारत की चिप क्रांति को साकार रूप दिया है।

भारत ने सेमीकंडक्टर निर्माण के क्षेत्र में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए विश्व स्तर पर अपनी तकनीकी पहचान बनाई है। गुजरात और कर्नाटक में चिप पार्क, विदेशी निवेश और शिक्षा संस्थानों की सक्रिय भागीदारी ने इस अभियान को गति दी है। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन 2025 में भारत ने सुरक्षा, संपर्क और अवसर के तीन स्तंभों पर बल देकर तकनीक को साझा भविष्य का आधार बताया। यह चिप क्रांति न केवल आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर रही है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, नवाचार और आत्मगौरव की नई उड़ान भी भर रही है।

भारत आज उस ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है जहाँ सपने नये यथार्थ का रूप ले चुके हैं। दशकों तक जिस देश को तकनीक के क्षेत्र में उपभोक्ता भर समझा जाता था, वही देश आज निर्माता, आपूर्तिकर्ता और नवप्रवर्तक बनने की राह पर तेजी से बढ़ रहा है। सेमीकंडक्टर और चिप निर्माण की दिशा में भारत के प्रयास इसी परिवर्तन की सबसे सशक्त गवाही देते हैं। यह केवल तकनीकी विकास का संकेत नहीं है बल्कि राष्ट्रीय आत्मगौरव, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की उड़ान भी है।

चिप अथवा सेमीकंडक्टर आज के युग की सबसे अनिवार्य धुरी है। बीसवीं शताब्दी में तेल ने जैसे विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था को संचालित किया था, उसी प्रकार इक्कीसवीं शताब्दी में चिप वैश्विक शक्ति संतुलन का आधार बन चुकी है। आधुनिक जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। मोबाइल फोन, कंप्यूटर, स्मार्ट यंत्र, वाहन, रेल, हवाई जहाज, रक्षा उपकरण, उपग्रह, स्वास्थ्य सेवाओं के उन्नत यंत्र, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोट तक-हर क्षेत्र में चिप की अनिवार्यता स्पष्ट दिखाई देती है। इसीलिए जो राष्ट्र इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर और सशक्त है, वही आने वाले समय में विश्व की राजनीति और अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

भारत की स्थिति लंबे समय तक इस क्षेत्र में कमजोर रही। भारी पूंजी निवेश, लगातार ऊर्जा और जल संसाधनों की आवश्यकता, प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी और अनुसंधान की उपेक्षा जैसे कारणों से भारत पिछड़ता रहा। चीन, ताइवान, अमेरिका और कोरिया जैसे देशों ने इस स्थिति का लाभ उठाकर वैश्विक बाजार पर प्रभुत्व कायम किया और भारत को केवल एक विशाल उपभोक्ता बाजार के रूप में देखा जाने लगा। किन्तु राष्ट्रों के जीवन में भी ऐसे क्षण आते हैं जब परिस्थितियाँ बदली हुई राह पर चलने को बाध्य करती हैं। भारत के लिए भी यही अवसर बीते कुछ वर्षों में आया और उसने चुनौती को अवसर में बदलने का संकल्प लिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रारम्भ हुए 'डिजिटल इंडिया', 'मेक इन इंडिया' और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसे अभियानों ने तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में नया उत्साह जगाया। इन अभियानों ने यह संदेश दिया कि भारत अब केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निमार्ता भी बनेगा। वर्ष 2021 में घोषित भारत सेमीकंडक्टर मिशन ने इस संकल्प को ठोस आधार प्रदान किया। इसके अंतर्गत गुजरात और कर्नाटक में चिप निर्माण पार्क स्थापित करने की दिशा में कार्य प्रारम्भ हुआ। ताइवान, जापान और अमेरिका की कंपनियों ने भारत में निवेश और सहयोग की इच्छा प्रकट की। अरबों डॉलर के निवेश प्रस्ताव आए और अनुसंधान संस्थानों को सीधे इस अभियान से जोड़ा गया।

कोविड महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियों को उजागर कर दिया। जब चीन और ताइवान के कारखाने ठप पड़े तो पूरी दुनिया में मोबाइल, वाहन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का संकट खड़ा हो गया। कीमतें बढ़ीं, उत्पादन ठप हुआ और उपभोक्ताओं को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उस कठिन दौर में भारत ने महसूस किया कि तकनीकी आत्मनिर्भरता केवल सुविधा का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता का भी प्रश्न है। तभी भारत ने यह अवसर पहचाना और अपने को आपूर्ति श्रृंखला का विश्वसनीय केंद्र बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए।

हाल ही में चीन के तियानजिन शहर में सम्पन्न शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। भारत ने यहाँ अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए सुरक्षा, संपर्क और अवसर के तीन स्तंभ प्रस्तुत किए। भारत ने कहा कि तकनीक केवल व्यापार और उद्योग का विषय नहीं, बल्कि साझा सुरक्षा, स्थायी संपर्क और सामूहिक अवसर का आधार है। सेमीकंडक्टर विकास और डिजिटल नवाचार को सामूहिक प्राथमिकता बनाने का भारत का आह्वान इस सम्मेलन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा। तियानजिन घोषणा पत्र में भारत की यह दृष्टि परिलक्षित हुई, जिससे यह प्रमाणित हो गया कि विश्व समुदाय भारत के बढ़ते तकनीकी महत्व को स्वीकार कर रहा है।

भारत ने इस प्रयास को केवल उद्योग तक सीमित नहीं रखा है। शिक्षा संस्थानों, अनुसंधान केन्द्रों और स्टार्टअप्स को भी इस अभियान से जोड़ा जा रहा है। आईआईटी, एनआईटी और अन्य विश्वविद्यालयों में चिप डिजाइनिंग, नैनो टेक्नोलॉजी और एंबेडेड सिस्टम से जुड़े पाठ्यक्रम आरम्भ किए गए हैं। युवाओं को अनुसंधान और नवाचार की दिशा में प्रेरित किया जा रहा है। इस प्रकार आने वाली पीढ़ी को तकनीकी नेतृत्व सौंपने की ठोस तैयारी की जा रही है।

सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत का यह अभियान रोजगार सृजन और औद्योगिक विकास का भी आधार बनेगा। अनुमान है कि आने वाले दस वर्षों में इस क्षेत्र से दस लाख से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होंगे। निर्माण, डिजाइनिंग, परीक्षण और वितरण के स्तर पर नये उद्योग और स्टार्टअप्स उभरेंगे। यह केवल तकनीकी विकास नहीं, बल्कि आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में भी ऐतिहासिक कदम होगा।

इस अभियान का एक महत्वपूर्ण पहलू राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़ा है। रक्षा उपकरणों और उपग्रह तकनीक में आत्मनिर्भरता बढ़ने से भारत की रणनीतिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सुरक्षा में भी भारत का प्रभाव बढ़ेगा। स्पष्ट है कि चिप निर्माण केवल उद्योग की आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्र की सुरक्षा और संप्रभुता से भी गहरे रूप से जुड़ा है।

हालाँकि, चुनौतियाँ अभी भी शेष हैं। बिजली और जल की सतत आपूर्ति, अनुसंधान में निरंतर निवेश, वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा और पर्यावरणीय संतुलन जैसी बाधाएँ इस यात्रा को कठिन बना सकती हैं। किंतु सरकार, उद्योग और समाज के संयुक्त प्रयास से इन चुनौतियों का समाधान अवश्य होगा। भारत ने जिस आत्मविश्वास और संकल्प के साथ इस यात्रा का आरम्भ किया है, उससे यह स्पष्ट है कि वह पीछे मुड़कर देखने वाला नहीं।

आज भारत की चिप क्रांति केवल तकनीकी आत्मनिर्भरता की कहानी नहीं, बल्कि यह आत्मगौरव, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की महागाथा भी है। उम्मीदों की चिप सचमुच हौसलों को पंख दे चुकी है। बीसवीं शताब्दी में तेल ने जैसे विश्व व्यवस्था को बदला, उसी प्रकार इक्कीसवीं शताब्दी में चिप और तकनीक वैश्विक नेतृत्व का निर्धारण करेगी। भारत ने इस क्षेत्र में अपने कदम दृढ़तापूर्वक बढ़ा दिए हैं और अब उसका सपना धीरे-धीरे साकार होता दिख रहा है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

कांग्रेस के लिए अभी भी 'दिल्ली' बहुत दूर है

मनोज कुमार मिश्र

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की तरफ से मुख्यमंत्री पद के दावेदार तेजस्वी यादव के साथ पूरे बिहार का दौरा करने के बाद कांग्रेस के सबसे बड़े नेता माने जाने वाले राहुल गांधी अपने लोगों में यह जताने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्होंने बिहार जीत लिया। बिहार विधानसभा का चुनाव आने वाले दिनों में होने वाला है। जिसमें इस बार भी मुख्य रूप से राजद-कांग्रेस की अगुवाई वाले महागठबंधन बनाम भाजपा-जनता दल (एकी) की अगुवाई वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के बीच चुनावी मुकाबला होना लगभग तय है। जिस कांग्रेस ने आजादी के बाद से बिहार में करीब चालीस साल शासन किया है, उसके नेता बड़े गर्व के साथ एक तरह से राजद का पिछलग्गू बनना स्वीकार लिया।

देश में राजग, भाजपा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पराजित करने का सपना देखने वाले कांग्रेस नेता राहुल गांधी दिल्ली समेत उन राज्यों में भी पार्टी को नहीं खड़ी कर पा रहे, जहां अतीत में कांग्रेस सालों तक शासन में रही है। वास्तविकता तो यह है कि कुछ अपवादों को छोड़कर जिन-जिन राज्यों में कांग्रेस एकबार पराजित हुई, वहां उसकी वापसी ही नहीं हो पाई। साल 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की अगुवाई में विपक्ष ने भाजपा पर संविधान बदलने के बेबुनियाद आरोप लगा कर मुद्दा बनाने की कोशिश की। उससे कुछ भ्रम की स्थिति बनी लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में लगातार तीसरी बार राजग केन्द्र में सरकार बनाने में कामयाब हुआ और राजग का दायरा बढ़ता गया।

लोकसभा चुनाव में दिल्ली की सात सीटों की स्थिति देखें तो आम आदमी पार्टी (आआपा) के साथ सीटों के तालमेल के साथ यहां उतरी कांग्रेस ने 3 और आआपा ने 4 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे। चुनाव में सभी 7 सीटें भाजपा लगातार तीसरी बार जीती। कांग्रेस को 18.50 फीसद वोट मिले। आआपा को लगा कि उसके साथ तालमेल से कांग्रेस मजबूत हो जाएगी और देर-सबेरे आआपा को ही नुकसान पहुंचाएगी। इसलिए उसने दिल्ली विधानसभा चुनाव अकेले लड़ना तय किया। नतीजा यह हुआ कि भाजपा को जीत मिली और 27 साल बाद दिल्ली की सत्ता में उसकी वापसी हुई। दस साल से दिल्ली में सरकार चला रही आआपा को उससे केवल दो फीसदी वोट कम मिले लेकिन सीटों का फासला काफी रहा। 70 सदस्यों वाली दिल्ली विधानसभा में भाजपा 45.86 वोट के साथ 48 और आआपा 43.57 फीसद वोट के साथ 22 सीटों पर जीत पाई। कांग्रेस को करीब 6 फीसदी वोट मिले।

खास बात यह है कि चुनाव नतीजों के बाद भाजपा के साथ-साथ कांग्रेस के नेता भी प्रसन्न थे। उन्हें लगता था कि आआपा की पराजय के साथ कांग्रेस की वापसी होगी लेकिन अभी तक एक भी कार्यक्रम ऐसा न हुआ जिससे लगे कि कांग्रेस दिल्ली में वापसी के लिए कोई प्रयास कर रही है। न ही आआपा में कोई भगदड़ मची।

साल 2006 के परिसीमन में पूर्वी दिल्ली सीट दो हिस्सों में (पूर्वी दिल्ली और दिल्ली उत्तर पूर्व) बंटी। उससे पहले पूर्वी दिल्ली सीट से दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित सांसद थे जो परिसीमन के बाद 2009 में उसकी एक सीट से सांसद बने और साल 2014 में पराजित हुए। 2019 में पूर्वी दिल्ली की दूसरी सीट दिल्ली उत्तर पूर्व से उनकी मां और दिल्ली की 15 साल मुख्यमंत्री रही शीला दीक्षित चुनाव लड़ी और पराजित हुई। शीला दीक्षित साल 2019 में आआपा से समझौते का विरोध किया तो उन्हें पार्टी प्रदेश अध्यक्ष के साथ जबरन लोकसभा चुनाव लड़वाया गया। सत्ता सुख भोगने की आदत पड़ जाने के चलते एक ही चुनाव की हार ने कांग्रेस को संकट में ही ला दिया। अपनी चिंता में लगे नेताओं ने पार्टी को हाशिए पर ला दिया।

साल 2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव की हार के बाद से पार्टी लगातार बिखरती ही गई। साल 2015 के चुनाव के समय पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष थे अरविंद सिंह लवली और मुख्यमंत्री का उम्मीदवार बना दिया गया अजय माकन को। इससे नाराज लवली ने चुनाव लड़ने से मना कर दिया। उसके बाद प्रदेश अध्यक्ष बने अजय माकन ने साल 2019 के लोकसभा चुनाव में आआपा से तालमेल की मुहिम चलाई। बताया गया कि कांग्रेस का एक वर्ग सात में से दो सीटों पर भी समझौता करने को तैयार हो गया था। जिस पार्टी ने कांग्रेस को हाशिए पर पहुंचाया उससे समझौता करने का शीला दीक्षित ने कड़ा विरोध किया। समझौता न होने पर भारी मन से अजय माकन नई दिल्ली सीट से चुनाव लड़कर हारे। उन्होंने भी बिना प्रदेश अध्यक्ष तय हुए बीमारी के बहाने पार्टी प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी छोड़ दी।

त्रासदी यह है कि वही अजय माकन आज की तारीख में राहुल गांधी के बेहद करीबी हैं। उन्हें लोकसभा चुनाव हारने के बाद पहले हरियाणा से और वहां से पराजित होने के बाद कर्नाटक से राज्यसभा का सदस्य बनाया गया। वे पार्टी के कोषाध्यक्ष हैं और बिहार चुनाव के सुपर प्रभारी। साल 2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव हारने के बाद से कांग्रेस का दिल्ली में प्रयोग ही चल रहा है। साल 2020 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को कोई सीट नहीं मिली और कांग्रेस का वोट औसत घटकर 4.26 हो गया। साल 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद जुलाई में शीला दीक्षित के निधन के बाद चौधरी अनिल कुमार प्रदेश अध्यक्ष बने। लवली थोड़े ही समय भाजपा में रहकर कांग्रेस में लौट आए और 2019 का लोकसभा चुनाव पूर्वी दिल्ली सीट से मजबूती से लड़े। उन्हें 2023 में अनिल कुमार के इस्तीफा देने पर दोबारा अध्यक्ष बनाया गया था लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में टिकटों के बंटवारे में अपनी भूमिका न होने से नाराज होकर उन्होंने फिर कांग्रेस छोड़ कर भाजपा का दामन पकड़ लिया। अब विधायक बनने के बाद भाजपा ने उन्हें यमुना पार विकास बोर्ड का अध्यक्ष बना दिया है। उसी दौरान बड़ी तादाद में कांग्रेस के नेता भाजपा में शामिल हुए। अब आर्थिक रूप से संपन्न पूर्व विधायक देवेन्द्र यादव दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष हैं।

दिल्ली में कांग्रेस वहीं पहुंच गई जहां भाजपा और कांग्रेस के अलावा मजबूत तीसरे दल वाले राज्य में पहुंच गई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भाजपा ने गुजरात, मध्य प्रदेश में कांग्रेस को सालों से सत्ता से बेदखल कर दिया। तमिलनाडु, केरल, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, झारखंड उत्तराखंड, बिहार और पंजाब इत्यादि में तो उसकी सत्ता में वापसी संभव नहीं लग रही है। हर राज्य में कांग्रेस क्षेत्रीय दलों की कृपा से कुछ सीटें पा जाती है। देश में भाजपा का विकल्प बनने का सपना देख रही कांग्रेस अपने शासित राज्यों कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश के अलावा शायद ही किसी राज्य में अपने बूते सरकार बना पाएगी- इसकी भविष्यवाणी करना बहुत कठिन नहीं है। राजस्थान या छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों के भी समीकरण बदल गए हैं। कांग्रेस के इस कदर बुरे दिन आ गए हैं कि वह उन दलों के साथ उनसे कम सीटों पर चुनाव लड़कर अपने को धन्य मान रही है, जिनके वजूद ने उसे हाशिए पर पहुंचा दिया है। सीधे शब्दों में कहें तो कांग्रेस इन्हीं क्षेत्रीय दलों के बूते भाजपा के मुकाबले बड़ी राष्ट्रीय पार्टी बनी हुई है और इसी के भरोसे देश पर राज करने का सपना देख रही है। पहले ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) के खिलाफ कांग्रेस काफी समय से अभियान चला रही है। जबकि ईवीएम से चुनाव कांग्रेस राज में ही शुरू हुआ था। इतना ही नहीं जब कांग्रेस किसी राज्य में जीतती है तब ईवीएम पर कुछ नहीं बोलती। केवल हारने पर ईवीएम मुद्दा होता है। अब चुनाव आयोग पर भाजपा के इशारे पर वोट चोरी के मनगढ़ंत आरोप लगाकर केन्द्र सरकार को कटघरे में खड़ा करने का जबरन प्रयास कर रही है। यह उसी तरह से उठाया जा रहा है जैसे लोकसभा चुनाव के दौरान संविधान के खतरे में होने का झूठा प्रचार किया जा रहा था। बताया जा रहा था इसे ही मुद्दा बनाकर राहुल गांधी, तेजस्वी यादव और विपक्षी नेता बिहार चुनाव को प्रयोगशाला बनाने का प्रयास कर रहे हैं। अगर यह सफल हुआ तो बाकी राज्यों में भी इसे मुद्दा बनाएंगे। इस दौरान अति उत्साह में विपक्ष की तरफ से गलती हो गई। बिहार के दरभंगा में विपक्षी मंच से प्रधानमंत्री की मां के लिए अपशब्द बोले गए। इसे प्रधानमंत्री और राजग नेताओं ने उसी तरह मुद्दा बनाया जिस तरह साल 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नेता सोनिया गांधी के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को नीच कहना बन गया था।

जीएसटी का नया दौर : कराधान व्यवस्था क्रांति की ओर

ललित गर्ग

भारतीय कराधान व्यवस्था में जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) का आगमन एक ऐतिहासिक एवं क्रांतिकारी कदम था। इसने अप्रत्यक्ष करों के जटिल और उलझे जाल को जहां सरल बनाने का प्रयास किया, वहीं शासन एवं प्रशासन में पसरे भ्रष्टाचार एवं अफसरशाही को भी काफी सीमा तक नियंत्रित किया। सुधार, सुविधा एवं जनता को राहत देने के लिये किये इस प्रयास के बावजूद इसमें अनेक जटिलताएं एवं भारी-भरकम कराधान जनता को बोझिल किये हुए था, इस बात को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार लम्बे समय से महसूस कर रही थी, इसीलिये इसवर्ष स्वतंत्रता दिवस के लालकिले के उद्बोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने जीएसटी को अधिक सुगम एवं जनता के हित में करने की घोषणा की। अब सरकार ने इसे और सुसंगठित करते हुए केवल दो स्लैब्स में कराधान को समेट दिया है और कर भी काफी कम कर दिये हैं तो निश्चय ही यह उपभोक्ताओं और कारोबारियों दोनों के लिए राहतकारी है। इसमें मिडल एवं लोअर क्लास का व्यापक ध्यान रखते हुए उन्हें राहत दी गयी है, जिससे हर परिवार के पास ज्यादा खर्च करने लायक आमदनी बचेगी और लोग अन्य वस्तुओं एवं सेवाओं पर अधिक खर्च कर सकेंगे। इन बड़े एवं क्रांतिकारी सुधारों से खपत बढ़ेगी, विकास को तीव्र गति मिल सकेगी। निश्चित ही यह एक नए कराधान युग का सूत्रपात है, जिसमें कर प्रणाली अधिक पारदर्शी, सरल और उपयोगी बनने की ओर अग्रसर है।

जीएसटी काउंसिल की 56वीं बैठक के बाद घोषित जीएसटी की नई दरें 22 सितंबर से लागू करने करने की घोषणा की गई है। जिसमें अब 12 व 28 फीसदी के दो स्लैब को खत्म करके सिर्फ 5 व 18 फीसदी कर दिया गया है। कहा जा रहा है कि यह सरकार की ओर से आर्थिक सुधारों की कड़ी में एक नई पहल एवं आयाम है, जिससे जीएसटी को तार्किक बनाने व आम जनता को महंगाई से राहत देने का प्रयास हुआ है। वहीं दूसरी ओर विलासिता आदि वस्तुओं के लिये चालीस फीसदी का एक नया स्लैब जोड़ा गया है। विपक्ष इसे देर से उठाया गया कदम बता रहा है, तो सरकार आर्थिक सुधार की दिशा में बड़ा कदम। जीएसटी के बड़े सुधार को लेकर विपक्ष और विशेषतः कांग्रेस एवं भाजपा के बीच जो आरोप-प्रत्यारोप शुरू हुआ है, वह इसलिये औचित्यहीन, अतार्किक एवं व्यर्थ है, क्योंकि जीएसटी परिषद ने लम्बी विवेचना एवं आम सहमति से यह फैसला लिया है। वहीं कुछ अर्थशास्त्री इस कदम को ट्रंप के टैरिफ वॉर के परिप्रेक्ष्य में उठाया गया सुरक्षात्मक कदम मानते हैं। जिससे घरेलू खपत को बढ़ाकर निर्यात घाटे को कम किया जा सकेगा। वहीं कुछ लोग इसे नवरात्र में दिवाली से पहले सरकार का तोहफा बता रहे हैं।

अनेक कर दरों की जटिलता उपभोक्ताओं के लिए हमेशा भ्रम और बोझ का कारण रही। बार-बार की दर-संशोधन प्रक्रियाओं से व्यापार जगत में असमंजस की स्थिति बनी रहती थी। अब दो स्लैब्स की व्यवस्था से यह समस्या काफी हद तक समाप्त हो जाएगी। उपभोक्ता को वस्तुओं और सेवाओं पर अपेक्षाकृत सरल, न्यायोचित और संतुलित कर ढांचा मिलेगा। इससे न केवल मूल्य स्थिरता आएगी, बल्कि खरीदारी और उपभोग की प्रक्रिया भी सहज होगी। इससे व्यापार एवं उद्योग भी विकास की रफ्तार पकडेंगे। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए कई प्रभावी कदम उठाए गए हैं। डिजिटलाइजेशन, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, आधार लिंकिंग और पारदर्शी तंत्र ने व्यवस्था में विश्वास जगाया है। जीएसटी भी इसी कड़ी का एक क्रांतिकारी सुधार है जिसने 'वन नेशन, वन टैक्स' की अवधारणा को मजबूत किया।

परंतु सच्चाई यह भी है कि जीएसटी विभाग आज भी भ्रष्टाचार की जकड़न से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है। छोटे व्यापारियों और उद्यमियों को आए दिन नोटिस, जांच और जटिल प्रक्रियाओं के जाल में उलझाया जाता है। कई बार भ्रष्ट तंत्र इन्हें भयभीत कर अनुचित लाभ उठाता है। यह स्थिति जीएसटी सुधार की भावना के विपरीत है। यदि वास्तव में कराधान को क्रांतिकारी मोड़ देना है, तो जीएसटी व्यवस्था को भी पूर्णतः भ्रष्टाचार मुक्त करना अनिवार्य होगा। यह किसी से छिपा नहीं है कि टैक्स विभाग लंबे समय तक भ्रष्टाचार का गढ़ बना रहा। जटिल कानून और अनेक कर-श्रेणियाँ इस भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती थीं। लेकिन जब कराधान पारदर्शी और सरल होगा, तो अधिकारी और कारोबारी के बीच की अनावश्यक जटिलता भी कम होगी। इससे जनता एवं छोटे व्यापारियों का विश्वास व्यवस्था पर मजबूत होगा। अब आवश्यकता है कि सरकार जीएसटी प्रणाली को तकनीकी और प्रशासनिक स्तर पर और अधिक पारदर्शी बनाए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल ट्रैकिंग का उपयोग कर कर चोरी रोकने के साथ-साथ अधिकारियों की मनमानी और रिश्वतखोरी पर भी अंकुश लगाया जा सकता है। करदाता के अधिकारों की रक्षा हो, ईमानदार व्यापारी को भयमुक्त वातावरण मिले और उपभोक्ता को राहत-तभी जीएसटी सचमुच क्रांति कहलाएगा। जीएसटी का नया दौर एक बड़ी राहत और परिवर्तन का संदेश लेकर आया है। अब अगला कदम यही होना चाहिए कि इसे भ्रष्टाचार से पूरी तरह मुक्त कर ईमानदार करदाताओं का विश्वास जीता जाए। तभी यह कहा जा सकेगा कि भारत ने वास्तव में 'सही अर्थों में एक राष्ट्र, एक कर और एक पारदर्शी कर व्यवस्था' की ओर निर्णायक कदम बढ़ा लिया है।

भारत की आर्थिक यात्रा में कुछ फैसले ऐसे होते हैं, जो केवल नीतिगत बदलाव नहीं, बल्कि युगांतरकारी मोड़ साबित होते हैं। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में हालिया सुधार उसी दिशा में उठाया गया एक साहसिक कदम है। कराधान व्यवस्था को सरल बनाने और जनता को सीधी राहत पहुँचाने की दिशा में यह सुधार महज सरकारी निर्णय नहीं, बल्कि एक लोककल्याणकारी दृष्टि का प्रमाण है। आजादी के बाद से भारत में कर-व्यवस्था जटिलताओं, बहुस्तरीय बोझ और भ्रष्टाचार की दलदल में फंसी रही।

दैनिक पंचांग

6 सितम्बर 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	सिंह में	कन्या	06.33 बजे से
चंद्र	मकर में	तुला	08.44 बजे से
मंगल	कन्या में	वृश्चिक	10.59 ब.से
बुध	सिंह में	धनु	13.15 बजे से
गुरु	मिथुन में	मकर	15.20 बजे से
शुक्र	कर्क में	कुंभ	17.06 बजे से
शनि	मीन में	मीन	18.39 बजे से
राहु	कुंभ में	मेष	20.10 बजे से
केतु	सिंह में	वृष	21.50 बजे से
		मिथुन	23.48 बजे से
राहुकाल 9.00 से 10.30 बजे तक		कर्क	02.01 बजे से
		सिंह	04.17 बजे से

शनिवार 2025 वर्ष का 249 वा दिन **दिशाशूल** पूर्व **ऋतु** वर्षा। **विक्रम संवत्** 2082 **शक संवत्** 1947 **मास** भाद्रपद **पक्ष** शुक्ल **तिथि** चतुर्दशी 01.42 बजे रात्र को समाप्त। **नक्षत्र** धनिष्ठा 22.56 बजे को समाप्त। **योग** अतिगण्ड 11.52 बजे को समाप्त। **करण** गर 14.32 बजे तदनन्तर वणिज 01.42 बजे रात्र को समाप्त। **चन्द्रायु** 13.8 घण्टे **रवि क्रान्ति** उत्तर 06° 25' **सूर्य** उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1872459 **जूलियन दिन** 2460924.5 **कलियुग संवत्** 5126 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2551 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** रवि उलावल **तारीख** 13 **विशेष** अनंत चतुर्दशी, गणेश विसर्जन।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
काल	05.55 से	07.23 बजे तक	लाभ	05.37 से	07.10 बजे तक
शुभ	07.23 से	08.51 बजे तक	उद्वेग	07.10 से	08.42 बजे तक
रोग	08.51 से	10.19 बजे तक	शुभ	08.42 से	10.14 बजे तक
उद्वेग	10.19 से	11.46 बजे तक	अमृत	10.14 से	11.47 बजे तक
चर	11.46 से	01.14 बजे तक	चर	11.47 से	01.19 बजे तक
लाभ	01.14 से	02.42 बजे तक	रोग	01.19 से	02.51 बजे तक
अमृत	02.42 से	04.10 बजे तक	काल	02.51 से	04.23 बजे तक
काल	04.10 से	05.37 बजे तक	लाभ	04.23 से	05.56 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

सेवानिवृत्त पुलिस इंस्पेक्टर पर मारपीट का प्राथमिकी दर्ज

खूंटी : तोरपा थाना क्षेत्र के हरिजन टोली निवासी जवाहर नायक ने सेवानिवृत्त पुलिस इंस्पेक्टर वसिल सिलवेस्टर डाहंगा के खिलाफ मारपीट करने और जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए दुर्व्यवहार करने का प्राथमिकी दर्ज कराया है। तोरपा थाना प्रभारी को शुक्रवार को दिये गये आवेदन में जवाहर नायक ने कहा है कि वह अपने घर के पास बैठा था। उसी दौरान सेवानिवृत्त पुलिस इंस्पेक्टर बसिल सिलवेस्टर डाहंगा वहां पहुंचे और गाली-गलौज करते हुए लाठी से सिर पर प्रहार कर दिया। इससे उसे गंभीर चोट लगी। उसके सिर पर आठ टांके लगाये गये हैं।

हाथियों से प्रभावित इलाकों का नियमित निगरानी करे वन विभाग : सांसद

खूंटी : सांसद कालीचरण मुंडा से शुक्रवार को सिमडेगा के वन प्रमंडल पदाधिकारी शशांक शेखर ने मुलाकात की। इस दौरान जिले में हाथियों के उत्पात और उससे प्रभावित क्षेत्रों की स्थिति पर चर्चा हुई। सांसद के खूंटी कार्यालय की ओर से जारी विज्ञप्ति में बताया गया कि सांसद ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि हाथी पीड़ित परिवारों को तत्काल लाभ उपलब्ध कराया जाए और विभाग प्रभावित इलाकों में नियमित निगरानी सुनिश्चित करे। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिए रेंजर समय-समय पर हाथी से बचाव की सामग्री ग्रामीणों तक पहुंचाएं। वहीं सांसद कालीचरण मुंडा अपने दो दिवसीय प्रवास पर शुक्रवार को सिमडेगा पहुंचे। इस दौरान सिविल सर्जन ने सांसद से मुलाकात की। मौके पर कालीचरण मुंडा ने सिविल सर्जन से जिले में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति की जानकारी ली। सांसद ने विशेष रूप से एम्बुलेंस की उपलब्धता और उनकी कार्य स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट प्राप्त की। साथ ही उन्होंने स्वास्थ्य विभाग की ओर से संचालित योजनाओं, चिकित्सकों और चिकित्सा कर्मियों की तैनाती एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इलाज की सुविधा की स्थिति की भी समीक्षा की। सांसद मुंडा ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा आम जनता से सीधे जुड़ी हुई है। इसलिए इसमें किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सिविल सर्जन को निर्देश दिया कि एम्बुलेंस सेवा सुचारू रूप से चले और मरीजों को समय पर बेहतर सुविधा उपलब्ध कराई जाए।

खेलों को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार कृतसंकल्पित : विधायक

खूंटी : तोरपा प्रखंड के किंशु टोली में खेल समिति की ओर से आयोजित तीन दिवसीय पुरुष-महिला हॉकी सह फुटबॉल प्रतियोगिता का समापन शुक्रवार को हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया मौजूद थे। विधायक ने खिलाड़ियों की हौसला बढ़ाते हुए कहा कि राज्य की हेमंत सरकार खेल को बढ़ावा देने के लिए कृतसंकल्पित है। उन्होंने प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि खेल से आपसी भाईचारा और अनुशासन की भावना बढ़ती है। ग्रामीण स्तर पर ऐसे आयोजन खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का अवसर देते हैं। समापन समारोह में जिला परिषद सदस्य सह झामुमो महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष शुशांति कोनगाड़ी, मुखिया शिशिर टोपनो, प्रदीप केशरी, चंदन ठाकुर, अनुज गुड़िया सहित दर्जनों ग्रामीण और खेल प्रेमी मौजूद थे।

बिरसा मुंडा तीरंदाजी अकादमी सिल्ली में खिलाड़ियों को मिला आधुनिक उपकरण और स्पेशल डाइट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : बिरसा मुंडा तीरंदाजी अकादमी सिल्ली में खिलाड़ियों के बीच एकेडमी के मुख्य संरक्षक सुदेश कुमार महतो के द्वारा आधुनिक तीरंदाजी उपकरण का वितरण किया गया जिसमें 2 सेट रिकर्व, 1 सेट कंपाउंड बो अकादमी को सुपुर्द किया गया, आगामी आनेवाले राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं को ध्यान में रखते हुए दिन गुरुवार को वितरण किया गया साथ ही बच्चों के लिए ट्रैकसूट, टी-शर्ट और विशेष कर उनके न्यूट्रिशन का ख्याल रखते हुए सभी खिलाड़ियों के लिए स्पेशल डाइट (ड्राई फ्रूट) और फ्रूट की व्यवस्था की गई ताकि बेहतर डाइट के साथ बच्चे अच्छा प्रदर्शन कर

सके। यह बहुत अच्छी पहल हमारे राज्य के वैसे दिव्यांग बच्चों के लिए जो किसी कारण से समाज के मुख्य धारा से कही न कही पीछे छूट गए है उनको खेल के माध्यम से निखारने का प्रयास किया जा रहा है पूर्व में भी इस अकादमी से कई दिव्यांग तीरंदाज निकाल का आए है जिन्होंने राज्य ही नहीं बल्कि देश के लिए खेल कर राज्य और सिल्ली का नाम रोशन किया। सिल्ली के दो दिव्यांग तीरंदाजों ने 2014 के एशियाई खेलो साउथ कोरिया में भाग लिया। अनूठी पहल सिल्ली के बिरसा मुंडा तीरंदाजी अकादमी में दिव्यांग तीरंदाजों के लिए विशेष से प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है जिसमें की कई दिव्यांग तीरंदाज सिल्ली में आकर अपने दिव्यागता को कमजोरी नहीं ताकत बनाने का अथक प्रयास कर रहे हैं और आने वाले प्रतियोगिताओं में अपना बेहतर प्रदर्शन करके राज्य देश का नाम रोशन करना चाहते हैं ज्ञात हो कि इस अकादमी ने पूर्व में भी कई दिव्यांग तीरंदाज निकलकर सामने आए हैं जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व किया है।। बेहतर प्रशिक्षण में किसी प्रकार की कोई कमी ना हो इसके लिए हमारे अकादमी के अध्यक्ष श्रीमती नेहा महतो जी का विशेष ध्यान इन नए तीरंदाजों के ऊपर है और इसी कड़ी में एशियन गेम्स की सिल्वर मेडलिस्ट दिव्यांग तीरंदाजों के लिए मेंटर के रूप में काम कर रही है ज्ञात हो की मधुमिता सिल्ली एकेडमी की पिलर मेंबर और मेंटर के रूप में स्थापित है मधुमिता कुमारी और उनके हसबैंड निशांत कुमार की कंपनी ने इन खिलाड़ियों के साल भर के जरूरत पड़ने वाले स्पोर्ट्स किट देने का बीड़ा उठाया है ये बहुत ही सराहनीय कार्य है कुमारी ने पूर्व में भी कई प्रकार के उपकरण अपने एकेडमी के साथी खिलाड़ियों को देकर उनको आगे बढ़ाने का कार्य किया है। मधुमिता का कहना है मै जिस एकेडमी से यह तक पहुंची हूं ये मेरा भी कर्तव्य है कि मैं इस अकादमी के साथ जुड़कर यहां के खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने का काम करती रहूं ,सुदेश सर और नेहा महतो जी का दिल से आभार जिन्होंने ये मंच हम जैसे खिलाड़ियों को सिल्ली में दिया।

विवेकानंद कान्वेंट स्कूल में मनाया गया शिक्षक दिवस, शिक्षकों को मिला सम्मान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : चेचाई, चाराडीह स्थित विवेकानंद कान्वेंट स्कूल मे भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जन्मदिन व शिक्षक दिवस बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम डॉ सर्वपल्ली राधा कृष्णन जी के प्रतिमा पर विद्यालय निदेशक अनिल कुमार व प्राचार्य राधेश्याम पंडित के मलायर्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। उपस्थित शिक्षकों ने भी उनके प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। जिसके उपरांत बच्चों ने स्वागत गीत व नृत्य प्रस्तुत कर शिक्षकों का अभिनन्दन किया। बच्चों के द्वारा कई गीत, संगीत व नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मनोरंजन करवाया। कक्षावर छात्र-छात्राओं ने शिक्षकों को गिफ्ट भी भेट किया। विद्यालय निदेशक अनिल कुमार एवं सह निदेशिका खुशबु गुप्ता के द्वारा

सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को आकर्षक तोहफे देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य राधेश्याम पंडित ने कहा कि शिक्षकों का कर्तब्य हैं बच्चों को निरंतर शिक्षा देना। लेकिन आज के बच्चें निरंतर शिक्षा ग्रहण नहीं करते हैं। वे शिक्षा से इतर अन्य गलत गतिविधियों मे लिप्त होकर अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर देते हैं। बच्चों को शिक्षा की ओर लौटना पड़ेगा, तब भी एक अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती हैं। वही निदेशक अनिल कुमार ने शिक्षा और शिक्षकों के गिरते स्तर पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि आज जँहा बच्चें शिक्षा व समाजिक मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं तो वही दूसरी तरफ शिक्षकों के भी गरिमा गिरती जा रही हैं। ये दोनों मुद्दे विचारणीय व चिंतनीय हैं। बच्चों व शिक्षकों दोनों को समाजिक व नैतिक मूल्यों को आत्मसात कर अपने अपने कर्तब्य पर निरन्तर चलने कि जरुरत हैं।

मॉडर्न पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : झुमरी तिलैया स्तिथ मॉडर्न पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस का आयोजन बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय की निदेशिका संगीता शर्मा, प्राचार्य गुरु चरण वर्मा एवं सीनियर शिक्षकों के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर एवं डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण कर की गई। इस अवसर पर विद्यालय की निदेशिका संगीता शर्मा ने उपस्तिथ शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा की शिक्षकों को समर्पित यह विशेष दिन हमें आपकी मेहनत और समर्पण की याद दिलाता है। शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि छात्रों के भविष्य को भी आकार देते हैं। शिक्षकों के अथक प्रयासों से ही हमारे समाज का निर्माण होता है। वहीं प्राचार्य गुरु चरण वर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा की शिक्षक दिवस पर, मैं अपने शिक्षकों की कड़ी मेहनत और निष्ठा को सलाम करता हूं। आप सभी ने छात्रों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सेक्टर 2सी के मां मनसा मंदिर में धूमधाम से संपन्न हुई कर्मा पूजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : भाई-बहन के अटूट रिश्ते और प्रकृति संरक्षण के संदेश के साथ बुधवार को सेक्टर 2उ स्थित मां मनसा मंदिर प्रांगण में कर्मा पूजा बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर महिलाओं ने अपने भाइयों की लंबी उम्र और सुख-समृद्धि के लिए व्रत एवं उपवास रखा। सुबह से व्रत रखने के बाद शाम को महिलाएं मंदिर में एकत्रित हुईं और परंपरागत विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। पूजा के दौरान कर्मा पेड़ की डाल लगाई गई, जिसके चारों ओर महिलाएं पारंपरिक गीत गाती हुई घूम-घूमकर नृत्य करती रहीं। इस दौरान बहनों ने प्रार्थना की कि जिस प्रकार प्रकृति युगों-युगों तक अमर बनी हुई है, उसी प्रकार उनके भाइयों का जीवन भी सुरक्षित और लंबा रहे। पूजा कर रही जयंती देवी और मंजू देवी ने बताया कि कर्मा पर्व भाई-बहन के अटूट रिश्ते की ताकत और प्रकृति के प्रति हमारी निष्ठा का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि व्रत के बाद रात में उपवास खोला जाता है और अगले दिन सुबह तालाब में जाकर पूजा सामग्री का विसर्जन किया जाता है। उल्लेखनीय है कि कर्मा पूजा पूरे झारखंड एवं बिहार राज्य में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाई जाती है।

शिक्षक दिवस पर विद्यार्थियों ने मनाया डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुजू : शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों ने हर्षोल्लास के साथ डॉक्टर सर्वपल्ली रधाकृष्णन का जन्मदिन केक काटकर मनाया। पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिवस में विद्यालय बंद रहने की वजह से छात्र-छात्राओं ने अपने कोचिंग संस्थान में शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाया। शुक्रवार को मुरपा स्थित विद्यार्थियों ने अपने गुरुजनों के आवास पर सादे समारोह का आयोजन कर केक काटा और एक दूसरे को केक और मिठाई खिलाकर गुरुजनों का आशीर्वाद लिया और अपने गुरुजनों को भेंट प्रदान किया मौके पर शिक्षिका तनीमा नंदी ने अपने विद्यार्थियों को डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवनी के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा

की शिक्षा अनमोल रतन है। शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन पशु के समान है। शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पिएगा वह निडर हो जाएगा। और किसी भी समस्या का समाधान करने के योग्य हो जाएगा। शिक्षा एक अनमोल रत्न है जिसे कोई चुरा नहीं सकता। मौके पर विद्यार्थियों में पियूष कुमार, रोमीन कुमार, चरणजीत कौर, गुनगुन कुमारी, कुनाल कुमार, राजवीर सिंह भाटिया, सोनिया कुमारी, सिद्धार्थ कुमार, माही कुमारी रोशनी कुमारी, विजय कुमार, मिकु कुमार ,शिवम, कुमार, दिपाली कुमारी, नीरज कुमार, अंकिता कुमारी, बादल कुमार, रौनक प्रविण, आदिती कुमारी, आदित्य कुमार, कुन्दन कुमार, गौतम कुमार, शिवा कुमार, माही कुमारी, रितिक कुमार, उज्जवल कुमार, सोनाक्षी कुमारी, स्नेहा कुमारी मौजूद थे।

राधा गोविन्द विश्वविद्यालय में शिक्षक सम्मान समारोह का भव्य हुआ आयोजन

शिक्षा एक अनमोल रत्न, शिक्षक के बिना शिक्षा अधूरा : बीएन साह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : शुक्रवार को शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर शिक्षक सम्मान समारोह का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन और विश्वविद्यालय के संस्थापक स्व. गोविंद साह एवं राधा देवी के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। उसके बाद सभी अतिथियों को पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ प्रदीप कुमार बालमुचू, पूर्व सांसद, विशिष्ट अतिथि रामाकांत आनंद, प्रदेश सचिव कांग्रेस कमिटी, सी पी संतन समाजसेवी, सोनू कुमार उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बी एन साह, सचिव प्रियंका कुमारी, कुलपति प्रो (डॉ) रश्मि,

कुलसचिव प्रो (डॉ) निर्मल कुमार मंडल, वित्त एवं लेखा पदाधिकारी डॉ संजय कुमार, परीक्षा नियंत्रक प्रो (डॉ) अशोक कुमार, प्रबंध समिति सदस्य अजय कुमार, मीडिया प्रभारी डॉ संजय सिंह, डॉ अनिल कुमार, राधा गोविंद सीनियर सेकेंडरी प्राचार्य डॉ सुजीत कुमार मोहंती, इंटर कॉलेज प्राचार्या डॉ सोमा पांडेय मौजूद रहे। स्वागत भाषण कुलसचिव प्रो (डॉ) निर्मल कुमार मंडल ने दिया। उन्होंने सभी अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन, स्वागत एवं आभार व्यक्त किया। डॉ प्रदीप बालमुचू ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा संस्कार की जननी है। शिक्षक दिवस केवल सम्मान का दिन नहीं है बल्कि हमें यह भी याद दिलाता है कि शिक्षक समाज की रीढ़ है उनके बिना ना तो ज्ञान का संचार संभव है और न ही विद्यार्थियों का सही मार्गदर्शन। अंत में शिक्षक दिवस हार्दिक बधाई दिए। समाजसेवी सी पी संतन ने शिक्षक दिवस पर सभी छात्रों को आशीर्वाद दिया और कहा कि बच्चे भविष्य का निमार्ता होते है। विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसके बाद कुलाधिपति बी एन साह एवं सचिव प्रियंका कुमारी ने सभी अधिकारीगणों, शिक्षकगणों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारीगणो को अंगवस्त्र भेंट, पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। कुलाधिपति बी एन साह ने अपने संबोधन में शिक्षक दिवस कि हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई दिए और उन्होंने कहा कि शिक्षक के बिना ज्ञान अधूरा रहता है। शिक्षक छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ अच्छे संस्कार देते है और शिक्षक के बदौलत ही अच्छे समाज का निर्माण होता है। रामाकांत आनंद जी ने कहा कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान है। सचिव प्रियंका कुमारी ने सभी शिक्षकों से आग्रह करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखें और छात्रों में घट रहे नैतिक ज्ञान के अवसरों को बढ़ावा दे। कुलपति प्रो (डॉ) रश्मि ने कहा कि शिक्षण संस्थान केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि छात्रों को अच्छे आचरण, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक , अनुशासित , सदाचारी व जिम्मेदार व्यक्ति बनाने का पवित्र स्थान भी है। संजय सिंह मीडिया प्रभारी ने का कहा कि शिक्षक सिर्फ पढ़ते ही नहीं , बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका सीखते है। शिक्षा के साथ संस्कार देने का कार्य करते है।

संक्षिप्त खबरें

रामगढ़ कॉलेज एलुमनी एसोसिएशन की हुई बैठक

रामगढ़ : शुक्रवार को रामगढ़ कॉलेज एलुमनी एसोसिएशन की बैठक डॉ. शारदा प्रसाद की अध्यक्षता में शांतिधारा बुक ट्रस्ट के पुस्तकालय में आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से झारखंड की संस्कृति एवं भाई बहन का प्रेम और प्रकृति पर्व करम परब पर परिचर्चा की गई। सर्वप्रथम संस्थापक अध्यक्ष सुरेश पी अग्रवाल के द्वारा सभी का स्वागत व अभिनंदन किया गया। सचिव, प्रो. प्रणीत कुमार ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों को सभी के सामने प्रस्तुत किया तथा उसकी संपुष्टि की गई। डॉ शारदा प्रसाद ने भारत और मॉरीशस की संस्कृति पर प्रकाश डाला। जिस प्रकार भारतवर्ष में श्री गणेश पूजा श्रद्धा, भक्ति के साथ धूमधाम से मनाया जाता है उसी प्रकार मॉरीशस में भी पूरी श्रद्धा और भक्ति से गणेशोत्सव मनाया जाता है। उन्होंने मारीशस में करम परब और झारखंड की संस्कृति के बारे में बताया। ₹करम परब वहां के लिए बिल्कुल नया और अनोखा पर्व था, जिसकी सभी ने सराहना की। इसके बाद डा. शारदा ने करम पर्व पर अपनी कविता: भादो माह शुक्ल एकादशी करम परब लेकर आया, हरियर करम डाल ले भाई आया, बहना का मन हरसाया सुनाई। सुरेश पी अग्रवाल ने कहा कि झारखंड उत्सव धर्मी राज्य है और यहां प्रकृति से जुड़े सभी पर्व करमा, सरहुल इत्यादि मनाया जाते हैं। प्रो. प्रणीत कुमार और डॉ. ताराशंकर अग्रवाल ने भी झारखंड की संस्कृति के विषय में अपने विचार व्यक्त किये। कहा कि आज हमें प्रकृति का संरक्षण और संवर्धन करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। डॉ उमा सेन ने भी करमा पर्व से संबंधित अपने अनुभव साझा किये, कहा कि पर्व-त्योहार हमारे जीवन की एकरसता को दूर करने में सहायक होते हैं और करमा पर्व तो झारखंड का सामासिक पर्व है, जिसे सभी लोग बड़े धूमधाम से मनाते हैं। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. तारा शंकर अग्रवाल ने किया। डॉ शारदा प्रसाद ने अपनी नवीनतम पुस्तक गुलमोहर-सी जिंदगी और साहित्य के सामाजिक परिदृश्य तथा ज्ञान स्पंदन पत्रिका की प्रतियां शांतिधारा बुक ट्रस्ट को प्रदान कीं।

जीएसटी काउंसिल का ऐतिहासिक निर्णय : दो टैक्स स्लैब से मिलेगा सभी वर्गों को लाभ

रामगढ़ : जीएसटी काउंसिल की बैठक के बाद जीएसटी टेक्स स्लैब मे किए गए नये संशोधन स्वागत योग्य हैं। पूर्व के चार टैक्स स्लैब को सुधार कर दो टैक्स स्लैब करना देश के यशस्वी पीएम नरेंद्र मोदी जी की विकसित भारत का आधार रखने की सोच के साथ, सभी वर्गो को राहत प्रदान कर आत्मनिर्भर भारत को गती प्रदान करने वाला है। केन्द्र सरकार द्वारा जीएसटी दरो में भारी कट्टौती गरिब मध्यम, किसान, महिला, वर्गो को राहत देगें और छोटे उधोगो को सरलता से स्थापित कर छोटे व्यवसायियों को विशेष लाभ पहुंचाने के साथ कम लागत मे अधिक मुनाफा का मार्ग प्रशस्त करेंने वाले है। जीएसटी की घटी दरें, सभी वर्ग के साथ, निर्माण सेक्टर, किसान वर्ग, खाद्य प्रदार्थो, डेयरी उत्पादो, मेडीकल उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, आटोमोबाइल सेक्टर, टेक्सटाइल सेक्टर, बीमा प्रीमियम, बच्चो की पढाई लिखाई, खाने पीने और रोजमर्रा में उपयोग आने वाली लगभग 50 वस्तुओं पर शून्य टैक्स करना केन्द्र सरकार के साहासीक कदम के साथ आम परिवारों को बड़ी राहत प्रदान करने वाला है।हमसब कह सकते है कि नए घटे स्लैब रोजी,रोटी,कपड़ा और मकान को लाभान्वित करेगें। घटे स्लैबों से बाजारों में आने वाले पर्व त्यौहारों में भी नई रौनक देखने को मिलेगी,लगभग 350वस्तुओं से स्लैब की दरो को 18 प्रतिशत व 12प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत लाना और कई पर टैक्स मुक्त करना आम जनता को सीधे तौर पर लाभ पहुंचाना हैं,जो सराहनीय हैं। जीएसटी की नई दरे 22 सितम्बर से लागू की जाऐगी। वित्त मंत्री वी.सीतारमण के द्वारा जीएसटी काउंसिल की बैठक के बाद प्रस्तुत जीएसटी की घटी स्लैब दरें नए भारत, सुदृढ़ भारत, प्रगतिशील भारत, स्टार्टअप लेता भारत का मार्ग प्रशस्त करेंगी।

हजारीबाग प्रेस क्लब के नवनिर्मित भवन का हुआ उद्घाटन

हजारीबाग : हजारीबाग प्रेस क्लब के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन शुक्रवार को पूरे विधि-विधान और गरिमामयी वातावरण में संपन्न हुआ। सुबह 9 बजे सत्यनारायण भगवान की पूजा-अर्चना के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई, जिसमें क्लब के संरक्षक कृष्ण गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी यजमान बने और पुजारी अजय मिश्रा ने मंत्रोच्चारण कर पूजा सम्पन्न कराई। 11 बजे से अतिथियों और जिले भर से आए पत्रकारों का आगमन शुरू हुआ और देखते ही देखते भवन परिसर में भारी भीड़ उमड़ पड़ी। दोपहर करीब 12 बजे जिले के उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह,सदर विधायक प्रदीप प्रसाद सहित अन्य अतिथियों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके बाद हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद एवं पूर्व सांसद भुवनेश्वर मेहता ने संयुक्त रूप से फीता काटकर भवन का उद्घाटन किया। जिसके पास सभी अतिथियों ने नवनिर्मित भवन का अवलोकन कर प्रशंसा की। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित अतिथियों में बरही विधायक मनोज कुमार यादव, अगरतल्ला विधायक सुदीप राय बर्मन,पिछड़ा आयोग के अध्यक्ष जानकी प्रसाद यादव,मांडू के पूर्व विधायक जयप्रकाश भाई पटेल,जिला परिषद अध्यक्ष उमेश मेहता,कांग्रेस कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष जलेश्वर महतो,समाजसेवी व उद्योगपति कमल नयन सिंह,पूर्व उपमहापौर आनंद देव, विकास राणा,डॉ. राहुल कुमार सिंह गणेश कुमार सीटू,नीरज पासवान, भाजपा नेता उदयभान नारायण सिंह,मो. खालिद,उदयभान नारायण सिंह, राकेश गुप्ता, रोहित कुमार डीपीआरओ, कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह,समाजसेवी चंद्रप्रकाश जैन, हजारीबाग यूथ विंग के अध्यक्ष व संसाद सुपुत्र करण जायसवाल, अमरदीप यादव,मनोज गुप्ता,संजय सिंह, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राजकुमार राजू, राकेश गुप्ता, संजय तिवारी,सहित अनेकों अतिथि गण मौजूद रहें। सांसद मनीष जायसवाल ने अपने संबोधन में कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और आज हजारीबाग प्रेस क्लब को अपना नवनिर्मित भवन मिलना सबके लिए गर्व का क्षण है। यह भवन न सिर्फ पत्रकारों के लिए एक बेहतर कार्यस्थल उपलब्ध कराएगा बल्कि जिले में निष्पक्ष और सशक्त पत्रकारिता को नई दिशा देगा। हजारीबाग उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि पत्रकार समाज और प्रशासन के बीच सेतु का कार्य करते हैं और यह भवन पत्रकारों को एक सशक्त मंच प्रदान करेगा जहां से समाजहित में रचनात्मक पत्रकारिता को और बल मिलेगा। सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा कि प्रेस क्लब का यह भवन हजारीबाग के पत्रकारों की काफी जरूरत मांग थी और आज इसका सपना साकार हुआ है।

एक नजर

कदम के पेड़ से गिरकर बालक हुआ घायल, रेफर

साहिबगंज: मिजाचौकी थाना क्षेत्र के नयाटोला ग्राम में शुक्रवार को कदम के वृक्ष से गिरने से संजीत मंडल का 14 वर्ष पुत्र मोनू कुमार गंभीर रूप से घायल हो गया। मिली जानकारी के अनुसार घायल बालक के बाएं हाथ के दो जगह की हड्डी टूट गया है। घायल बालक को इलाज के लिए ग्रामीणों व परिजनों के सहयोग से मिजाचौकी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। वही ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक एन.एन सिंह एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए भागलपुर मायागंज रेफर कर दिया गया। उक्त घायल बालक के माता-पिता दिल्ली में मजदूरी का कार्य करता है।

मोबाइल चोरी करते पकड़ाया नाबालिग

साहिबगंज: जिला के राधानगर थाना क्षेत्र के उधवा चौक स्थित सब्जी मंडी में शुक्रवार की सुबह मोबाइल चोरी करने के आरोप में ग्रामीणों ने एक युवक को पकड़ लिया। इधर सूचना मिलते ही राधानगर थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर युवक को पकड़कर उसे थाना ले गया। जानकारी के अनुसार उधवा चौक स्थित सब्जी मंडी में एक व्यक्ति प्रतिदिन की तरह सब्जी खरीद आ रहा था। इसी बीच युवक ने उनके पैकेट से मोबाइल निकाल लिया। आसपास के लोगों की नजर पड़ते ही उक्त युवक भागने लगा। तभी ग्रामीणों ने युवक को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया है।

मंदिरों का गांव मलूटी पहुंची मुख्य सचिव मां मौलिक्षा मंदिर में की पूजा अर्चना

दुमका: मुख्य सचिव अलका तिवारी ने जिले के शिकारीपाड़ा प्रखंड स्थित मंदिरों के गांव से प्रसिद्ध मलूटी का शुक्रवार को भ्रमण किया। इस अवसर पर उन्होंने सपरिवार मां मौलिक्षा के मंदिर में पूरे विधि-विधान से पूजा अर्चना की। इसके बाद उन्होंने मलूटी ग्राम स्थित सभी मंदिरों का भी दर्शन किया। इस अवसर डीसी अभिजीत सिन्हा, एसपी पीताम्बर सिंह खेरवार, डीएफओ सात्विक व्यास, जिला प्रशासन के अधिकारी सहित प्रखंड के अधिकारी उपस्थित थे। इस दौरान स्थानीय ग्रामीणों से भी उन्होंने बातचीत की। ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं से मुख्य सचिव को अवगत कराया। इस मौके पर डीसी अभिजीत सिन्हा ने मुख्य सचिव को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

विजय-2 खदान खोलने की मांग को लेकर ग्रामीणों का प्रदर्शन मंत्री को सौंपा ज्ञापन

पश्चिमी सिंहभूम: जिला स्थित टाटा स्टील की विजय-2 खदान को चालू कराने की मांग को लेकर ग्रामीणों का आंदोलन अब और तेज हो गया है। खदान बंद होने से रोजगार खत्म होने और क्षेत्र की आर्थिक स्थिति बिगड़ने पर नाराज ग्रामीणों, ट्रक मालिकों, ड्राइवर-खलासी और मजदूरों ने शुक्रवार को गुवा के हाथी चौक पर जोरदार धरना-प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन का नेतृत्व नोवामुंडी प्रमुख पूनम गिलुवा ने किया। प्रदर्शन के दौरान ग्रामीण नेता मुंडा ने चेतावनी दते हुए कहा कि यदि दुर्गा पूजा से पहले खदान चालू नहीं की गई, तो ग्रामीण सड़क जाम और रेल चक्का जाम करने को विवश होंगे। उन्होंने कहा कि खदान बंद होने से हजारों परिवार बेरोजगार हो गए हैं और पूरे सारंडा क्षेत्र में भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई है। लोग अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए गांव छोड़कर दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं। ट्रक मालिकों और ड्राइवर-खलासियों ने भी कहा कि खदान बंद होने से उनकी आजीविका पर संकट आ गया है। उन्होंने खदान को जल्द से जल्द चालू करने, स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता के आधार पर रोजगार देने और क्षेत्रीय विकास योजनाओं को लागू करने की मांग रखी।

दियारा क्षेत्र में जलस्तर बढ़ा,सात पंचायत प्रभावित- मुख्य सड़क ध्वस्त, नाव से हो रहा आवागमन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला के उधवा प्रखंड के निचले क्षेत्रों में फिर एक बार जलस्तर बढ़ने से दियारवासियों की परेशानी बढ़ गयी है। गंगा का पानी शांति मोड़ के निकट से विभिन्न गांवों में घुस रहा है। इसके अलावा कई विद्यालय के निकट पानी चढ़ गया है। साथ ही शांति मोड़ से श्रीधर कॉलोनी नंबर-10 तक जाने वाली मुख्य सड़क ढह जाने से सीधा कनेक्शन कट गया है। साथ ही स्थानीय लोग नौका के माध्यम से आवागमन कर रहे हैं। जानकारी के अनुसार जलस्तर बढ़ने से दियारा के सात पंचायत प्रभावित होते हैं। प्रखंड के पूर्वी प्राणपुर पंचायत अंतर्गत शांति मोड़ स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के निकट गुरुवार को मुख्य सड़क पर पानी चढ़ने से आवागमन पूरी तरह प्रभावित हो गयी है। लोग नाव के माध्यम से आवागमन कर रहे हैं। इसके साथ विभिन्न क्षेत्रों में बाढ़ का पानी तेजी से घुस रहा है। स्थानीय लोगों को भय सता रहा है कि बीते कई दिन पहले ही बाढ़ के दंश से निकले हैं। स्थानीय ग्रामीण सफीकुल शेख, सेताउल पैकर, बबलू शेख, अजहर शेख, रफीक शेख, अमेनुर मास्टर, नोबि शेख सहित दर्जनों लोगों ने बताया कि फिर एक बार बाढ़ का भय सताने लगा है। बताया है शांति मोड़ के निकट से पंचायत के विभिन्न गांवों में तेजी से पानी घुस रहा है। पूर्वी प्राणपुर पंचायत के अलावा श्रीधर दियारा पंचायत के साहेब टोला सहित अन्य टोला-मोहल्ला विभिन्न क्षेत्रों में पानी घुस रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि शान्ति मोड़ बाजार से श्रीधर कॉलोनी नंबर-10 तक जाने वाले मुख्य सड़क पर तीन जगह मुख्य सड़क ढह गया है, जिससे आने-जाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों ने उक्त सड़क पर आवागमन के लिए तत्काल वैकल्पिक व्यवस्था की मांग की है। इस संबंध में बीडीओ सह सीओ जयंत कुमार तिवारी ने बताया कि बढ़ते जलस्तर की लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। बाढ़ से निपटने के लिए प्रशासन पूरी तरह तैयार है।

हिरणपुर में 11 गोवंश के साथ एक पिकअप वाहन जब्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़/हिरणपुर : जिले के हिरणपुर थाना क्षेत्र में पुलिस ने प्राप्त सूचना पर शिलकुट्टी स्थित मुख्य सड़क पर थाना प्रभारी ने एक पिकअप वाहन संख्या जेएच 16 एच 7567 पर लदे 07 गाय और 4 बछड़े को बरामद किया। पिकअप में कुल 11 गायों को पुलिस ने बजरंग दल संगठन की मदद से पकड़ा। वाहन के सामने पर बड़ी बड़ी अक्षरों पर लिखा हुआ था जय श्री राम का नारा, वहीं घटनास्थल से ड्राइवर भागने में सफल हुआ। सूत्रों की माने तो बिहार भागालुर के भोरिकोंचा से झारखण्ड के गोड्डा जिला बांका से होकर गुजरने वाले रास्ते झारखण्ड बिहार बंगाल के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में गायों को सुंदरपहाड़ी धर्मपुर मोड लिट्टीपाड हिरणपुर पाकुड और सीमावर्ती क्षेत्रों के अलावा बांग्लादेश भी भेजा जाता है। कई हिंदूवादी संगठन इस गौ-तस्करी को रोकने की कोशिश करते हैं। वे अक्सर गौ-तस्करों का पीछा करते हैं लेकिन सफल नही हो पाते। बहुत कम ही सफल हो पाते है और पुलिस को सूचित करते हैं। आगे की जांच कर पुलिस मामले की गहन छानबीन कर रही है। पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि गायों को कहां से लाया गया था और कहां ले जाया जा रहा था।

विद्यार्थी को अच्छे इंसान बनाना शिक्षक की वास्तविक सफलता है : प्राचार्य

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिले के मॉडल कॉलेज राजमहल में 5 सितंबर को धूमधाम से शिक्षक दिवस मनाया गया। कॉलेज के सेमिनार हॉल में सर्वपल्ली राधाकृष्णन के तैल्य चित्र पर माल्यार्पण कर तथा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस दौरान प्राचार्य डॉ रणजीत कुमार सिंह व छात्र-छात्राओं ने केक काटकर भारत रत्न सर्वपल्ली राधाकृष्णन जन्म जयंती मनाई।कार्यक्रम में कॉलेज के शिक्षक व छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

शिक्षक छात्रों के जीवन मे दिशा दिखाता है:

प्राचार्य डॉ सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राधाकृष्णन एक महान दार्शनिक और विद्वान होने के साथ-साथ एक कुशल शिक्षक भी थे। उन्हीं की याद में हर साल भारत में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों के सपनों को पूरा करने में मदद करता है और जीवन को सफलता की ओर ले जाता है। शिक्षक के मेहनत और प्रेरणा से ही छात्र-छात्राएं अपने सपनों को पूरा करते है। किताबी ज्ञान एवं जीवन ज्ञान शिक्षक से ही प्राप्त हो सकता है। विद्यार्थी को अच्छे इंसान बनाना शिक्षक की वास्तविक सफलता है। तर्क संगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो,जिसमें करुणा और सहानुभूति, साहस और विवेक, रचनात्मक वैज्ञानिक चिंतन व नैतिक मूल्यों का समन्वय हो।एक अच्छा शिक्षक जीवन में दिशा दिखाता है,जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करता है। उपरांत कॉलेज परिसर में फलदार वृक्षा रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। किताब ज्ञानवर्धक है तो पेड़ जीवनदायी।

छात्रों ने दिया उपहार:

कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने प्रचार्ज डॉ रणजीत कुमार सिंह को उपहार पेड़ व अन्य देकर सम्मानित किया। जंहा प्रतिभा रक्षित ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन का पेंटिंग दी,वंही अन्य छात्र छात्राओं ने विभिन्न उपहार व वृक्ष देकर प्राचार्य डॉ सिंह को सम्मानित किया।

शिक्षक सही रस्ते पर चलना सिखाते है:

इस क्रम में छात्रा प्रतिभा रक्षित, सुधा कुमारी,शिवम कुमार सहित अन्य छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम को संबोधित कर जीवन मे शिक्षक का महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षक हमारे जीवन का मार्गदर्शक है,जो हमे सही रास्ते पर चलना सिखाते है।

डीसी की सक्रियता लाई रंग, जिले के गंगा नदी में फिर से दौड़ेगी मोटर वोट एंबुलेंस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिले में डीएमएफटी फंड से स्वास्थ्य विभाग को उपलब्ध कराए गए मोटर वोट एंबुलेंस पिछले कई वर्षों से तकनीकी खराबियों के कारण बंद पड़ा हुआ था। जहां गंगा नदी के दियारा इलाकों में रहने वाले गर्भवती महिलाओं समेत अन्य लोगों को बेहतर इलाज हेतु इस मोटर वोट एंबुलेंस की सुविधा जिला प्रशासन के पहल पर शुरू की गई थी जो कुछ दिनों तक तो ठीकठाक चला मगर फिर देखरेख के अभाव में यह एक शोभा की वस्तु बनकर गंगा नदी में इधर उधर तैरता नजर आ रहा था। उधर बाढ़ के दिनों में जब गंगा नदी का जलस्तर बढ़ जाता है और ऐसी स्थिति में जब दियारा इलाकों में रहने वाले लोग बीमार पड़ते थे तो उन्हें बेहतर इलाज हेतु सदर अस्पताल लाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। उधर मोटर वोट एंबुलेंस खराब होने की जानकारी जब डीसी हेमंत सती को मिली तो उन्होंने तुरंत सक्रियता दिखाते हुए एक बार फिर से मोटर वोट एंबुलेंस की सुविधा शुरू करने का निर्देश सिविल सर्जन डॉ. रामदेव पासवान को दिया। जिसके बाद शुक्रवार को सिविल सर्जन डॉ. रामदेव पासवान ने सदर अस्पताल के चिकित्सक डॉ. मुकेश पटेल व अन्य स्वास्थ्य कर्मी के साथ बिजली घाट पर लगे मोटर वोट एंबुलेंस की वस्तुस्थिति का निरीक्षण किया।

जेल गेट के समीप ईरिक्शा पलटने से छोटा पचगढ़ निवासी युवक का टूटा पैर, सदर अस्पताल में भर्ती

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के आजाद नगर रोड स्थित जेल गेट के पास तेज रफ्तार दो ई रिक्शा की आमने सामने की टक्कर में एक ईरिक्शा सड़क किनारे पलट जाने से उसमें सवार छोटा पचगढ़ निवासी युवक मुन्ना उरांव पिता घासू उरांव का दाहिना पैर टूट गया। उधर इस सड़क दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों व परिजनों की मदद से घायल युवक को बेहतर इलाज हेतु सदर अस्पताल लाया गया जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक ने फौरन इलाज किया। उधर सड़क दुर्घटना को लेकर घायल युवक ने बताया कि उसके रिश्तेदार का सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है जहां वो उसे खाना देने के लिए ई रिक्शा पर सवार होकर सदर अस्पताल आ रहा था। इसी बीच जेल गेट के समीप सामने से तेज रफ्तार में आ रही एक अन्य ई रिक्शा चालक ने जोरदार टक्कर मार दिया जिसके कारण जिस ई रिक्शा पर वो बैठा हुआ था वो सड़क किनारे पलट गया और वो गंभीर रूप से घायल हो गया है। फिलहाल गंभीर रूप से घायल युवक का सदर अस्पताल में इलाज जारी है।

साहिबगंज में कांग्रेस जिला अध्यक्ष चयन प्रक्रिया शुरू, पर्यवेक्षकों ने की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : कांग्रेस में जिला अध्यक्ष की चयन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इसी सिलसिले में आज दिनांक 05 सितंबर 2025 को साहेबगंज के आजाद नगर छोटा पंचगढ़ स्थित स्वयंवर बैंक्विट हॉल में कांग्रेस की एक अहम बैठक हुई जिसमें जिला के अध्यक्ष चयन के एआईसीसी पर्यवेक्षक टोकिया प्रभु जी, प्रदेश उपाध्यक्ष सह जिला पर्यवेक्षक मणिशंकर एवं अल्पसंख्यक आयोग के शमशेर आलम एवं प्रदेश महासचिव तनवीर आलम मुख्य रूप से उपस्थित थे। बैठक में जिला कांग्रेस कमिटी,सभी प्रखंड कांग्रेस कमिटी, सभी वरिष्ठ नेताओं, सभी प्रखंड अध्यक्षों, सभी मण्डल अध्यक्षों, सभी अग्रणी मंच, मोर्चा एवं विभागों के अध्यक्षों एवं प्रखण्ड पर्यवेक्षकों की उपस्थिति में एआईसीसी पर्यवेक्षक ने जिला अध्यक्ष के चयन की विधिवत घोषणा करते हुए चयन प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक समझाया। उन्होंने सभी कांग्रेसजनों से अपील किया कि वो मुझसे मिलकर इस अपने जिला के लिए अध्यक्ष के लिए अपना सुझाव दें। इस बार अध्यक्ष का चुनाव पूरी निष्पक्षता के साथ संगठन के लोगों के सलाह मशवरा को ध्यान में रखकर ही किया जाएगा। आपसे अनुरोध है कि आप ऐसे कांग्रेसी का नाम का सुझाव दें जो पूरी तरह से कांग्रेस के विचारधारा से जुड़ा हो और उसका पालन करता हो, जो समाज के हर धर्म, हर वर्ग, हर जाति को साथ लेकर चलने की क्षमता रखता हो जो स्वच्छ छवि का हो और उसके परिवार का कोई भी सदस्य किसी अन्य पार्टी से संबंध नहीं रखता हो। हम ऐसे लोगो से दूरी बनाना चाहते जो हर पार्टी में रह कर बस अपने फायदे के लिए पार्टी का इस्तेमाल करते हैं। कल से हम प्रत्येक दिन दो से तीन प्रखंड का दौरा कर प्रखंड कांग्रेस कमिटी की बैठक में उस प्रखंड के कार्यकताओं और नेताओं से मिलकर जिला अध्यक्ष का फॉर्म वितरण करेंगे तथा साथ ही सभी कार्यकताओं से उनका नजरिया कलमबद्ध करेंगे। वहीं प्रदेश उपाध्यक्ष सह जिला पर्यवेक्षक मणिशंकर ने कहा कि कल से हम प्रखण्ड का दौरा शुरू कर रहे हैं। कल दिनांक 6 सितंबर दिन शनिवार को साहेबगंज सदर, बोरियो एवं तालझारी में, दिनांक 7 सितंबर को मंडरो एवं बरहेट, 8 सितंबर को पतना एवं बरहरवा, 9 सितंबर को राजमहल एवं उधवा में बैठक कर जिला अध्यक्ष से संबंधित रायशुमारी एवं चुनाव हेतु फार्म का वितरण किया जाएगा। 10 सितंबर को जिला अध्यक्ष के लिए साहेबगंज परिसद में सभी आवेदन का संकलन किया जाएगा। बैठक के पश्चात प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए एआइसीसी पर्यवेक्षक टोकिया प्रभु जी ने कहा कि संगठन सृजन अभियान के तहत जिला अध्यक्ष के चयन को लेकर मेरा प्रवास आपके जिले में हुआ है। कांग्रेस के संगठन को पुनः स्थापित करने के लिए जिला अध्यक्ष के चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्षता के साथ पूरा करने की जिम्मेदारी हमें दी गई है।

संक्षिप्त खबरें

इम्मानुएल मिशन स्कूल में धूमधाम से मना शिक्षक दिवस

बरहेट: प्रखंड क्षेत्र के कदमा स्थित इम्मानुएल मिशन स्कूल की ओर से धूमधाम से शिक्षक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम समारोह में मुख्य अतिथि झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह प्रमुख बर्नार्ड मरांडी, जिला संगठन सचिव छवि हेंब्रम,संसद प्रतिनिधि संजीव समू हेंब्रम,वंशज मंडल मुर्मू डायरेक्टर संजय मढैया, प्रधानाध्यापक पूनम कुमारी दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। इसके पूर्व सभी अतिथियों ने बारी बारी से डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। तत्पश्चात नाटकीय, सांस्कृतिक कार्यक्रम स्कूली बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए। जिला संगठन सचिव छवि हेंब्रम ने कहा कि शिक्षा के प्रति शिक्षकों का अहम योगदान रहता है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ-प्रदर्शक होता है। जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। कहा जाए तो शिक्षक ही समाज का आईना होता है। आदि काल में भी जब समाज सभ्य नहीं था, तब भी शिक्षक की भूमिका में कुछ लोग होते थे जो सभी को रहने और ज्ञान बढ़ाते थे। उसके द्वारा समाज में दिए गए योगदानों के बदले स्वरुप दिया जाता है। किसी भी छात्र के लिए उनकी पहली गुरु माता होती है, दूसरे पिता और तीसरे नंबर पर उस गुरु का नाम आता है जो किसी बालक को इस लायक बनाते हैं कि वह अपने ज्ञान से परिवार और समाज को और आगे बढ़ा सकें। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूज्यनीय रहा है। कोई उसे गुरु कहता है तो कोई अध्यापक, टीचर या आचार्य का नाम देता है। ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं जो सभी को ज्ञान देता है, बारी-बारी से सभी अतिथियों ने अपनी अपनी बात विचार साझा किए। मौके पर समदा सोरेन शिक्षक अजय कुमार, गायत्री कुमारी, सृष्टि सोरेन, मंजू कुमारी, प्रेमशिला सोरेन और अन्य अभिभावक बच्चे मौजूद थे।

एक व्यक्ति को कुछ युवकों ने मारकर बुरी तरह किया घायल, पुलिस ने एक युवक को धर-दबोचा

साहिबगंज: जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के एक व्यक्ति को कई युवकों ने मार कर बुरी तरह घायल कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार बड़ी धोबी झरना निवासी स्वर्गीय गंगा विश्व सिंह का 35 वर्षीय पुत्र गणेश कुमार सिंह ने बताया कि बच्चों-बच्चों में गेंद खेलने में विवाद होने के कारण कृषि विभाग लोहंडा के रहने वाले निवासी कल्लू का पुत्र अजय कुमार कुछ अज्ञात 15 से 20 युवकों के साथ गणेश कुमार सिंह के घर पर आकर लाठी-डंडा व हथियार के साथ उनको मार कर बुरी तरह घायल कर दिया। जहां अन्य लोगों के द्वारा जिरवाबाड़ी थाना पुलिस को सूचना दी गई, सूचना मिलते ही पुलिस दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंच कर एक युवक अजय कुमार को पुलिस ने धर-दबोचा और गाड़ी में बैठाकर थाना लेकर चली गई। जहां घायल उक्त व्यक्ति को पुलिस ने इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज भेज दिया। जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक ने उक्त घायल व्यक्ति का इलाज किया। उक्त व्यक्ति का दोनों हाथ धारदार हथियार से बुरी तरह जख्मी था और शरीर में भी गंभीर चोटे लगी थी। इधर पुलिस घटना की मामले की छानबीन में जुट गई है।

राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान से नवाजी गई हीरा सरिता टुडू

बरहेट: प्रखंड के जे.ई.पी.सी कार्यालय रांची में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह कार्यक्रम में बरहेट डायट संकाय सदस्य सह प्रभारी हीरा सरिता टुडू को उत्कृष्ट शिक्षक प्रशिक्षक कार्य के लिए झारखंड माध्यमिक शिक्षा के डायरेक्टर राजेश प्रसाद, बांके बिहारी एवं प्रदीप कुमार चौबे डिप्टी डायरेक्टर जे सी ई आर टी के हाथों से सम्मानित हुए। इस दौरान स्मृति चिन्ह, प्रशसित्त पत्र के साथ सॉल देकर उन्हें सम्मानित किया गया। डायट संकाय सदस्य सह प्रभारी हीरा सरिता टुडू ने कहा कि पूरे राज्य भर चिन्हित शिक्षक प्रशिक्षक को शिक्षक दिवस के अवसर पर जे ई पी सी कार्यालय में सम्मानित किया गया, आगे बताया कि जिले के बेहतर शिक्षक प्रशिक्षक एवं बेहतर सुगमकर्ता के रूप में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान से नवाजा गया है। सम्मान पाकर काफी गौरवान्वित महसूस कर रही हूं। बल्कि इसी तरह आगे भी कार्य को शिक्षा के प्रति निरंतर जारी रहेगा।

जुलूस-ए-मोहम्मदी में शामिल हुए राजमहल विधायक

साहिबगंज: जिला के राजमहल प्रखंड में जश्न ए मिलादुन्नबी पर जुलूस ए मोहम्मदी कमेटी की ओर से शुक्रवार को जुलूस निकाला गया। जुलूस में राजमहल, नया बाजार, मटियाल, राजवाड़ा, फुलवरिया, मध्य नारायणपुर, मुर्गी टोला, लखीपुर, मनसिंघा, महाजन टोला, बादल टोला, कर्बला, फेलू टोला, डकैत टोला, रानीगंज, कछुआ को, मजहर टोला, बाबू टोला, खोज पाड़ा, बेंगडुब्बी, आदि गांव से तिरंगा व पारंपरिक झंडा बैनर तख्ती, माइक सेट के साथ हजारों की संख्या में नारे लगाते हुए फुलवरिया चौक में जमा हुए। मौके पर मुख्य अतिथि राजमहल विधायक मो. ताजुद्दीन उर्फ एमटी राजा जुलूस में शामिल हुए। इसके बाद वहां से पैदल चलकर नगर पंचायत कार्यालय के पास बस अड्डा में बने सभा स्थल पहुंच कर संपन्न हुआ। मुख्य सभा स्थल से विधायक ने संबोधित करते हुए मिलादुन्नबी की शुभकामनाएं दी और भव्य आयोजन के लिए आयोजन कमेटी के प्रति आभार व्यक्त कर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। साथ ही अमन चैन की दुआ की। मौलाना को सम्मानित भी किया गया। मौके पर मौलाना एहसानू दानिश रजति, मुफ्ती मोहम्मद राजाउल हक, अब्दुल रकीब, नूर इस्लाम, अब्दुल बासित मोहम्मद सुल्तान और अन्य मौलाना द्वारा शांति अमन चयन की दुआ कर तकरीर आदि पेश की गई। साथ ही हजारों लोगों को संबोधित करते हुए इस्लाम और नबी साहब के संबंध में विस्तार पूर्वक बताया। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर थाना प्रभारी राजमहल ने दलबल के साथ लगातार क्षेत्र में गस्ती कर रहे थे और चौक-चौराहे पर सुरक्षा को लेकर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल मौजूद थे। मौके पर विधायक प्रतिनिधि मो. मारूफ उर्फ गुड्डू, जिप सदस्य अब्दुल बारीक, केताबुद्दीन शेख एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

सड़कों पर बदसलूकी-मारपीट, बिहार बंद से बीजेपी को क्या मिला?

'मां' के सम्मान के लिए हर जिले में प्रोटेस्ट, क्या खउब्र के महिला वोट पर नजर

पटना। जहानाबाद की दीप्ति रानी टीचर हैं। 4 सितंबर की सुबह स्कूल जा रही थीं। अरवल मोड़ पर प्रोटेस्ट कर रहे बीज९पी के कार्यकताओं ने उन्हें रोक लिया। गाड़ी से उतारा और आगे नहीं जाने दिया। एक वीडियो सामने आया जिसमें दो महिला कार्यकर्ता उनका हाथ पकड़कर ले जा रही हैं। वहां पुलिसवाले भी थे, लेकिन बीजेपी कार्यकताओं को रोक नहीं पाए। ये बीजेपी के बिहार बंद का एक किस्सा है। महागठबंधन की वोटर अधिकार यात्रा के दौरान मंच से ढट मोदी की मां को अपशब्द कहे जाने के खिलाफ इखढ ने ये बंद बुलाया था। 4 सितंबर को सुबह 7 से दोपहर 12 बजे तक चले बंद के दौरान जहानाबाद जैसी कई घटनाएं हुईं। भागलपुर में पति-पत्नी से धक्का-मुक्की की गई। पटना हाई कोर्ट के जज की गाड़ी रोकी गई। दरभंगा में 27 अगस्त को वोटर अधिकार यात्रा के दौरान पीएम मोदी की मां को गाली दी गई थी। इसके 7वें दिन 2 सितंबर को पीएम मोदी ने सामने आकर जवाब दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- बिहार में कांग्रेस के मंच से मेरी मां को गालियां दी गईं। ये गालियां सिर्फ मेरी मां का अपमान नहीं, ये देश की मां-बहन, बेटी का अपमान है। बिहार बंद का असर सभी 38 जिलों में दिखा। पटना में डाक बंगला चौराहा और इनकम टैक्स गोलंबर पर दो घंटे ट्रैफिक थमा रहा। बंद का असर सुबह 8:30 बजे से 10:30 बजे तक सबसे ज्यादा रहा। पटना के बाहर नेशनल और स्टेट हाईवे बंद कर दिए गए। दुकानें जबरन बंद करा दी गईं। गाड़ियां रोक दी गईं। बंद के असर पर सीनियर जर्नलिस्ट प्रवीण बागी कहते हैं, इससे बीजेपी को नुकसान ही हुआ है। पीएम मोदी के लिए अपशब्द कहे जाने से लोगों को उनसे सहानुभूति थी। वे विपक्ष पर गुस्सा थे। अब बंद के दौरान इखढ के कार्यकताओं की लोगों से झड़प की खबरों ने पूरी सहानुभूति खो दी है। बंद से लोगों को परेशानी ही हुई है। प्रवीण बागी आगे कहते हैं, ह्यये बंद बेवजह बुलाया गया था। इसका कोई औचित्य नहीं था। अगर बंद बुला ही लिया था तो जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए थी। पहले यही RJD करती थी। इस बंद से इखढ और RJD में अंतर खत्म हो गया। पॉलिटिकल एनालिस्ट प्रमोद रंजन कहते हैं, 'BJP ने ये बंद अपने कोर वोट बैंक में जोश भरने के लिए बुलाया था। ऐसे मुद्दे दिल को छूते हैं। पार्टियां सिर्फ चुनाव को देखकर ही मुद्दे नहीं उठातीं। इखढ प्रधानमंत्री मोदी को महानायक की तरह स्थापित करना चाहती है। इसलिए उनसे जुड़े छोटे-से-छोटे इश्यू उठाती है। इसके जरिए पार्टी प्रधानमंत्री की महानायक जैसी छवि बनाए रखना चाहती है। क्या इससे वोट भी मिलते हैं? प्रमोद रंजन कहते हैं, 'PM को गाली और बिहार बंद के मुद्दे से बीजेपी के वोट बैंक पर असर नहीं पड़ने वाला। ऐसे मुद्दे शहरी और पढ़े-लिखे तबके पर असर डालते हैं। यह वर्ग पहले से बीजेपी के साथ है। वैसे भी बिहार में अगड़ा, पिछड़ा और दलित की नहीं, जाति की राजनीति होती रही है। पिछड़ा-अति पिछड़ा नीतीश के साथ हैं। इस मुद्दे की वजह से ये वोट बैंक सीधे इखढ से जुड़ जाएगा, ऐसा नहीं है। उल्टा इससे विपक्ष को भी मौका मिल गया है। कांग्रेस और आरजेडी नेता बीजेपी नेताओं के पुराने बयान याद दिला रहे हैं। इसलिए बंद का मुद्दा बीजेपी पर उल्टा असर डालेगा। बिहार बंद पर हमने आम लोगों से भी बात की। गोविंद मित्र रोड पर रहने वाले सुनील कुमार गुप्ता दवा कारोबारी हैं। वे कहते हैं, ह्यराजनीति में अपशब्दों का इस्तेमाल आम है। इस मुद्दे पर बिहार बंद करना जायज नहीं है। इखढ का गलत फैसला था। पब्लिक इससे परेशान हुई है। बंद की टाइमिंग के बारे में सुनील कहते हैं, ह्यसुबह में सब बंद करा देना गलत है। BJP भले इससे फायदा हो जाए, लेकिन लोगों का तो नुकसान ही है। ऑटो चलाने वाले नथुनी शाह कहते हैं, ह्यबंद से राजनीति करने वालों तो फायदा होता है। हमारा तो नुकसान ही है। वहीं, नौशाद अहमद बताते हैं, बंद से काम-धंधे पर जाने वाले लोग परेशान हुए। अच्छा होता कि गाली देने वाली शख्स की छान-बीन होती। बंद के दौरान इखढ के कार्यकर्ता ज्यादा एक्टिव दिखे। JDU के कार्यकर्ता भी मौजूद थे, लेकिन बहुत कम। पॉलिटिकल एनालिस्ट प्रवीण वर्मा कहते है, ह्यबंद के दौरान NDA की दूसरी पार्टियां सड़क पर नहीं दिखी। बड़े नेताओं ने भी दूरी बनाए रखी। इनकम टैक्स गोलंबर पर जरूर हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा और JDU के झंडे नजर आए। इसके पीछे बड़ी वजह महिला वोट बैंक की राजनीति बताई जा रही है। BJP ने महिला सम्मान के नाम पर बंद बुलाया था। बिहार में महिला वोट बैंक खउब्र का माना जाता है। ये भी कहा जाता है कि नीतीश सरकार महिला वोट बैंक पर ही टिकी हुई है। 2015 के विधानसभा चुनाव में 51% पुरुषों के मुकाबले 60.4% महिलाओं ने वोटिंग की थी। तब नीतीश कुमार की पार्टी JDU का लालू प्रसाद यादव की पार्टी RJD से गठबंधन था। JDU 101 सीटों पर लड़ी थी। इसमें से 71 सीटें जीती। महागठबंधन ने 178 सीटें जीती थीं। महिलाओं के वोट बढ़ने की वजह महिलाओं के रिजर्वेशन और साइकिल योजना को माना गया। तब तक साइकिल योजना के शुरू हुए 10 साल हो गए थे और लड़कियां फर्स्ट टाइम वोटर बन चुकीं थी। 21 जून, 2025 को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जीविका दीदियों और कर्मचारियों से जुड़े दो बड़े फैसले लिए थे। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी जीविका दीदियों को 3 लाख रुपए से ज्यादा के बैंक लोन पर ब्याज में 3% की कटौती कर दी। उन्हें सिर्फ 7 प्रतिशत ब्याज देना होगा। पहले 3 लाख रुपए से ज्यादा के लोन पर 10% ब्याज देना पड़ता था। इसके अलावा 1.4 लाख जीविका कर्मचारियों की सैलरी डबल कर दी।

बिहार को लेकर केरल कांग्रेस की टिप्पणी पर बवाल

भाजपा ने पूछा- 'बिहारियों की तुलना बीड़ी से?'

पटना। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी की वोट अधिकार यात्रा के दौरान पीएम मोदी और उनकी मां को गाली देने के बाद सियासी गलियारी में लगी आग अभी बुझी नहीं है कि एक और बड़ा बवाल मच गया। भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस पर मां के अपमान के बाद अब बिहार के अपमान करने का आरोप लगा है। भाजपा की ओर से कांग्रेस पार्टी की केरल इकाई की ओर से किया गया सोशल मीडिया पोस्ट का स्क्रीनशॉट खूब शेयर किया जा रहा है। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी और प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने इस मुद्दे पर कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। आइए जातने हैं क्या मामला? किसने क्या कहा?...दरअसल, कांग्रेस की केरल इकाई द्वारा एक पोस्ट लिखा गया। इसमें लिखा गया था, "Bidis and Bihar start with B..."यानी "बीड़ी और बिहार 'B' से शुरू होते हैं"। यह पोस्ट तुरंत वायरल हो गया। सोशल मीडिया पर कांग्रेस को बिहार के युवाओं ने ट्रोल किया। इसके बाद भाजपा ने इसका स्क्रीनशॉट शेयर कर कांग्रेस पर निशाना साधा। हालांकि, इस पोस्ट को अब हटा लिया गया है। भाजपा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी ने एक बार फिर अपनी मानसिकता को उजागर कर दिया है। कांग्रेस नेताओं का बिहार और बिहारियों के प्रति अपमानजनक रवैया नया नहीं है। केरल कांग्रेस की पोस्ट से साफ हो गया है कि कांग्रेस का असली चेहरा क्या है? Bihar Election: लालू प्रसाद ने पीएम मोदी ने पूछा यह सवाल, तेजस्वी यादव ने बिहार बंद को लेकर लगाया बड़ा आरोप प्रदेश अध्यक्ष ने सवाल उठाया कि क्या कांग्रेस पार्टी बिहारियों की तुलना बीड़ी से कर रही है?

युवक की बिजली के खंभे से बांधकर पिटाई

नवादा। रोह प्रखंड स्थित मरूई गांव में बुधवार को एक युवक की बिजली के खंभे से बांधकर पिटाई का मामला सामने आया है। मोहम्मद जीशान ने बताया कि उनकी छोटी बहन के साथ स्कूल में कुछ लड़कों ने मारपीट की। इसका विरोध करने गईं उनकी मां के साथ भी मारपीट की गई। जब जीशान ने इस बारे में राजू साह से पूछताछ की, तो राजू और उनके परिवार के 2-3 लोगों ने मिलकर उन्हें बिजली के खंभे से बांध दिया। इस दौरान पुलिस मौके पर पहुंची। जीशान का आरोप है कि पुलिस ने उन्हें अस्पताल नहीं पहुंचाया और ई-रिक्शा से धकेल दिया। दूसरे पक्ष के राजू साह ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है।

संक्षिप्त डायरी

सीवान में पुलिस की बड़ी कार्रवाई, ज्वेलर्स पर फायरिंग और रंगदारी कांड के 5 अपराधी गिरफ्तार

सीवान। महाराजगंज पुलिस ने ज्वेलर्स एवं बर्तन भंडार पर फायरिंग और रंगदारी मामले में बड़ी सफलता हासिल की है। गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने पांच अपराधियों को हथियार और मोबाइल फोन के साथ गिरफ्तार किया है। इनके पास से दो देसी कट्टा, छह जिंदा कारतूस और पांच मोबाइल बरामद किए गए हैं।जानकारी के अनुसार, अपराधी महुआरी रेलवे ओवरब्रिज पुल के पास इकट्ठा होकर बड़ी लूट की योजना बना रहे थे। इसी बीच पुलिस और DIU टीम ने संयुक्त छापेमारी कर इन्हें दबोच लिया। पुलिस बल को देखकर कुछ अपराधी भागने लगे, लेकिन पांच अपराधियों को पकड़ लिया गया। एक अपराधी अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया। एसडीपीओ अमन ने प्रेसवार्ता में बताया कि 28 अगस्त को रिसौरा बाजार स्थित नेहा ज्वेलर्स और बर्तन भंडार में अपराधियों ने फायरिंग की थी। इसके बाद 31 अगस्त को 20 लाख रुपये रंगदारी की मांग भी की गई थी। इसी मामले में पुलिस लगातार छापेमारी कर रही थी। गिरफ्तार अपराधियों ने पूछताछ में इस घटना को अंजाम देने की बात कबूल की है। गिरफ्तार अपराधियों की पहचानः गिरफ्तार अपराधियों की पहचान इस प्रकार हुई है। राहुल कुमार, पिता उमेश यादव, निवासी महुआरी। रुपेश कुमार यादव, पिता मनोज यादव, निवासी महुआरी। चंदन कुमार, पिता शैलेन्द्र सिंह, निवासी रिसौर। बिपिन कुमार प्रसाद, पिता वैधनाथ प्रसाद, निवासी सूरबीर। शक्ति माया पाण्डेय, पिता विनय पाण्डेय। वहीं, महुआरी निवासी लालबाबू यादव का पुत्र बिट्टू कुमार यादव फरार चल रहा है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार छापेमारी कर रही है।

209.59 करोड़ रुपए की सौगात देंगे सीएम नीतीश कुमार

जगदीशपुर। जिले के जगदीशपुर नगर के नया टोला स्थित बस पड़ाव मैदान में शनिवार 6 सितंबर को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जिले के सातों विधानसभा क्षेत्र को बड़ी सौगात देंगे। सीएम करीब 209.59 करोड़ रुपये की 140 योजनाओं का डिजिटल उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। इनमें 133.98 करोड़ रुपये की 76 योजनाओं का शिलान्यास और 75.61 करोड़ रुपये की 64 योजनाओं का उद्घाटन शामिल है।सीएम के कार्यक्रम की शुरूआत बिहिया चौरस्ता से होगी। वहां मुख्यमंत्री 11 योजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास करेंगे। इसके बाद वे जगदीशपुर के बस पड़ाव मैदान पहुंचेंगे। योजना एवं विकास, पंचायती राज, नगर विकास एवं आवास, शिक्षा, ग्रामीण कार्य, स्वास्थ्य, अल्पसंख्यक कल्याण, अनुसूचित जाति-जनजाति कल्याण, पशु एवं मत्स्य संसाधन, लघु जल संसाधन, खनन एवं भू-तत्व सहित करीब एक दर्जन विभागों की योजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया जाएगा। मौके पर विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का सीएम निरीक्षण करेंगे और लाभुकों से सीधा संवाद भी करेंगे। इस दौरान जीविका दीदी, सामाजिक सुरक्षा पेंशनधारी, विद्युत मुक्त बिल उपभोक्ता, आवास योजना के लाभार्थी, आशा कार्यकर्ता, किसान सलाहकार और पीडीएस दुकानदार मौजूद रहेंगे।

'मेरे पति को जान से मारने के बाद करंट दिया'

पटना। बिहार राज्य महिला आयोग में एक अजीबो-गरीब मामला सामने आया है। दो दोस्त ननकू यादव (40) और ज्ञानी यादव (41) मुर्गा और दारू को लेकर आपस में लड़ गए। जिसके बाद ननकू ने पैसे देने से मना कर दिया। इसके बाद ज्ञानी ने उसका घर तक पीछा किया और अंत में उसके साथ मारपीट की। ज्ञानी ने अन्य लोगों के साथ मिलकर ननकू को इतना मारा कि उसकी मौत हो गई। फिर उसे करंट लगाकर पोल से बांध दिया, ताकि यह एक्सीडेंट लगे। इस घटना के बाद ननकू की विधवा पत्नी गीता देवी (36) ने महिला आयोग से गुहार लगाई है। यह मामला गया के धनगाई थाना क्षेत्र के कठौतिया गांव का है। गीता ने कहा कि, ननकू और ज्ञानी बचपन के दोस्त थे। जून में दोनों के बीच मुर्गा और दारू को लेकर नोक झोंक हुई थी। ज्ञानी मेरे पति को मुर्गा और दारू दोनों के पैसे देने को कह रहा था। मेरे पति ने कहा कि वह दारू लेकर आया है, तो उसी के पैसे देगा। वह मुर्गा नहीं खाएगा तो उसके पैसे क्यों दे। इसके बाद दोनों में तीखी बहस हुई। फिर मेरा पति वहीं सबकुछ छोड़कर घर आ गया। बीच में सब नॉर्मल हो गया। गीता ने बताया कि, फिर एक दिन 16 जुलाई को अन्य दोस्तों के साथ मिलकर दोनों की बैठकी हुई। इसमें फिर दोनों मुर्गा और दारू के पैसे के लिए लड़ने लगे। फिर मेरे पति वहां से निकल गया और घर आने लगे। इस बीच ज्ञानी ने उनका पीछा किया और पत्थर मारकर उनका सिर फोड़ दिया। वह पीछा करते हुए 7 बजे के करीब मेरे घर पहुंचा और मेरे पति के साथ मारपीट की। फिर 1 घंटे बाद ज्ञानी करीब 40 लोगों के साथ मेरे घर में घुसा और मेरे पति को इतना मारा कि उन्होंने अपना दम तोड़ दिया। गीता के मुताबिक, इसके बाद बांस में मेरे पति की लाश बांध दी, जिसमें टोका फंसाकर बिजली आती थी।

ईद मिलाद-उन-नबी पर मुजफ्फरपुर और सीवान में भव्य जुलूस, सुरक्षा के कड़े इंतजाम

मुजफ्फरपुर/सीवान। इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिन और इंतकाल की याद में मनाया जाने वाला पर्व ईद मिलाद-उन-नबी गुरुवार को पूरे देशभर में धूमधाम से मनाया गया। बिहार के मुजफ्फरपुर और सिवान जिलों में भी मुस्लिम समुदाय ने बड़े उत्साह के साथ जुलूस-ए-मोहम्मदी का आयोजन किया।मुजफ्फरपुर में स्पीकर चौक, दामोदरपुर चौक, बड़ी ईदगाह, ब्रह्मपुरा और कोलहुआ चौक मस्जिद इलाके से जुलूस निकाले गए। जुलूस मदीना मस्जिद से रवाना होकर तिलक मैदान रोड तक पहुंचा। इस मौके पर मस्जिदों को रंग-बिरंगे बल्ब और फूलों से सजाया गया था। जगह-जगह जुलूस का फूलों से स्वागत किया गया और लोगों के लिए पानी, चाय और ठंडे पेय की व्यवस्था भी की गई। सीवान शहर के गांधी चौक, स्टेशन रोड, मस्जिद चौक, बबुनिया मोड़ और लालबाजार इलाके से जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाले गए। यह जुलूस मदीना मस्जिद से रवाना होकर हाफिज जी चौक मस्जिद तक पहुंचा। रजिस्ट्री कचहरी मोड़, जेपी चौक और थाना रोड से होते हुए यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस दौरान विभिन्न स्थानों से आए मौलानाओं ने पर्व की अहमियत पर प्रकाश डाला। मुजफ्फरपुर और सीवान दोनों जगह मुस्लिम समुदाय के युवा, बुजुर्ग और बच्चों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस्लामिक झंडों के साथ तिरंगा लेकर लोग शामिल हुए। स्थानीय लोगों और अन्य धर्मों के लोगों ने भी स्वागत में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिससे सामुदायिक सौहार्द का संदेश सामने आया। जुलूस के दौरान शांति बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन की ओर से पुख्ता इंतजाम किए गए। मुजफ्फरपुर में सिटी एसपी कोटा किरण ने और सिवान में एसपी मनोज तिवारी ने सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी की। सभी प्रमुख चौक-चौराहों पर पुलिस बल और मजिस्ट्रेट की तैनाती की गई। प्रशासन ने स्पष्ट किया कि सुरक्षा और शांति व्यवस्था प्राथमिकता है और किसी भी अनहोनी को रोकने के लिए चौकसी बरती गई।

पटना में आरएलएम की परिसीमन सुधार महारैली, कुशवाहा बोलेः बिहार के साथ अन्याय हो रहा है

पटना। राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम) के प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा आज पटना में बड़ी रैली करेंगे। यह रैली पटना के मिलर हाई स्कूल के ग्राउंड दोपहर एक बजे से होगी। पार्टी का दावा है कि यह रैली ऐतिहासिक होने वाली है। पार्टी की ओर से कहा गया कि आज तक ऐसी रैली नहीं हुई। उपेंद्र कुशवाहा ने कहा कि आज बेहद ही खास दिन है। आज पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन और बिहार के लेनिन कहे जाने वाले जगदेव प्रसाद का शहादत दिवस है। इस मौके पर पटना स्थित मिलर हाईस्कूल मैदान में राज्यस्तरीय संवैधानिक अधिकार परिसीमन सुधार महारैली का आयोजन किया जा रहा है। राज्यसभा सांसद उपेंद्र कुशवाहा ने कहा कि हमारी पार्टी केवल जनता के मुद्दों की राजनीति करती है। हम हंगामा करके राजनीति नहीं करते, बल्कि जनता की समस्याओं का हल निकालने पर ध्यान देते हैं। उन्होंने कहा कि रैली में विशेष एजेंडा के माध्यम से लोगों को अवगत कराने का काम करेंगे, जिसका विषय परिसीमन है। परिसीमन का मतलब लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों की संख्या का निर्धारण है, जो विभिन्न राज्यों में संविधान के अनुसार किया जाता है। दस साल पर जनगणना होगी। जनगणना के उपरांत जितनी आबादी उस वक्त की होगी, उसके अनुरूप लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों की संख्या भी बढ़ेगी।उपेंद्र कुशवाहा ने कहा कि संविधान की इस व्यवस्था के अनुसार सबसे पहली बार 1951 में आजादी के बाद जनगणना के आधार पर परिसीमन हुआ। 1961 की जनगणना के आधार पर परिसीमन हुआ, फिर 1971 की जनगणना के आधार पर भी परिसीमन हुआ। 1951 में लोकसभा सीट 494 थी, जो परिसीमन के बाद 1961 में 522 और 1971 में 543 हो गई। उसी व्यवस्था के अनुसार आगे भी परिसीमन होना चाहिए था। लेकिन, 1976 में जब आपातकाल लागू था, उस वक्त संविधान में परिवर्तन कर दिया गया और परिसीमन का कार्य रोक दिया गया, जो अभी तक रुका हुआ है। इस रुकावट से बिहार और उसके आसपास के कुछ राज्यों को बहुत नुकसान हो रहा है।

बिहार पुलिस अवर सेवा आयोग परीक्षा 5 केंद्रों पर होगी

7 सितंबर को सुबह 10 बजे से होगा एग्जाम, 9:30 बजे तक ही मिलेगी एंट्री

पटना। बिहार पुलिस अवर सेवा आयोग, पटना की ओर से आयोजित प्रवर्तन अवर निरीक्षक पद की प्रारंभिक लिखित प्रतियोगिता परीक्षा को लेकर समाहरणालय स्थित बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर सभागार में गुरुवार को ब्रीफिंग आयोजित की गई। जिलाधिकारी के निर्देश पर अपर समाहर्ता (राजस्व) मनोज कुमार ने सेक्टर पदाधिकारी और केंद्राधीक्षकों को परीक्षा संचालन से संबंधित दिशा-निर्देश दिए। अपर समाहर्ता ने बताया कि परीक्षा 7 सितंबर 2025 (रविवार) को दरभंगा जिला मुख्यालय के 5 परीक्षा केंद्रों पर एक पाली में सुबह 10:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षा को कदाचारमुक्त, पारदर्शी एवं निष्पक्ष बनाने के लिए आयोग की ओर से विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं, जिनमें जैमर और सीसीटीवी कैमरे की स्थापना, केंद्राधीक्षक कक्ष में हॉटलाइन (VoIP) फोन, अभ्यर्थियों की बायोमेट्रिक जांच, फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी शामिल है। उन्होंने स्पष्ट किया कि परीक्षा केंद्र पर सभी व्यवस्थाएं एक दिन पूर्व पूरी कर ली जानी चाहिए। परीक्षा से संबंधित सभी वीक्षकों एवं कर्मियों को समय पर प्रशिक्षण देकर आयोग के निर्देश पुस्तिका की जानकारी सुनिश्चित करनी होगी। सभी वीक्षक और कर्मी परीक्षा दिवस पर सुबह 7:00 बजे तक परीक्षा केंद्र पर उपस्थित रहेंगे। अभ्यर्थियों का प्रवेश 8:30 से 9:30 बजे तक ही होगा। इसके बाद किसी भी परीक्षार्थी को प्रवेश नहीं मिलेगा। बिना वैध प्रवेश-पत्र और पहचान-पत्र के केंद्र में प्रवेश वर्जित रहेगा। प्रवेश द्वार पर अभ्यर्थियों की सघन जांच के लिए पुलिस बल की तैनाती अनिवार्य होगी। पुरुष अभ्यर्थियों की जांच पुरुष पुलिसकर्मी और महिला अभ्यर्थियों की जांच महिला पुलिसकर्मी द्वारा की जाएगी। उन्होंने कहा कि किसी भी अभ्यर्थी को मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, कैलकुलेटर, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण या लिखित सामग्री परीक्षा केंद्र में लाने की अनुमति नहीं होगी। उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्रवाई करते हुए प्राथमिकी दर्ज की जाएगी। परीक्षा अवधि दो घंटे की होगी और अंतिम 30 मिनट में किसी को भी शौचालय जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। परीक्षा समाप्ति से पहले कोई भी परीक्षार्थी केंद्र नहीं छोड़ सकेगा। इस अवसर पर अपर समाहर्ता (आपदा प्रबंधन) सलीम अख्तर, जिला शिक्षा पदाधिकारी कृष्णानंद सदा, वरीय उप समाहर्ता निशांत कुमार, पवन कुमार यादव, अमृता कुमारी समेत कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

छोरियाँ चली गाँव में दिल और चुनौतियाँ जीत रही हैं कृष्णा श्रॉफ

फिटनेस आइकन और एंटरप्रेन्योर कृष्णा श्रॉफ छोरियाँ चली गाँव में शक्ति और शालीनता दोनों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के अर्थ को नए सिरे से परिभाषित कर रही हैं। यह शो जहां शारीरिक कौशल, मानसिक रणनीति और भावनात्मक मजबूती की परीक्षा लेता है, वहीं कृष्णा अपनी खासियत से सबका ध्यान खींच रही हैं — गहरी दोस्ती और फोकस प्रतिस्पर्धी भावना के बीच संतुलन बनाने की अपनी दुर्लभ क्षमता के लिए उभर कर सामने आई हैं। एरिका पैकार्ड के साथ उनका दोस्ती का रिश्ता बेहद मजबूत है, जबकि सुमुखी सुरेश (जिन्होंने निजी कारणों से शो छोड़ दिया) के साथ उनकी आपसी समझ और सम्मान, उनके स्वाभाविक जुड़ाव को दर्शाते हैं। फिर भी, कृष्णा ने इन संबंधों को कभी अपने फ़ैसलों या जीत के इरादे पर हावी नहीं होने देतीं। वह स्पष्ट सोच वाली हैं और पूरी तरह समर्पित, यह साबित करते हुए कि मजबूत रिश्ते और शानदार खेल दोनों एक साथ संभव हैं। वह जीत के लिए पूरी तरह तैयार हैं, लेकिन अपनी ईमानदारी से समझौता किए बिना।

अपनों से आगे बढ़कर कृष्णा ने हर किसी के साथ सार्थक रिश्ते बनाए हैं। अंजुम फ़कीह को वह बड़ी बहन कहती हैं और हाल ही में बाहर हुई रमीत संधू के साथ भी उनके पल बेहद सच्चे और दिल से जुड़े रहे। कृष्णा एक ऐसी गर्मजोशी और समावेशिता लाती हैं जिसे नज़रअंदाज़ करना मुश्किल है। चाहे टीम टास्क हो या व्यक्तिगत चुनौती, कृष्णा दूसरों को आगे बढ़ने का मौका देती हैं, बिना किसी को अलग-थलग महसूस कराए या प्रतियोगिता को निजी बनाएं बिना।

यही समावेशी और संतुलित दृष्टिकोण है, जो उन्हें प्रतिद्वंद्वियों के बीच भी शांत प्रशंसा दिलाई है। तेज़-तर्रार माहौल के बावजूद, कृष्णा अपने व्यवहार में लगातार सम्मानजनक और जमीन से जुड़ी हुई रहती हैं — चाहे वह अनिता हसनंदानी के साथ हो, डबल धमाल सिस्टर्स सुरभि-समृद्धि की जोड़ी के साथ, या फिर डॉली जावेद और वाइल्ड कार्ड एंट्री माएरा मिश्रा के साथ। एक ऐसा शो जिसमें अक्सर ड्रामा देखने को मिलती है, वहां कृष्णा स्पष्ट सोच और चरित्र की मिसाल बनकर उभरती हैं।

दोस्ती और निष्पक्ष प्रतिद्वंद्विता, दोनों के लिए जगह बनाए रखने की उनकी क्षमता दुर्लभ है और कृष्णा इसे बिना किसी का सम्मान घटाए बखूबी निभा रही हैं। भले ही वह अपनी शारीरिक ताकत के लिए पहचानी जाती हों, लेकिन 'छोरियां चली गांव' में उनकी असली चमक उनके दबाव में भी उनका शालीन व्यवहार ही सबका ध्यान खींच रहा है।

नीरू बाजवा और रुबीना दिलैक का पंजाबी फिल्म और टीवी पर राज

पंजाबी फिल्म और टेलीविजन इंडस्ट्री में आज कई ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने अपनी मेहनत और प्रतिभा से लोगों के दिलों में खास जगह बनाई है। नीरू बाजवा और रुबीना दिलैक ऐसे ही दो नाम हैं जो पंजाबी सिनेमा और टीवी की दुनिया में अपनी अलग पहचान रखते हैं। दोनों ने अपने अभिनय के दम पर पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री को मजबूती दी है और साथ ही दर्शकों का मनोरंजन भी किया है। पंजाबी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने में इन दोनों का योगदान काफी महत्वपूर्ण है। जहां नीरू बाजवा को पंजाबी सिनेमा की सबसे सफल अभिनेत्रियों में गिना जाता है, वहीं रुबीना दिलैक ने टीवी और फिल्मों दोनों में अपनी छाप छोड़ी है। दोनों कलाकारों ने न केवल पंजाबी फिल्मों में काम किया, बल्कि टेलीविजन पर भी अपनी अच्छी-खासी मौजूदगी दर्ज कराई है। उनकी फिल्मों और सीरियल्स ने पंजाब की संस्कृति, लोगों के जीवन और पारिवारिक रिश्तों को खूबसूरती से पेश किया है। इसी वजह से वे पंजाबी सिनेमा और टीवी की जानी-मानी हस्तियां बन चुकी हैं।

नीरू बाजवा का जन्म 26 अगस्त 1980 को कनाडा के सरे शहर में हुआ था। वह एक भारतीय परिवार से ताल्लुक रखती हैं। नीरू ने अपने करियर की शुरुआत 1998 में हिंदी फिल्म मैं सोलह बरस की से की थी, लेकिन बाद में उन्होंने पंजाबी फिल्मों में ज्यादा काम किया और वहां उन्हें काफी सफलता मिली। नीरू की पंजाबी फिल्मों में जट्ट एंड जूलियट, सरदार जी, लौंग लाची, शादा जैसी कई हिट फिल्में शामिल हैं। उन्होंने पंजाबी सिनेमा में अपनी खास जगह बनाई और तीन बार पीटीसी पंजाबी फिल्म पुरस्कार भी जीता। पंजाबी फिल्मों में बेहतरीन अभिनय के लिए उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला।

नीरू ने सिर्फ अभिनय ही नहीं किया, बल्कि पंजाबी फिल्मों के निर्देशन और प्रोडक्शन में भी हाथ आजमाया है। 2017 में उन्होंने पंजाबी फिल्म सरगी का निर्देशन किया, जो उनकी बहन रुबीना बाजवा की शानदार फिल्म थी। नीरू का योगदान सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है, उन्होंने हॉलीवुड की अलौकिक थ्रिलर फिल्म इट लिव्स इनसाइड (2023) के जरिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी छवि बनाई। नीरू बाजवा ने टीवी में भी काम किया, जिसमें अस्तित्व...एक प्रेम कहानी, जीत, बंदूकें गुलाब, और हरी मिर्ची लाल मिर्ची जैसे सीरियल शामिल हैं। वह हाल ही में रिलीज हुई अजय देवगन की फिल्म सन ऑफ सरदार 2 में भी नजर आईं।

रुबीना दिलैक की बात करें, तो उनका जन्म 26 नवंबर 1989 को हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में हुआ। अपनी पढ़ाई

पूरी करने के बाद मॉडलिंग और अभिनय की ओर रुख किया। रुबीना ने टीवी इंडस्ट्री में अपनी शुरुआत की, लेकिन पंजाबी फिल्मों में अपनी पहचान बनाई। टीवी सीरियल छोटी बहू में उनके अभिनय को काफी पसंद किया गया। इसमें उन्होंने राधिका नाम की लड़की का किरदार निभाया, जो घर-घर में मशहूर हुआ। इसके बाद वह सास बिना ससुराल, शक्ति-अस्तित्व के एहसास की, पुनर्विवाह- एक नई उम्मीद, देवों के देव...महादेव, जीनी और जूजू जैसी सीरियल्स में नजर आईं। उन्होंने बिग बॉस 14, फियर फैक्टर- खतरों के खिलाड़ी 12, और झलक दिखला जा 10 सहित कई रियलिटी शो किए। वह बिग बॉस 14 की विजेता भी रहीं। उन्होंने चल भज्ज चलें जैसी पंजाबी फिल्मों में काम किया। रुबीना ने कई पुरस्कारों के लिए नामांकन हासिल किए और कई बार जीत भी हासिल की है। टीवी और फिल्मों दोनों में उनकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

नीरू बाजवा और रुबीना दिलैक की मेहनत और लगन ने पंजाबी फिल्म और टीवी इंडस्ट्री को मजबूती दी है। दोनों पंजाबी सिनेमा और टीवी की चमकती हुई हस्तियां हैं।

कनिका मान ने दिया लूट मुबारक के लिए निमंत्रण!

पंजाबी और टीवी जगत की मशहूर अभिनेत्री कनिका मान ने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक खास पोस्ट की, जिसने उनके फैंस का जोश हाई है। ये पोस्ट उनकी आने वाली फिल्म लूट मुबारक का आधिकारिक पोस्टर है, जिसमें फिल्म की रिलीज डेट से पर्दा उठाया गया है। कनिका मान ने इंस्टाग्राम पोस्ट में लूट मुबारक फिल्म का पोस्टर साझा किया, जिसमें फिल्म का नाम गुरमुखी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखा हुआ है। पोस्टर में मुख्य कलाकार हरीश वर्मा और कनिका मान के नाम भी नजर आ रहे हैं। साथ ही फिल्म के निर्माता, निर्देशक और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की गई है। यह फिल्म 20 फरवरी 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। फिल्म में ड्रामा, बदला और प्यार देखने को मिलेगा।

कनिका मान ने अपने कैप्शन में लिखा है, वाहेगुरु जी! जब हमारे दिल उन लोगों के लिए दुखते हैं जो विपदा का सामना कर रहे हैं, तब हम अपनी नई फिल्म एक छोटे से संदेश के रूप में साझा करते हैं, जो बताती है कि कहानियां सिर्फ मनोरंजन का जरिया नहीं होतीं, बल्कि वे हमें जोड़ती हैं, हमें ताकत देती हैं और दुखों को कम करने में मदद करती हैं। सोशल मीडिया पर उनके फैंस इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं और आने वाली फिल्म के लिए शुभकामनाएं भी दे रहे हैं। बता दें कि कनिका हाल ही में पंजाबी फिल्म जॉम्बीलैंड में नजर आई थीं। इस फिल्म में उनके साथ बिन्नू ढिल्लों, अंगीरा धर, जी खान गुरी, धनवीर सिंह और जस्सा ढिल्लों समेत कई कलाकार अहम किरदार में हैं। यह फिल्म भारत की पहली पंजाबी जॉम्बी कॉमेडी है, जिसे लेखक-निर्देशक थापर ने बनाया था। वहीं इसे नेक्स्ट लेवल प्रोडक्शंस के बैनर तले नीरज रुहिल और सुभव शर्मा द्वारा निर्मित किया गया। यह फिल्म पांच भाषाओं पंजाबी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम में रिलीज हुई थी।

यूएनएफपीए की ब्रांड एंबेसडर बनीं कृति सेनन

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन के नाम एक और उपलब्धि जुड़ गई है। वो संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की ब्रांड एंबेसडर बनाई गई हैं। यह संयुक्त राष्ट्र संघ की एक संस्था है जिसका कार्य महिला, पुरुष और बच्चों के अधिकार, स्वास्थ्य और समान अवसर के साथ सुखी जीवन को बढ़ावा देना है। ब्रांड एंबेसडर बनने के बाद उन्होंने अपनी भूमिका के बारे में बात की और बताया कि कैसे अपने करियर की शुरुआत में उन्हें लैंगिक असमानता का सामना करना पड़ा। कृति सेनन ने बॉलीवुड में वेतन असमानता के बारे में भी बात की। सेनन ने कहा, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। ये बहुत बड़ा सम्मान है और उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी भी। मैं इसके लिए बहुत उत्सुक हूं, क्योंकि मुझे हमेशा से ये लगता था कि मैं कुछ ऐसा बदलाव ला सकूं जो मेरे दिल के करीब हो। मेरा मानना है कि लैंगिक असमानता बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। ये बहुत बड़ा मुद्दा है, फिर चाहे बात जेंडर बेस्ड वायलेंस की हो या गर्ल चाइल्ड एजुकेशन की हो। मुझे खुशी है कि मैं यूएनएफपीए के साथ मिलकर ऐसे लोगों के लिए अब कुछ कर पाऊंगी, उनका साथ दे पाऊंगी। यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। मैं अपने देश का वैश्विक स्तर पर प्रतिनिधित्व करना चाहती थी, अपनी आवाज के जरिए ऐसे मुद्दों को उठाना चाहती थी, जिससे लोगों के जीवन खुशहाल बन सकें।

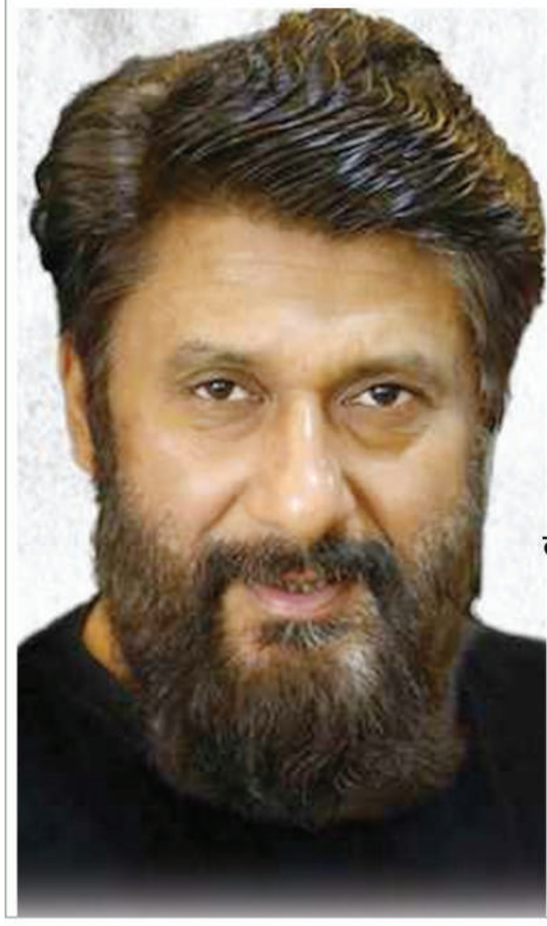

मेरा उद्देश्य विवाद पैदा करना नहीं, सिर्फ सच दिखाना है

डायरेक्टर विवेक अग्निहोत्री की फिल्म द बंगाल फाइल्स जल्द रिलीज होने वाली है। रिलीज से पहले फिल्म को लेकर काफी विवाद हुआ। इसके अलावा फिल्म काफी समय से कोई ना कोई वजह से सुर्खियों में भी बनी हुई है। विवेक अग्निहोत्री फिल्म 'द बंगाल फाइल्स' को लेकर बातचीत की।

द बंगाल फाइल्स का आइडिया कहां से आया?

जब हमने द कश्मीर फाइल्स बनाई थी, तब हमने सिर्फ एक फिल्म नहीं बनाई थी। हमने एक मूवमेंट शुरू किया था और उस मूवमेंट का नाम था - राइट टू ट्रुथ। हमारी टीम का मानना है कि हर भारतीय को यह हक है कि उसे सच पता चले और सच हमेशा किताबों में या अखबारों में नहीं लिखा होता। कभी-कभी सच को छिपा दिया जाता है, ताकि लोग उसे न जान सकें। द कश्मीर फाइल्स बनाने के बाद, हमने तय किया कि अगली फिल्म बंगाल पर होनी चाहिए। क्योंकि बंगाल का इतिहास बहुत गहरा और जटिल है।

द बंगाल फाइल्स में क्या दर्शक आपसे द कश्मीर फाइल्स से बेहतर की उम्मीद कर सकते हैं?

दर्शक हमेशा उम्मीद करते हैं और मैं उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करती हूं। द बंगाल फाइल्स में मेरा किरदार बिल्कुल अलग है। यह किरदार मुझे एक नई चुनौती देता है और मुझे लगता है कि दर्शक जब इसे देखेंगे तो चौंक जाएंगे क्योंकि यह रोल पहले किए गए मेरे सभी किरदारों से बिलकुल अलग है।

जब आप द बंगाल फाइल्स बना रहे थे, तो क्या आपको लगा था कि फिर से पिछली फिल्मों जैसा विवाद होगा?

विवाद होना मेरे लिए कोई नई बात नहीं है। विवाद तब होता है जब आप सच बोलते हैं। अगर मैं सिर्फ मनोरंजन की फिल्में बनाऊं, तो शायद कभी विवाद न हो। लेकिन जब आप सच्चाई पर उंगली रखते हैं, तो कई लोगों को तकलीफ होती है और वही लोग विवाद खड़ा करते हैं। लेकिन मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरा मकसद सिर्फ सच को सामने लाना है और मुझे लगता है कि जनता भी यही चाहती है- सच जानना। तो चाहे विवाद हो या न हो, मैं अपनी राह से पीछे नहीं हटूंगा।

आपको कभी लगता है कि विवाद आपकी फिल्मों को नुकसान पहुंचाता है?

विवाद फिल्मों को नुकसान नहीं पहुंचाते। बल्कि कभी-कभी विवाद ही लोगों को फिल्म देखने थिएटर तक खींच लाते हैं। लेकिन मेरा उद्देश्य विवाद पैदा करना नहीं है। मेरा उद्देश्य सिर्फ सच दिखाना है। अब अगर सच से विवाद होता है, तो यह समाज की जिम्मेदारी है कि वह इसका सामना करे।

विवेक आपने कहा था कि ट्रोल्स अब आपको परेशान नहीं करते। लेकिन क्या कभी उनकी बातें आपको चोट पहुंचाती हैं?

पहले पहुंचती थी। लेकिन अब मैंने समझ लिया है कि जो सच बोलता है, उसे गालियां भी मिलती हैं और अगर मैं सच की वजह से गालियां खा रहा हूं, तो यह मेरे लिए सम्मान है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम की भूमिका में नजर आएंगे धनुष

साउथ एक्टर धनुष ही फिल्म कलाम: जल्द द मिसाइल मैन ऑफ इंडिया में पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम की भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म के निर्देशक ओम राउत का मानना है कि धनुष से बेहतर इस किरदार को कोई और नहीं निभा सकता है। निर्देशक ओम राउत ने कहा... धनुष एक बेहतरीन एक्टर हैं। मुझे खुशी है कि उन्होंने यह भूमिका निभाने के लिए हामी भरी है। मैं व्यक्तिगत रूप से उन्हें बहुत मानता हूं और इस फिल्म में उनके साथ काम करने को लेकर उनसे बेहतर इस फिल्म और इस उत्साहित हूं। मुझे लगता है कि किरदार को और कोई नहीं निभा सकता।

हॉकी एशिया कप 2025: फाइनल में जगह बनाने के लिए चीन से भिड़ेगा भारत, करना होगा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

राजगीर (एजेंसी)। फाइनल में जगह बनाने से एक कदम दूर भारतीय पुरूष हॉकी टीम को एशिया कप 2025 में शनिवार, 6 सितंबर को सुपर 4 चरण के आखिरी मैच में आत्मविश्वास से ओतप्रोत चीन के खिलाफ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। इससे पहले पांच बार की चैम्पियन दक्षिण कोरिया से 2 -2 से ड्रॉ के बाद भारत ने दूसरे सुपर 4 मैच में मलेशिया को 4 -1 से हराया। इस जीत से चीन के खिलाफ अहम मुकाबले से पहले हरमनप्रीत सिंह की टीम का मनोबल बढ़ा होगा।

वहीं भारत दो मैचों में चार अंक लेकर शीर्ष पर है जबकि चीन और मलेशिया के तीन अंक है। दूसरी तरफ कोरिया एक अंक लेकर फाइनल की दौड़ से बाहर हो गई है। सुपर 4 चरण से शीर्ष दो टीमें फाइनल में जायेंगी और भारत के लिये एक ड्रॉ भी काफी होगा। कोरिया के खिलाफ औसत प्रदर्शन के बाद भारत ने मलेशिया के खिलाफ बेहतर खेल दिखाया हालांकि शुरूआत बहुत अच्छी नहीं रही। भारत ने शुरूआती गोल गंवा दिया लेकिन इसके बाद शानदार वापसी की।

इसके साथ ही मलेशिया पर मिली जीत के बारे में मुख्य कोच क्रेग फुल्टोन ने कहा कि अभी भी यह टीम का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं है और भारतीय खिलाड़ियों को पता है कि उनसे अपेक्षायें बहुत ज्यादा है। सवाल यह है कि वे अपेक्षाओं पर कैसे खरे उतरें और इसका जवाब भी आसान है कि बारीकियों पर ध्यान देकर अपने प्रदर्शन में और सुधार किया जाये।

बता दें कि, टूर्नामेंट में अभी तक मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद और राजिंदर सिंह ने मिडफील्ड में अच्छा खेल दिखाया है। मलेशिया के खिलाफ फॉरवर्ड पंक्ति से उनका तालमेल कमाल का था। हार्दिक ने खास तौर पर तेज ड्रिबलिंग और अकेले गेंद लेकर दौड़ते हुए कई मौके बनाये। बरसों से भारतीय हॉकी की सेवा कर रहे मनप्रीत ने दिखा दिया कि अभी भी उनके भीतर जीत की भूख कम नहीं हुई है। उन्होंने न सिर्फ मौके बनाये बल्कि गोल के सूत्रधार भी रहे।

अभिषेक, सुखजीत सिंह और मनदीप सिंह ने आक्रमण का जिम्मा बखूबी संभाला और आगे भी इस लय को कायम रखना चाहेंगे। भारत को हालांकि सर्कल के भीतर मिले हर मौके को भुनाना होगा और इसके लिये हड़बड़ाने से बचना जरूरी है। पेनल्टी कॉर्नर कोच फुल्टोन की परेशानी का सबब होगा। अच्छी शुरूआत के बाद कप्तान हरमनप्रीत पेनल्टी कॉर्नर भुनाने में नाकाम रहे। जुगराज सिंह, संजय और अमित रोहिदास का भी यही हाल था। मलेशिया के खिलाफ छह में से एक ही पेनल्टी कॉर्नर पर गोल हो सका और वह भी रिबाउंड पर था। दूसरी ओर पूल चरण में भारत से 3 . 4 से

हारने के बाद से चीन ने अपने प्रदर्शन में काफी सुधार किया है। लिहाजा भारतीय टीम को एहतियात बरतनी होगी क्योंकि मामूली सी गलती से अगले साल बेल्जियम और नीदरलैंड में होने वाले विश्व कप के लिये सीधे क्वालीफाई करने की उम्मीदों पर पानी फिर सकता है। सुपर 4 चरण के एक अन्य मैच में मलेशिया का सामना दक्षिण कोरिया से होगा।

भारत/पाक: नीरज चोपड़ा और अरशद नदीम विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भिड़ेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा और चोट से उबर चुके पाकिस्तानी एथलीट अरशद नदीम इस महीने के आखिर में टोक्यो में होने वाली 2025 विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में प्रतिस्पर्धा करेंगे। नदीम के चिकित्सक असद अब्बास ने गुरुवार को बताया कि पेरिस 2024 ओलंपिक चैंपियन पूरी तरह से ठीक हो गए हैं और प्रतियोगिता के लिए तैयार हैं। अब्बास ने टेलीकॉम एशिया को बताया, 'अरशद पूरी तरह से ठीक हो गए हैं और मैंने उनके ठीक होने और प्रगति पर नजर रखी है। मुझे यकीन है कि वह नीरज और भाला फेंक स्पर्धा में भाग लेने वाले अन्य सभी एथलीटों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार होंगे।' उल्लेखनीय है कि विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 13 से 21 सितंबर तक टोक्यो में आयोजित होगी। पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा का क्वालीफिकेशन 17 सितंबर को और फाइनल अगले दिन होगा। जापान नेशनल स्टेडियम में नीरज चोपड़ा बनाम अरशद नदीम पेरिस 2024 के बाद उनका पहली बार आमना-सामना होगा। पेरिस 2024 के बाद से नदीम ने केवल एक बार प्रतिस्पर्धा की है, मई में कोरिया गणराज्य के गुमी में एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 86.40 मीटर के थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता था। विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा में पिछले महीने डायमंड लीग जीतने वाले जर्मनी के जूलियन वेबर, दो बार के विश्व चैंपियन ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स और त्रिनिदाद एवं टोबैगो के पूर्व ओलंपिक चैंपियन केशोर्न वालकॉट के भी भाग लेने की उम्मीद है।

बीसीसीआई ने जर्सी प्रायोजन की राशि बढ़ायी

-400 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई होने का अनुमान

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने टीम जर्सी के प्रायोजन की राशि बढ़ा दी है। इससे अब जर्सी का प्रायोजन करना और महंगा हो जाएगा। बीसीसीआई ने द्विपक्षीय सीरीज में जर्सी प्रायोजन के लिए प्रति मैच 3.5 करोड़ रुपए और बहुपक्षीय टूर्नामेंट के लिए प्रति मैच 1.5 करोड़ रुपए कर दिए हैं। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार, नई दरें अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) और एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) द्वारा स्वीकृत प्रतियोगिताओं पर लागू होंगी। ये राशि वर्तमान दरों से अधिक है। पहले द्विपक्षीय मैचों के लिए 3.17 करोड़ रुपए और बहुपक्षीय मैचों के लिए 1.12 करोड़ रुपए का भुगतान किया जाता था। 'ड्रीम 11 के जर्सी प्रायोजक के रूप में हटने के बाद अब बोर्ड ने प्रायोजन की राशि बढ़ायी है। बीसीसीआई को जर्सी प्रायोजन राशि बढ़ाने से 400 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई होने का अनुमान है। ये नई दरें आगामी एशिया कप के बाद से ही अमल में आयेंगी। अब बोर्ड संभावित रूप से प्रति मैच 400 करोड़ रुपए से अधिक कमा सकता है। अंतिम आंकड़ा हालांकि बोली के परिणाम के आधार पर अधिक हो सकता है। ड्रीम 11 के हटने के बाद बीसीसीआई ने मंगलवार को बोलियां आमंत्रित कीं थीं हालांकि इसमें कुह शर्तें भी रखी गयीं थीं। बोर्ड की ओर से बोलियों को लेकर ये शर्त लगायी गयी है कि समूह का ऑनलाइन मनी गेमिंग, सट्टेबाजी आदि से कोई संबंध नहीं होना चाहिये। न ही इसमें संलग्न किसी भी व्यक्ति का कंपनी में किसी भी प्रकार से निवेश होना चाहिये। भारतीय टीम अभी यूएई में 9 सितंबर से शुरू होने वाले एशिया कप में बिना किसी मुख्य प्रायोजक के खेलेगी, क्योंकि बोर्ड ने बोली जमा करने की आखिरी तारीख 16 सितंबर तय की है। इससे पहले केन्द्र सरकार के गेमिंग एप पर प्रतिबंध के बाद टीम के प्रयोजक ड्रीम 11 से करार समाप्त हो गया था।

रोहित शर्मा ने यो-यो टेस्ट में हासिल किए 19.4 अंक, कोहली का रिकॉर्ड टूटा

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के प्रत्येक सदस्य को यो-यो टेस्ट से गुजरना पड़ता है, जिसे पहली बार विराट कोहली के कप्तानी कार्यकाल के दौरान शुरू किया गया था। यह एक बहु-चरणीय फिटनेस टेस्ट है जो किसी खिलाड़ी की सहनशक्ति और फिटनेस के स्तर को मापता है और BCCI ने गंभीर की निगरानी में इसे फिर से शुरू करने का फैसला किया। विराट कोहली को छोड़कर लगभग सभी भारतीय खिलाड़ी बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (CoE) पहुंचे और अपना फिटनेस टेस्ट दिया। कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक भारत के वनडे कप्तान रोहित शर्मा ने 19.4 अंकों के साथ अपना फिटनेस टेस्ट पास कर लिया है। लेकिन क्या सच में रोहित ने 19 अंकों का आंकड़ा पार कोहली के यो-यो स्कोर को पीछे छोड़ दिया हैं?

रोहित शर्मा के 19 अंकों के आंकड़े को पार करने की सभी अफवाहें झूठी हैं, क्योंकि BCCI की सख्त नीतियां हैं और क्रिकेटरों को अपने स्कोर कहीं भी उजागर करने की अनुमति नहीं है। वास्तव में, यहां तक कि शासी निकाय (BCCI) भी अपने स्कोर किसी को नहीं बताता है। अगर कोई अपना यो-यो टेस्ट स्कोर उजागर करता है, तो खिलाड़ी को दंडित किया जाता है और उसे बाहर भी किया जा सकता है। ऐसे में यह कहना कि रोहित ने यो-यो टेस्ट में 19 अंक के आंकड़े को पार कर लिया है, यह गलत होगा क्योंकि इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि सामने नहीं आई है।

एक रिपोर्ट के अनुसार रोहित शर्मा, शुभमन गिल, हार्दिक पांड्या और अन्य सहित लगभग सभी भारतीय क्रिकेटरों ने या तो पूरी तरह या आंशिक रूप से फिटनेस टेस्ट पास कर लिया है। जहां सभी भारतीय खिलाड़ियों ने बेंगलुरु में अपने टेस्ट पूरे कर लिए, विराट कोहली ने BCCI से आज्ञा लेकर लंदन में अपने परिवार के साथ टेस्ट दिया और कथित तौर पर इसे पास कर लिया है।

एशिया कप के लिए सूर्यकुमार की कप्तानी में भारतीय टीम दुबई पहुंची

दुबई ।सूर्यकुमार यादव की कप्तान में भारतीय क्रिकेट टीम एशिया कप टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए दुबई पहुंच गयी है ।कप्तान सूर्यकुमार के साथ ही ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या और मुख्य कोच गौतम गंभीर भी नौ सितंबर से यूएई में शुरू होने वाले एशिया कप के लिए दुबई पहुंचे थे ।इस बार सारे खिलाड़ी अलग-अलग शहरों से होते हुए दुबई पहुंचे ।सूर्यकुमार के अलावा ऑलराउंडर शिवम दुबे, बैटिंग कोच सितांशु कोटक, हार्दिक पंड्या पहले चरण में यहां पहुंचे ।वहीं हर्षित राणा, कुलदीप यादव, रिंकू सिंह और अभिषेक शर्मा दूसरे चरण में यहां पहुंचे ।इसके बाद मुख्य कोच गौतम गंभीर भी दुबई एयरपोर्ट पर नजर आये ।भारतीय क्रिकेट टीम यहां अपने अभियान की शुरुआत यूएई के खिलाफ 10 सितंबर से होने वाले मैच से करेगी और उसके बाद 14 सितंबर को वह दुबई में पाकिस्तान से खेलेगी ।भारतीय टीम का इस टूर्नामेंट के लिए कोई कोई अभ्यास मैच नहीं रखा गया है ।भारतीय टीम ने अंतिम बार कोई टी-20 मैच आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से पहले फरवरी में इंग्लैंड से खेला था ।भारतीय कोच गौतम गंभीर का मानना है कि अभ्यास मैचों की जगह इंट्रा-स्क्वाड मैचों को खेलना लाभदायक रहेगा ।

भारतीय टीम इस प्रकार है - सूर्यकुमार यादव (कप्तान), शुभमन गिल (उप कप्तान), अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, जितेश शर्मा, संजू सैमसन, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, वरुण चक्रवर्ती, कुलदीप यादव और हर्षित राणा रिजर्व खिलाड़ी - प्रसिद्ध कृष्णा, वॉशिंगटन सुंदर, रियान पराग, ध्रुव जुरेल और यशस्वी जायसवाल ।

युकी भांबरी की यूएस ओपन के सेमीफाइनल में हार, फिर भी हुए मालामाल

न्यूयॉर्क ।यूएस ओपन के मेन्स डबल्स सेमीफाइनल में भारत के युकी भांबरी और उनके न्यूजीलैंड साथी माइकल वीनस को ब्रिटिश जोड़ी के खिलाफ हार झेलनी पड़ी। कड़े मुकाबले में ब्रिटिश जोड़ी सालिसबरी और स्कुप्स्की ने एख सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए 6-7, 7-5,6-4 से जीत दर्ज कर ली और फाइनल में जगह बना ली ।इस जीत के साथ ही ब्रिटिश जोड़ी ने फ्लशिंग मीडोज में हार्ड कोर्ट ग्रैंड स्लैम इवेंट के फाइनल में जगह बना ली। पहले सेट में दोनों टीमें 3-3 की बराबरी पर थीं, इसके बाद भारत और कीवी जोड़ी ने बढ़त बनाई और आखिरकार सेट को टाई-ब्रेक तक ले गई।भांबरी और वीनस ने पहला सेट टाई-ब्रेक जोरदार अंदाज में 7-2 से अपने नाम किया। दूसरे सेट में भी भांबरी-वीनस की जोड़ी की शुरुआत अच्छी रही लेकिन सालिसबरी और स्कुप्स्की ने वापसी कर मैच को एक और टाई ब्रेक तक पहुंचाया और इस बार ब्रिटिश जोड़ी ने जीत हासिल कर मुकाबले को बराबरी पर ला दिया।निर्णायक तीसरा सेट ब्रिटिश जोड़ी के नाम रहा जिन्होंने 6-4 से जीत अपने नाम की। भांबरी और वीनस ने पूरे टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने अभियान की शुरुआत मार्कोस गिरोन और लर्नर टिएन को 6-0, 6-3 से हराकर की थी।दूसरे राउंड में भी उनका प्रदर्शन दमदार रहा जहां उन्होंने गोंजालो एस्कोबार और मिगुएल एंजेल रेयेस-वरेला को 6-1, 7-5 से मात दी।

भांबरी-माइकल पैसों की बरसात- फिलहाल, युकी भांबरी और माइकल वीनस को यूएस ओपन पुरुष डबल्स के सेमीफाइनल तक बेहतरीन सफर के लिए 2,50,000 अमेरिकी डॉलर यानी करीब 2.20 करोड़ रुपये की इनामी राशि मिली।

दलीप ट्रॉफी- पंत की जगह टीम इंडिया में चुने गए इस खिलाड़ी ने खेली शानदार पारी, 3 रन से चूका दोहरा शतक

नई दिल्ली । तमिलनाडु के विकेटकीपर बल्लेबाज नारायण जगदीसन दलीप ट्रॉफी के सेमीफाइनल में दोहरे शतक से महज 3 रन से चूक गए।साउथ जोन की ओर से खेल रहे नारायण ने नॉर्थ जोन के खिलाफ मुकाबले में 197 रन की शानदार पारी खेली। जगदीसन के प्रथम श्रेणी में शानदार प्रदर्शन के कारण उन्हें इंग्लैंड दौरे पर आखिरी टेस्ट मैच के लिए ऋषभ पंत की जगह भारतीय टीम में शामिल किया गया था। आखिरी टेस्ट से पहले पंत को पैर में चोट लग गई जिस वजह से जगदीशन भारतीय स्क्वाड में चुने गए। लेकिन उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ प्लेइंग-11 में खेलने का मौका नहीं

मिला।जगदीशन ने दलीप ट्रॉफी के सेमीफाइनल में दूसरे दिन की शुरुआत नाबाद 148 रन के स्कोर से की। उन्होंने पहले दिन अपना 11वां प्रथम श्रेणी शतक लगाया।दूसरे दिन के पहले सत्र में उन्होंने शानदार 197 रन बनाए लेकिन तीन रन से दोहरा शतक चूक गए।जगदीशन पहले ही प्रथम श्रेणी क्रिकेट में दो दोहरे शतक लगा चुके है।जगदीशन ने रणजी ट्रॉफी के पिछले सीजन की 13 पारियों में 56 की औसत से 674 रन बनाए थे।जिसमें दो शतक और 5 अर्धशतक शामिल थे। पिछले सीजन ही जगदीशन ने रणजी ट्रॉफी में लगातार 200+ का स्कोर बनाया। रेलवे के खिलाफ 245* रन बनाने के बाद चंडीगढ़ के खिलाफ 321 रन का अपना व्यक्तिगत सर्वोच्च स्कोर भी बनाया। दाएं हाथ के बल्लेबाज जगदीशन का प्रथम श्रेणी क्रिकेट में औसत अब 49.58 है और अगर पंत और जुरेल दोनों समय पर ठीक नहीं हो पाते हैं तो वह भारत के लिए डेब्यू भी कर सकते है।

महिला हॉकी एशिया कप 2025 : भारतीय महिला हॉकी टीम की बेहतरीन शुरुआत, थाईलैंड को 11-0 से दी पटखनी

हांग्जो (एजेंसी)। चीन के हांग्जो शहर में महिला हॉकी एशिया कप 2025 का आगाज हो गया है। इस दौरान भारतीय महिला हॉकी टीम ने अपने अभियान की शुरुआत थाईलैंड को 11-0 से हराकर बेहतरीन जीत के साथ की। गोन्गशु कैनाल स्पोर्ट्स पार्क हॉकी फील्ड में खेले गए इस मैच में भारत ने आक्रामक खेल दिखाते हुए थाईलैंड को एकतरफा अंदाज में हराया। भारतीय महिला टीम इस साल एफआइएच प्रो लीग के यूरोप फेज में आखिरी स्थान पर रही थी, लेकिन एशिया कप में उनसे बेहतरीन शुरुआत की।

महिला एशिया कप से पहले मैच में निचली रैंकिंग वाली थाईलैंड के खिलाफ जीत के साथ शुरुआत करना खिलाड़ियों के लिए अच्छा है। अनुभवी गोलकीपर सविता और ड्रैग फ्लिकर और स्टार

फारवर्ड दीपिका के चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर होने से भारतीय टीम कमजोर दिखाई दे रही थी। लेकिन मुमताज खान, उडिता और ब्यूटी डुंग डुंग के शानदार खेल के कारण भारतीय टीम ने एक आसान जीत अपने नाम की।

भारत ने शुरू से ही अपना दबदबा बनाए रखा और शानदार गोल दागे। मुमताज खान, इडता, ब्यूटी डुंग डुंग ने दो-दो गोल किए जबकि संगीता कुमार, नवनीत कौर, लालरेमसियामी, शर्मिला देवी और रुतुजा दादासो पिसाल ने एक-एक गोल किया। भारत ने पहले ही हाफ में 5-0 की बढ़त हासिल की। इसके बाद दूसरे हाफ में भारत का आक्रमण और तेज हुआ और खेल खत्म होते-होते टीम इंडिया ने 11 गोल कर दिए।

भारतीय टीम पूल बी में है जहां उसके साथ जापान, थाईलैंड और सिंगापुर शामिल हैं। जबकि पूल ए में मेजबान चीन, कोरिया, मलेशिया और चीनी ताइपे शामिल हैं। ये टूर्नामेंट 5 से 14 सितंबर तक चलेगा। थाईलैंड के बाद अब भारत का सामना कल यानी 6 सितंबर को जापान के साथ और 8 सितंबर को सिंगापुर से होगा।

मेसी के घरेलू मैदान पर डबल से अर्जेंटीना ने वेनेजुएला को हराया

ब्यूनस आयर्स ।लियोनेल मेसी ने अपने आखिरी घरेलू विश्व कप क्वालीफायर में दो गोल दागे जिससे अर्जेंटीना ने गुरुवार को वेनेजुएला पर 3-0 से जीत हासिल की।8 बार के बैलन डी' ओर विजेता मेसी, जो वार्मअप के दौरान भावुक हो गए थे, ने 39वें मिनट में जूलियन अल्वारेज के काउंटरअटैक क्रॉस पर गोलकीपर राफेल रोमो के ऊपर से शॉट मारकर मेजबान टीम को बढ़त दिला दी।स्थानापन्न लुटारो मार्टिनेज ने निको गोंजालेज के बाएं बाईलाइन से कट-बैक के बाद डाइविंग हेडर से बढ़त दोगुनी कर दी।मेसी ने थियागो अल्माडा के साथ मिलकर 12 गज की दूरी से साइड-फुटिंग गोल करके स्कोर 3-0 कर दिया।38 वर्षीय अर्जेंटीना के कप्तान ने 89वें मिनट में रोमो के ऊपर से गेंद को चिप करके अपनी हैट्रिक पक्की कर ली थी, लेकिन उन्हें ऑफसाइड करार दे दिया गया। मेसी, जिन्होंने पिछले हफ़्ते कहा था कि यह क्वालीफ़ाइंग अभियान लगभग उनका आखिरी अभियान होगा, को अंतिम मिनटों में 80,000 से ज्यादा प्रशंसकों ने उनका नाम लेकर सलाम किया। एस्टाडियो मोनुमेंटल में हुए इस परिणाम के साथ अर्जेंटीना दक्षिण अमेरिकी ग्रुप में शीर्ष पर 10 अंकों की बढ़त के साथ एक मैच का दिन शेष रहते पहुंच गया है।वेनेजुएला, जो अपने पहले विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने की कोशिश में है, 10 टीमों की तालिका में सातवें स्थान पर बना हुआ है, जिससे उसे प्लेऑफ में जगह मिल जाएगी।अगले मंगलवार को होने वाले क्वालीफ़ायर के अंतिम दौर में, अर्जेंटीना का सामना ग्वायाकिल में इक्वाडोर से होगा, जबकि वेनेजुएला माटुरिन में कोलंबिया की मेजबानी करेगा।

महिला विश्वकप के उद्घाटन समारोह में कार्यक्रम पेश करेंगी श्रेया : आईसीसी

दुबई ।अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने कहा है कि बॉलीवुड अभिनेत्री श्रेया घोषाल आईसीसी महिला एकदिवसीय विश्व कप 2025 के उद्घाटन समारोह में कार्यक्रम पेश करेंगी। महिला विश्व कप का आयोजन भारत और श्रीलंका संयुक्त रुप से करेंगे।विश्व कप 30 सितंबर से 2 नवंबर तक खेला जाएगा।इसमें 8 टीमें हिस्सा ले रही हैं।विश्व कप भारत के चार शहरों और श्रीलंका के कोलंबो में खेला जाएगा।भारत में मैच गुवाहाटी, इंदौर, विशाखापत्तनम और मुंबई में खेला जाएगा।श्रेया भारत और श्रीलंका के बीच टूर्नामेंट के पहले मैच से पहले गुवाहाटी में होने वाले उद्घाटन समारोह में अपना कार्यक्रम पेश करेंगी।घोषाल ने इस टूर्नामेंट का आधिकारिक गीत ब्रिंग इट होम भी रिकॉर्ड किया है।गौरतलब है कि विश्व कप का पहला मुकाबला 30 सितंबर को भारत और श्रीलंका के बीच गुवाहाटी में खेला जाएगा।इस इवेंट के लिए टिकटों की ब्रिकी भी शुरु हो गयी है।इस साल इस आईसीसी वैश्विक आयोजन के लिए टिकटों की कीमतें काफी कम रखी गयी हैं।भारत में सभी लीग मैचों के टिकटों की कीमत पहले चरण में केवल 100 रुपये है।आईसीसी ने कहा कि कम कीमत रखने का कारण स्टेडियम में लोगों की भीड़ खींचना है।महिला क्रिकेट वैश्विक स्तर पर लगातार बढ़ रहा है और कम कीमत से इसकी ओर रुझान बढ़ेगा।

पूर्व क्रिकेटर अमित मिश्रा का बड़ा आरोप, कहा-कप्तान के पसंदीदा खिलाड़ियों को ही मिलता है मौका

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारत के अनुभवी लेग स्पिनर अमित मिश्रा ने बृहस्पतिवार को क्रिकेट के हर प्रारूप से संन्यास ले लिया और उन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर के दौरान दो अलग दौर का सामना किया। पहला दौर महान स्पिनर अनिल कुंबले की जगह लेने के साथ उनसे की जाने वाली अपेक्षाओं के भारी दबाव से निपटने में बीता तो दूसरा दौर रविचंद्रन अश्विन और रविंद्र जडेजा के आने से हुई प्रतिस्पर्धा से निपटने का रहा। इसमें से ऑफ स्पिनर अश्विन जहां महेंद्र सिंह धोनी की योजना का हिस्सा रहे तो वहीं जडेजा विराट कोहली की रणनीति के अनुकूल रहे। लेकिन लेग ब्रेक गेंदबाजी करने वाले और शानदार गुगली फेंकने वाले मिश्रा को अश्विन और जडेजा के साथ तीसरे विकल्प के रूप में काफी कम इस्तेमाल किया जाता।

प्रतिस्पर्धी क्रिकेट से संन्यास की घोषणा के बाद एक विशेष साक्षात्कार में मिश्रा ने कहा,

'यह बहुत निराशाजनक था। कभी आप टीम में होते हैं, कभी बाहर। कभी आपको प्लेइंग इलेवन में मौका मिलता है, कभी नहीं। बेशक, यह निराशाजनक है, और इसमें कोई शक नहीं कि मैं कई बार निराश हुआ।' उन्होंने कहा, 'लेकिन फिर आपको याद आता है कि आपका सपना भारत के लिए क्रिकेट खेलना है। आप राष्ट्रीय टीम के साथ हैं, और लाखों लोग वहां पहुंचने के लिए इतनी मेहनत कर रहे हैं। आप भारतीय टीम के 15 खिलाड़ियों में से एक हैं। इसलिए, मैंने सकारात्मक रहने की कोशिश की।'

प्रतिभा के बावजूद मिश्रा ने स्वीकार किया कि भारतीय टीम में अंदर-बाहर रहना मानसिक रूप से कठिन था। उन्होंने आगे कहा, 'जब भी मैं निराश होता था, मैं सोचता था कि मैं कहां सुधार कर सकता हूं। चाहे वह मेरी फिटनेस हो, बल्लेबाजी हो या गेंदबाजी, मैंने हमेशा बेहतर होने पर ध्यान केंद्रित किया। जब भी मुझे भारतीय टीम के लिए खेलने का मौका मिला, मैंने अच्छा प्रदर्शन किया, और मैं इससे बहुत खुश हूं। मैं कड़ी मेहनत से कभी पीछे नहीं हटा।'

मिश्रा ने कहा, 'मैं कहूंगा कि मेरे लिए सबसे निर्णायक क्षण 2008 के IPL में ली गई हैट्रिक थी, जहां मैंने मैच में 5 विकेट भी लिए थे। उसके बाद मैंने भारतीय टीम में वापसी की। उससे पहले, मैं घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा था, हर सीजन में 35-45 विकेट ले रहा था, लेकिन मैं राष्ट्रीय टीम में वापसी नहीं कर पाया। उस आईपीएल हैट्रिक ने मेरे लिए चीजें बदल दीं। मैंने पिछले साल सैयद मुश्ताक अली में भी अच्छा प्रदर्शन किया था और 25 विकेट लिए थे, जिससे मुझे IPL अनुबंध (दिल्ली डेयरडेविल्स) हासिल करने में मदद मिली। उस हैट्रिक के बाद मैं लगातार भारतीय टीम में वापसी करता रहा और टी-20 में मेरा करियर भी शुरू हो गया। इसलिए, 2008 में पाँच विकेट वाली वह हैट्रिक मेरे जीवन का एक निर्णायक क्षण होगी।'

मिश्रा ने विभिन्न कप्तानों द्वारा गेंदबाजों के अपने पसंदीदा चयन के बारे में अपना दृष्टिकोण रखा और यह भी कहा कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है। उन्होंने कहा, 'कुछ खिलाड़ी कप्तान के पसंदीदा होते हैं। लेकिन इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। आपको बस जब भी मौका मिले खुद को साबित करना होता है। जैसा कि मैंने कहा, ये चीजें मायने नहीं रखतीं। कभी-कभी कोई खिलाड़ी जो आपसे बेहतर प्रदर्शन करता है, उसे ज्यादा पसंद किया जाता है, लेकिन जब आप अच्छा प्रदर्शन करने लगते हैं, तो सब कुछ बदल जाता है।'

उन्हें आईपीएल में विदेशी खिलाड़ियों की तुलना में भारतीय बल्लेबाजों को गेंदबाजी करना हमेशा ज्यादा चुनौतीपूर्ण लगता था। मिश्रा ने कहा, 'जब भी मैंने किसी जाने-माने भारतीय खिलाड़ी का विकेट लिया, मुझे गर्व महसूस हुआ। वीरेंद्र सहवाग, रोहित शर्मा, युवराज सिंह, गौतम गंभीर या विराट कोहली जैसे खिलाड़ी - ये ऐसे खिलाड़ी हैं जो किसी भी पल खेल का रुख बदल सकते हैं। आप अपने कौशल से किसी विदेशी खिलाड़ी को परेशान कर सकते हैं, लेकिन इन खिलाड़ियों को आप अच्छी तरह जानते हैं। जब आप उनका विकेट लेते हैं, तो आपको एक अलग, बहुत सकारात्मक एहसास होता है। मैं कहूंगा कि सभी भारतीय बल्लेबाज़ों के सामने गेंदबाज़ी करना स्पिनर के लिए मुश्किल होता है।'

सबालेंका और अनिसिमोवा के बीच होगी यूएस ओपन में खिताबी भिड़ंत

न्यूयॉर्क ।शीर्ष वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका और उभरती हुई अमेरिकी खिलाड़ी अमांडा अनिसिमोवा बीच यूएस ओपन में महिला एकल वर्ग में खिताबी भिड़ंत होगी। बेलारूस की आर्यना सबालेंका ने अपनी विशिष्ट दृढ़ता और मानसिक शक्ति का परिचय देते हुए एक सेट से पिछड़ने के बाद चौथी वरीयता प्राप्त जेसिका पेगुला को हराकर तीसरी बार यूएस ओपन के फाइनल में प्रवेश किया।गुरुवार रात दो घंटे तक चले सेमीफाइनल मुकाबले में बेलारुस की सबालेंका ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अमेरिका की स्टार टेनिस खिलाड़ी पेगुला को 4-6, 6-3, 6-4 से हराया।पेगुला ने न्यूयॉर्क के शोरगुल में उत्साहित दर्शकों के बीच पहला सेट जीतकर पासा पलटने की चेतावनी दी।अमेरिकी खिलाड़ी ने पेगुला ने सबालेंका की सहज गलतियों का फायदा उठाया और दो बार सर्विस ब्रेक करके 6-4 से पहला सेट अपने नाम कर लिया।इसके बाद बेलारूसी खिलाड़ी ने ऑफ-कोर्ट ब्रेक के बाद नए दृढ़ संकल्प के साथ वापसी की।

दिल्ली पुलिस ने 15 विदेशी नागरिकों को किया डिपोर्ट, 13 नाइजीरियाई और 2 बांग्लादेशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में घुसपैठियों के खिलाफ पुलिस सर्च अभियान चल रही है। इसी क्रम में पुलिस ने द्वारका में अवैध रूप से रह रहे 15 विदेशी नागरिकों को डिपोर्ट किया है। द्वारका के पुलिस उपायुक्त के मुताबिक पुलिस ने अगस्त महीने में 13 नाइजीरियाई और 2 बांग्लादेशियों को निर्वासन के लिए भेजा। ये 15 लोग द्वारका में अवैध रूप से रह रहे थे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक द्वारका की ऑपरेशन यूनिट और पुलिस नियमित रूप से उन विदेशी नागरिकों के बारे में खुफिया जानकारी जुटा रही है, जो अवैध रूप से इलाके में रह रहे हैं या घूम रहे हैं। द्वारका के मोहन गार्डन थाने की 5, एंटी-नारकोटिक्स सेल की 5, उत्तम नगर थाने की 3 और डाबरी थाने की 2 टीमों ने द्वारका की निगरानी में अवैध रूप से रह रहे 15 विदेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया। ये टीमें उन विदेशी नागरिकों को पकड़ने के लिए सक्रिय हुईं, जो बिना वैध वीजा के देश में तय समय से ज्यादा समय तक रह रहे हैं, अवैध रूप से प्रवेश कर चुके हैं और द्वारका जिले के क्षेत्र में रह रहे या घूम रहे हैं।

गैर-मान्यता प्राप्त संस्थानों की जांच को लेकर हाईकोर्ट में लगाई याचिका

प्रयागराज (एजेंसी)। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की गई है, जिसमें देशभर के गैर-मान्यता प्राप्त संस्थानों की जांच कराने की मांग की गई है। याचिका में विशेष रूप से बाराबंकी स्थित श्री रामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी का जिक्र किया गया है, जहां कथित तौर पर बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) की मान्यता के बिना छात्रों को विधि पाठ्यक्रमों में दाखिला दिए जाने का मामला उठाया गया है। जानकारी अनुसार याचिकाकर्ता सौरभ सिंह की ओर से अधिवक्ताओं सिद्धार्थ शंकर दुबे और अनिमेष उपाध्याय द्वारा दाखिल इस याचिका में अदालत से अनुरोध किया गया है कि बीसीआई को निर्देशित किया जाए कि वह अपनी वेबसाइट पर सभी मान्यता प्राप्त और गैर-मान्यता प्राप्त विधि महाविद्यालयों की सूची सार्वजनिक रूप से जारी करे। याचिका को न्यायालय की रजिस्ट्री में प्रस्तुत कर दिया गया है और इसकी सुनवाई अगले सप्ताह होने की संभावना व्यक्त की जा रही है। गौरतलब है कि 1 सितंबर से एबीवीपी सहित विभिन्न छात्र संगठनों ने विश्वविद्यालय में विधि पाठ्यक्रमों की अनियमितताओं के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू किया था।

बिट्स पिलानी गोवा कैंपस में एक और छात्र की मौत, एसआईटी जांच की मांग

पणजी (एजेंसी)। दक्षिण गोवा स्थित बिट्स पिलानी (केके बिड़ला गोवा परिसर) में गुरुवार को 20 वर्षीय छात्र ऋषि नायर अपने छात्रावास के कमरे में मृत पाया गया। पुलिस के अनुसार, मोबाइल कॉल का जवाब न मिलने पर छात्रावास का दरवाजा तोड़ा गया, जहां ऋषि को बिस्तर पर बेसुध हालत में पाया गया। यह घटना परिसर में पिछले 10 महीनों में पांचवीं और एक महीने के भीतर दूसरी मौत है। जानकारी के मुताबिक, ढाई महीने पहले हैदराबाद में प्रेमिका की आत्महत्या के बाद ऋषि अवसाद में चला गया था। माता-पिता ने उसे गोवा परिसर में शिफ्ट किया था और वो वहीं रह भी रहा था। गुरुवार सुबह उससे जब संपर्क नहीं किया जा सका तो परिजन छात्रावास पहुंचे और उसके बाद ही शव बरामद हुआ। मौत के कारणों की जांच की जा रही है। इससे पहले दिसंबर 2024 से अब तक छात्र ओम प्रियन सिंह, अथर्व देसाई, कृष्णा कसेरा और कुशाग्र जैन की मौत भी छात्रावास में हो चुकी है।

जांच के लिए उच्चस्तरीय समिति गठित

मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने घटना पर चिंता जताते हुए जिलाधिकारी की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय समिति गठित की है। उन्होंने कहा, कि ऐसी घटनाएं दुर्भाग्यपूर्ण हैं। जांच रिपोर्ट के बाद ही आगे की कार्रवाई होगी। वहीं, कांग्रेस नेता ओलेंसियो सिमोस ने लगातार होती मौतों को लेकर राज्य सरकार और गृह मंत्रालय पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कोर्टालिम क्षेत्र के लोग सदमे में हैं और यह कानून-व्यवस्था की विफलता को उजागर करता है। उन्होंने विशेष जांच दल (एसआईटी) बनाने की मांग दोहराई।

सैनी सरकार पर सुरजेवाला का हमला बोले- जंगलराज से भी आगे निकल गया हरियाणा राज्य

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा के कानून-व्यवस्था पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। भिवानी कोर्ट परिसर में गुरुवार को दिनदहाड़े हुई गोलीबारी ने प्रदेश को दहला दिया। बताया जाता है कि बदमाशों ने कोर्ट में पेशी पर आए रोहतक निवासी युवक पर ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दीं, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। इस घटना के बाद अदालत जैसे संवेदनशील स्थल पर सुरक्षा को लेकर विपक्षी नेताओं ने कड़ी चिंता जताई जा रही है। राज्यसभा सांसद कांग्रेस महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला ने सूबे की भाजपा सरकार को आड़े हाथों लेते हुए आरोप लगाया है कि भाजपा ने हरियाणा को पूरी तरह से अपराध के आतंक और जंगलराज के अंधेरे में झोंक दिया है। अब प्रदेश में क़ानून का राज तो दूर, न्याय की दहलीज पर भी बेख़ौफ़ होकर कहर बरपाते गुंडो की गोलियों का शोर है। उन्होंने कहा, आज हरियाणा के भिवानी कोर्ट परिसर में बदमाशों ने दिनदहाड़े ताबड़तोड़ गोलियां चलाकर रोहतक से आए युवक को लहूलुहान कर दिया। हरियाणा में भाजपा के फैलाए गुंडाराज में अब क्या कोर्ट-कचहरी पर भी अपराधियों और माफियाओं का कब्ज़ा हो गया है? भाजपा ने हरियाणा के लोगों की ज़िंदगी अब गुंडों, बदमाशों, अपराधियों और माफियाओं के हवाले करके, पूरा प्रदेश ही सौंप दिया है। सुरजेवाला ने सीएम पर कटाक्ष करते हुए कहा, विपक्ष के नेताओं को धमकाने और हर बात पर चुटकुले सुनाने-कहकहे लगाने वाले हरियाणा के सीएम नायब सैनी सत्ता के महल में मखमली चादर तानकर सोए हैं। वे यही नहीं रुके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भी हमला करते हुए उन्होंने कहा, बाकी प्रदेश के लोगों को खोखले वादे और केवल चुनावी झांसे देने वाले पीएम मोदी का तो अगले चुनाव तक हरियाणा से कोई मतलबी नाता है नहीं।

कर्नाटक में ईवीएम नहीं बैलेट पेपर से होगा चुनाव, कांग्रेस की चाल से सकते में आयोग!

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूरे देश में ईवीएम मशीन से चुनाव और 'वोट चोरी' को लेकर विपक्ष का विरोध जारी है। सरकार से वैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग की जा रही है। विपक्ष का कहना है कि ईवीएम से चुनाव में गड़बड़ी हो रही है। हालांकि, चुनाव आयोग ने विपक्ष के दावों को सिरे से खारिज कर दिया है। आयोग कहा कहना है कि ईवीएम को हैक करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है, लेकिन इन सबके बीच कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने वैलेट पेपर से चुनाव कराने का फैसला लिया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कर्नाटक कैबिनेट ने गुरुवार को राज्य चुनाव आयोग को राज्य में आगामी पंचायत और शहरी स्थानीय निकाय चुनाव ईवीएम के बजाय वैलेट पेपर से कराने की सिफारिश करने के अपने फैसले की घोषणा की। कर्नाटक के कानून और संसदीय कार्य मंत्री एचके पाटिल ने कैबिनेट बैठक के बाद इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों में ईवीएम को लेकर विश्वास और विश्वसनीयता कम हो रही है।

पाटिल ने वोटर लिस्ट में सुधार को लेकर भी सरकार के फैसले की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कैबिनेट ने राज्य चुनाव आयोग द्वारा वोटर लिस्ट में संशोधन को आसान बनाने के लिए जरुरी कानूनी उपाय करने और मौजूदा नियमों में संशोधन करने का फैसला किया है। कानून और संसदीय कार्यमंत्री पाटिल ने बताया कि वैलेट पेपर से चुनाव का फैसला सरकार ने सोच समझ कर लिया है। उन्होंने बताया कि वैलेट पेपर को समर्थन देने का कैबिनेट का यह फैसला बेंगलुरु में पंचायतों और पांच नवगठित नगर निगमों के चुनावों से पहले मतदाता सूची के एसआईआर की सिफारिश के साथ आया है।

पाटिल ने बताया कि स्थानीय निकाय चुनाव अब तक विधानसभा चुनावों के लिए तैयार मतदाता सूचियों पर निर्भर रहे थे। अब एक ऐसी पद्धति डेवलप की जाएगी, जिससे लोगों की निर्भरता नहीं रहेगी। इसके लिए राज्य चुनाव आयोग को सिफारिश भेजा जाएगा।

पाटिल ने कहा कि पिछले कुछ महीनों में कर्नाटक और पूरे देश में मतदाता सूची में बेमेल, नाम जोड़ने और हटाने के कारण वोट चोरी की व्यापक चिंताएं रही हैं। उन्होंने कहा कि अब हमने राज्य निर्वाचन आयोग को मतदाता सूची में संशोधन करने की सिफारिश करने का फैसला लिया है, ताकि यह तय किया जा सके कि कर्नाटक में मतदाताओं को मतदान करने के अवसर से वंचित न किया जाए।

दुबई के साईं भक्त ने 1 करोड़ 58 लाख रुपये का सोना दान किया

शिरडी (एजेंसी)। श्रद्धा और धैर्य का महामंत्र देने वाले शिरडी के साईं बाबा के दर्शन के लिए हर साल देश-विदेश से करोड़ों भक्त शिरडी आते हैं। इस अवसर पर भक्त साईं बाबा को उदारतापूर्वक दान देते हैं। शिरडी के साईं बाबा को 2008 में हैदराबाद के आदिनारायण रेड्डी ने एक स्वर्ण सिंहासन भेंट किया था। तब से, इसे साईं बाबा को मिला सबसे बड़ा दान माना जाता था। लेकिन 17 साल बाद, आज एक बार फिर, दुबई के एक साईं भक्त ने 1 किलो 623 ग्राम 600 मिली ग्राम वजन के दो सुनहरे ओम साईं राम पत्र भेंट किए हैं। इसका मूल्य 1 करोड़ 58 लाख रुपये है और इस भक्त ने गुप्त दान किया है और साईं बाबा संस्थान से अपना नाम उजागर न करने का अनुरोध किया है। संस्थान से जुड़े सूत्र बताते हैं कि दुबई का ये भक्त, जिन्होंने साईं बाबा को सोना चढ़ाया है, साईं बाबा की समाधि के दर्शन के लिए हर महीने शिरडी आते हैं। वे आरती में भी शामिल होते हैं। साईं दर्शन के बाद, वे हमेशा संस्थान को लगभग 1 लाख रुपये का दान देते हैं। वे कई वर्षों से साईं बाबा को सोने की कोई वस्तु दान करना चाहते थे। आखिरकार, गुरुवार के पावन दिन, उन्होंने दो सुनहरे ओम साईं राम पत्र अर्पित करके अपनी इच्छा पूरी की। दुबई के इस भक्त द्वारा दिए गए स्वर्ण दान को साईं बाबा संस्थान ने समाधि मंदिर के दोनों द्वारों पर स्थापित किया है जहाँ से भक्त दर्शन के बाद बाहर निकलते हैं। इससे भक्त मंदिर से बाहर निकलते समय ? साईं राम का जाप करते हैं। इस दान की जानकारी देते हुए मुख्य कार्यकारी अधिकारी गोरक्ष गाडिलकर ने कहा, यह भक्त चाहता था कि उसका दान गुप्त रहे। इसलिए, उसके नाम की घोषणा नहीं की गई है। इस अवसर पर संस्थान द्वारा भक्त को शॉल, साईं मूर्ति और उदी भेंटकर सम्मानित किया गया।

तेजस्वी के डांस पर बड़े भाई तेज प्रताप का सियासी तंज! हर किसी का अपना हुनर है, श्रीकृष्ण भी नाचते थे

मुंबई (एजेंसी)। इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले पूर्वी राज्य बिहार में चल रही सियासत के बीच, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव विपक्ष की मतदाता अधिकार यात्रा के समापन के एक दिन बाद, पटना के मरीन ड्राइव एक्सप्रेसवे पर लड़कों के साथ नाचते नज़र आए। यह वीडियो उनकी बहन रोहिणी आचार्य ने सोशल मीडिया पर शेयर किया और वायरल हो गया। तेजस्वी खुशी-खुशी ग्रुप में शामिल हो गईं और उन्होंने कुछ ट्रेंडिंग डांस स्टेप्स सीख लिए और यहां तक ??कि बॉलीवुड अभिनेता और शीर्ष डांसर ऋतिक रोशन के सिग्नेचर स्टेप्स की नकल करने की भी कोशिश की।

हालांकि, इसको लेकर सियासत तेज हो गई है। तेजस्वी यादव के बड़े भाई तेज प्रताप यादन ने भी उनपर तंज कसा है। बिहार के पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव ने तेजस्वी यादव के नाचते हुए वायरल वीडियो पर कहा कि अगर वह नाच रहे हैं तो मैं क्या कर सकता हूं? अगर वह नाचना चाहते हैं, तो वह नाचेंगे। उन्हें कौन रोक सकता है? कई बार ऐसा होता है जब मैं बांसुरी बजाता हूं। हर किसी का अपना कौशल होता है... युवा नृत्य करने के लिए प्रेरित होंगे। श्री कृष्ण भी नाचते थे।

वीडियो में तेजस्वी यादव को एक समर्पित प्रशिक्षु की तरह युवा लड़कों से ट्रेंडी डांस स्टेप्स सीखते हुए देखा जा सकता है, जो उन्हें युवा पीढ़ी का एक सच्चा नेता बनाता है। वीडियो शेयर करते हुए, यादव ने लिखा, ÷16 दिवसीय मतदाता अधिकार यात्रा कल गर्मी, बारिश और उमस के बीच संपन्न हुई। रात में, सिंगापुर से मेरे भतीजे ने सुझाव दिया कि हम ड्राइव पर चलें। रास्ते में, हमें कुछ युवा कलाकार मित्र मिले जो गा रहे थे और रील बना रहे थे। उन्होंने हमें शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, इसलिए हमने कोशिश की। हम सब मिलकर, युवाओं की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, सपनों और आशाओं के साथ तालमेल बिठाते हुए, जाति और धर्म से ऊपर उठकर, सद्भाव, सरलता और सहजता से काम करेंगे और सरकार में बदलाव के माध्यम से एक नया बिहार बनाने का संकल्प लेंगे।÷

ज्ञानवापी, काशी और मथुरा पर बातचीत के लिए तैयार, महमूद मदनी ने आरएसएस के सुझाव का किया समर्थन

नई दिल्ली (एजेंसी)। जमीयत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी ने शुक्रवार को मुस्लिम समुदायों और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बीच बातचीत का समर्थन किया और संवेदनशील धार्मिक मुद्दों पर आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत की हालिया टिप्पणियों का स्वागत किया। एएनआई को दिए एक साक्षात्कार में, एक इस्लामिक विद्वान ने कहा कि उनके संगठन ने पहले ही बातचीत के पक्ष में एक प्रस्ताव पारित कर दिया है, और इस बात पर ज़ोर दिया है कि मतभेद तो हैं, लेकिन उन्हें कम करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

मदनी ने एएनआई को बताया कि बहुत सारे किंतु-परंतु हैं। मेरे संगठन ने एक प्रस्ताव पारित किया है कि बातचीत होनी चाहिए। मतभेद हैं, लेकिन हमें उन्हें कम करने की ज़रूरत है... हम बातचीत के सभी प्रयासों का समर्थन करेंगे। हाल ही में, आरएसएस प्रमुख ने ज्ञानवापी और मथुरा-काशी पर बयान दिए।

मुस्लिम समुदाय तक पहुँचने के उनके प्रयासों की प्रशंसा और सराहना की जानी चाहिए। हम सभी प्रकार की बातचीत का समर्थन करेंगे। ज्ञानवापी मस्जिद और मथुरा-काशी विवाद पर भागवत की टिप्पणियों का उल्लेख करते हुए, मदनी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस तरह की बातचीत को मान्यता मिलना ज़रूरी है।

इससे पहले, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा था कि राम मंदिर संघ द्वारा आधिकारिक रूप से समर्थित एकमात्र आंदोलन है, हालाँकि सदस्यों को काशी और मथुरा आंदोलनों की वकालत करने की अनुमति है। उन्होंने भारत में इस्लाम की स्थायी उपस्थिति पर ज़ोर दिया, जनसांख्यिकी संतुलन के लिए प्रत्येक भारतीय से तीन बच्चे पैदा करने का आग्रह किया, और नागरिकों के लिए नौकरियों की वकालत करते हुए, असंतुलन के लिए धर्मांतरण और अवैध प्रवासन को ज़िम्मेदार ठहराया।

मदनी ने हाल के वर्षों में राजनीतिक भाषा और विमर्श के स्तर में गिरावट की भी आलोचना की। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि विपक्षी नेताओं और राज्य के नेताओं सहित सभी राजनीतिक दल के नेता अनुचित और आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं। मौलाना मदनी ने पहलगाम आतंकी हमले की साजिश को नाकाम करने के लिए देश के नागरिक समाज को भी श्रेय दिया और कहा कि अगर यह घटना किसी और देश में हुई होती, तो बहुत अराजकता फैल जाती।

तेजस्वी का बड़ा आरोप कहा- बिहार तो छोड़िए एक वार्ड तक बंद नहीं करा सकती भाजपा

पटना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मां की गाली देने के विरोध में एनडीए के बिहार बंद को राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव ने विफल बताया। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि बिहार बंद कराना तो बहुत दूर की बात है भाजपा पंचायत का एक वार्ड तक बंद नहीं करा पाई। उनका बिहार बंद पूरी तरह फेल हो गया है। पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बीजेपी ने कल बिहार में दुनिया भर की गुंडागर्दी की। भाजपाई गुंडों ने सरेआम महिलाओं को पीटा, शिक्षिकाओं को पीटा, गर्भवती महिलाओं को रोका, बुजुर्गों को धक्का दिया, छात्राओं के साथ दुर्व्यवहार किया, बच्चों को स्कूल जाने से रोका, एम्बुलेंस को रोका, शहीद के परिजनों को पीटा लेकिन फिर भी ये लोग एक वार्ड तक बंद नहीं करा पाए। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि जैसे उनकी रैली में पुलिस और प्रशासन पर दबाव दिया जाता है, उसी तरह बिहार बंद के लिए भी पुलिस को बोल देना चाहिए था। वे ही ट्रैफिक रुकवा देते। तेजस्वी ने कहा, गुजरात के रहने वाले मोदी ने वोट की खेती के लिए बिहार बंद में आम बिहारियों को परेशान करने का मस्ती भरा निर्णय ले लिया। बता दें कि बिहार में इसी साल विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। इससे पहले भाजपा और विपक्षी दल अपनी जमीन मजबूत करने के लिए पूरी ताकत से मैदान में उतर गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मां को गाली देने के विरोध में एनडीए ने बिहार बंद का आव्हान किया था। जिसे एनडीए सफल बता रहा है और विपक्ष का दावा है कि बिहार बंद पूरी तरह फेल हो गया है।

कर्नाटक सरकार पहली बार करा रही लैंगिक अल्पसंख्यकों का सर्वेक्षण

-सर्वे में विभागीय अधिकारियों के साथ, ट्रांसजेंडर के सदस्य भी लेंगे भाग

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया ने गुरुवार को पहली बार लैंगिक अल्पसंख्यकों के शुरुआती सर्वेक्षण की शुरुआत की। ये सर्वे राज्य के सभी जिलों में कराए जाएंगे। इस सर्वे के साथ पूर्व देवदासियों का फिर सर्वेक्षण भी किया गया है। हालांकि पूर्व देवदासियों का सर्वे सिर्फ 15 जिलों में होगा। पहली बार हो रहे इस सर्वे में विभागीय अधिकारियों के साथ-साथ, ट्रांसजेंडर समुदाय के सदस्य भी भाग लेंगे। यह सर्वेक्षण 15 सितंबर से शुरू होगा और 45 दिनों तक चलेगा।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी हेब्बालकर के कार्यालय द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि ये सर्वेक्षण उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के बारे में सटीक जानकारी एकत्र करने और सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक पुनर्वास प्रदान करने के लिए किए जाएंगे, जिन जिलों में पूर्व देवदासियों के सर्वे कराए जाएंगे, उनमें बेलगावी, विजयपुरा, बागलकोट, रायचूर, कोप्पल, धारवाड़, हावेरी, गडग, कलबुर्गी, यादगीर, चित्रदुर्ग, दावणगिरि,

शिवमोग्गा, बल्लारी और विजयनगर शामिल हैं।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि कर्नाटक राज्य महिला विकास निगम द्वारा किए जा रहे दोनों सर्वेक्षण 15 सितंबर को शुरू होंगे और 45 दिनों के अंदर पूरे हो जाएंगे। सर्वेक्षण कराने की तैयारी का काम पहले ही पूरा हो चुका है। इस प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए, सरकार ने दो ऐप तैयारी किए हैं और एक हेल्पलाइन नंबर (1800 599 2025) भी शुरू किया है।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि लैंगिक अल्पसंख्यकों का सर्वेक्षण राज्य भर के सभी तालुका सरकारी अस्पतालों और जिला सरकारी अस्पतालों में किया जाएगा, जबकि पूर्व देवदासी महिलाओं का पुनः सर्वेक्षण 15 जिलों के तालुका बाल विकास परियोजना अधिकारियों के कार्यालयों में किया जाएगा। विज्ञप्ति में कहा गया है कि देवदासी पुनर्वास परियोजना इकाई के अधिकारी स्तर के कर्मचारी पूर्व देवदासी महिलाओं का सर्वेक्षण करेंगे।

बता दें लैंगिक सर्वेक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी संगठन, समाज या कार्यस्थल में पुरुष, महिला, ट्रांसजेंडर, नॉन-बाइनरी आदि के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है उस बारे में जानकारी जुटाना है। इसके अलावा भेदभाव, अवसर, वेतन और अन्य जनसांख्यिकीय पहलुओं पर जानकारी इकट्ठा करना है। ये सर्वेक्षण लैंगिक असमानताओं की पहचान करने, पूर्वाग्रहों को उजागर करने और अधिक न्यायसंगत व समतापूर्ण कार्यस्थल बनाने में मदद करते हैं। सिद्धारमैया सरकार ने लैंगिक अल्पसंख्यकों के भेदभाव का पता लगाने के लिए यह सर्वे शुरू कराने का फैसला किया है, जिसे अल्पसंख्यक महिलाओं को रिझाने का एक सियासी दांव समझा जा रहा है। इससे पहले सिद्धरमैया सरकार ने सरकारी ठेकों में मुस्लिमों को 4 फीसदी आरक्षण देने का बिल पास किया था।

पश्चिम बंगाल में नया बवाल: टीएमसी कुणाल घोष और भाजपा के मिथुन चक्रवर्ती के बीच तनातनी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस के एक धाकड़ नेता और विपक्षी भाजपा के एक दमदार चेहरे के बीच तकरार छिड़ गई है और मामला हाई कोर्ट तक जा पहुंचा है। तृणमूल कांग्रेस के प्रवक्ता कुणाल घोष ने गुरुवार को कहा कि उन्हें पता चला है कि अभिनेता से भारतीय जनता पार्टी नेता बने मिथुन चक्रवर्ती ने कलकत्ता हाई कोर्ट में उनके खिलाफ 100 करोड़ रुपये की दीवानी मानहानि का मुकदमा दायर किया है। बता दें कि यहां अगले साल यानी 2026 में विधानसभा चुनाव होने हैं इसके साथ ही आए दिन नए नए बवाल भी शुरु हो गए हैं।

टीएमसी के वरिष्ठ नेता घोष ने कहा कि उन्होंने भी चक्रवर्ती के खिलाफ बैंकशाल अदालत में आपराधिक मानहानि का मुकदमा दायर करवा दिया है, जिसमें अभिनेता द्वारा उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने का आरोप लगाया गया है। उन्होंने कहा कि उन्हें अभी तक चक्रवर्ती के वकील से कोई नोटिस नहीं मिला है और वह अदालत में मुकदमे की सुनवाई का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। घोष ने कहा कि उन्हें सूत्रों से पता चला कि चक्रवर्ती ने उनके खिलाफ उच्च न्यायालय में दीवानी मानहानि का मुकदमा दायर किया है। चक्रवर्ती ने पहले घोष को एक कानूनी नोटिस भेजा था। घोष के वकील अयान चक्रवर्ती ने कहा कि उन्होंने नोटिस का जवाब पहले ही भेज दिया था। घोष ने कहा कि जब चक्रवर्ती का मुकदमा सुनवाई के लिए आएगा, तो वह उच्च न्यायालय से अभिनेता के खिलाफ लगाए गए आरोपों की केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) जांच की मांग करेंगे। सूत्रों के अनुसार, मिथुन चक्रवर्ती ने दावा किया है कि कुणाल घोष ने जानबूझकर राजनीतिक द्वेष के तहत उनके और उनके परिवार के खिलाफ झूठे और दुर्भावनापूर्ण टिप्पणियां कीं। घोष ने कथित तौर पर टिप्पणी की थी कि अभिनेता चिटफंड घोटाले में शामिल थे और जांच से बचने के लिए तृणमूल छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए थे।

चीन ने बीजिंग से दिए कई संदेश, इधर भारत 53 देशों के साथ बैठक कर दिखाई अपनी ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में दो घटनाएं ऐसी हुई हैं, जिनकी पूरी दुनिया में चर्चा हो रही। एक तो चीन की राजधानी बीजिंग में हुई मिलिट्री परेड और दूसरी भारत में 53 देशों के प्रतिनिधियों ने बैठक कर बड़ी कार्ययोजना पर चर्चा की। दोनो ही घटनाओं शक्ति सामर्थ और एकजुटता से जुड़े हुए संदेश थे। सबसे पहले बात करते हैं चीन की। जहां चीन ने कुछ दिनों पहले ही मिलिट्री परेड का आयोजन किया था। इस शक्ति प्रदर्शन में दुनिया के कई देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने शिरकत की थी। एक्सपर्ट की नजर में इसका सबसे बड़ा मकसद अमेरिका समेत तमाम पश्चिमी देशों को संदेश देना था कि चीन अब झुकने वाला नहीं है। वहीं, फाइटर जेट से लेकर अल्ट्रा मॉडर्न टेक्नोलॉजी से लैस मिसाइल को दुनिया के सामने पेश कर राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने यह संदेश भी दे दिया कि चीन अब डिफेंस तकनीक के क्षेत्र में भी पीछे नहीं है। इससे अमेरिका समेत तमाम वेस्टर्न पावर में खलबली मची हुई है।

इधर,राजधानी दिल्ली में 53 देशों के 67 प्रतिनिधियों का महाजुटान हुआ है। इस महाकार्यक्रम में कई मसलों पर विचार-विमर्श हुआ। ऑपरेशन सिंदूर के बाद सुरक्षा से जुड़ी अपने तरह की यह पहली महाबैठक थी। इंडियन आर्मी ने दिल्ली कैंट स्थित मानेकशॉ सेंटर में विदेशों से भारत में तैनात रक्षा अताशे के लिए वार्षिक ब्रीफिंग आयोजित की। इस मौके पर समकालीन वैश्विक शांति और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों तथा उन पर भारत के दृष्टिकोण को साझा किया गया। सेना ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि इस कार्यक्रम में 53 देशों से आए 67 रक्षा अताशे शामिल हुए। इस दौरान भारत की सुरक्षा नीतियों, रणनीतिक प्राथमिकताओं और वैश्विक चुनौतियों के प्रति दृष्टिकोण पर विस्तार से चर्चा हुई। कार्यक्रम में भारत के सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने भी हिस्सा लिया और विदेशी अताशे के साथ बातचीत की। उन्होंने उभरते क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा परिदृश्यों, भारत की रणनीतिक सोच और भारतीय सेना की प्राथमिकताओं पर अपने विचार साझा किए। सेना ने बताया कि इन चर्चाओं से रक्षा सहयोग को बढ़ावा मिलेगा और वैश्विक शांति व स्थिरता की दिशा में साझा समझ विकसित होगी। भारतीय सेना ने ब्रीफिंग के दौरान आत्मनिर्भर भारत अभियान और स्वदेशी रक्षा उत्पादन की दिशा में हो रहे प्रयासों की जानकारी भी दी। अधिकारियों के अनुसार, इस पहल का उद्देश्य न केवल भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करना है बल्कि मित्र देशों के साथ सहयोग के नए आयाम भी स्थापित करना है।

सेना द्वारा साझा की गई तस्वीरों में विदेशी रक्षा अताशे और वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को विभिन्न सत्रों में भाग लेते हुए देखा जा सकता है। कार्यक्रम ने भागीदार देशों के प्रतिनिधियों को भारत की सैन्य दृष्टि और दीर्घकालिक रणनीतिक दिशा को बेहतर ढंग से समझने का अवसर दिया। भारतीय सेना के मुताबिक, इस तरह के संवाद से आपसी विश्वास और सहयोग की भावना को बल मिलता है। साथ ही यह अवसर वैश्विक स्तर पर शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने वाली सामूहिक पहल को मजबूत करता है। करीब चार घंटे चले इस वार्षिक सत्र में रक्षा अताशे ने भारतीय सैन्य नेतृत्व के साथ कई मुद्दों पर विचार-विमर्श किया और भविष्य में रक्षा साझेदारी को गहरा करने पर सहमति जताई।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित।
संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, कार्यकारी संपादक- भीष्म सिंह, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 7903538992, 9570107019, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**